इसके अंतरंग
ऊर्जा बचाओ १६ पृष्ठ का परिशिष्ट
Sponsored by
फरवरी 2005
Rs. 12 /-
चन्दामामा
इस अंक में
देखिए जी-मैन के
कारनामे
G-man

THE ADVENTURES OF G-man

MIND RAIDER

PART 1

माइंड रेडर

भाग १

प्रस्तुतकर्ता Parle-G

POWER SUPPLY

Visit: www.parleproducts.com

GOODS CARRIER
गुडस
शुभ
लाभ
HONK!
HONK!
MH-04 7979
दुनिया के हर कोने में हर बच्चा अचानक चेतना-शून्य हो जाता है।
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

दूर कहीं एक बिरान मिल में...

जो था टैरोलीन का अड्डा।

हा, हा, हा!
मैं अपने आपको पहले से जवान महसूस कर रहा हूं।

ये माइंड रेडर तो मेरी उम्मीद से भी अच्छा निकला।

टैरोलीन की ये मशीन बच्चों के मन से उनके बिचारों और सोचने- समझने की शक्ति को एक एनर्जी में बदल देती है ताकि टैरोलीन अमर बन जाए।

इस काम में उसकी मदद कर रहा है टेलीपैथी की शक्तियोंवाला न्यूरल, जो नन्हें मासूमों के मस्तिष्क से उनकी शक्ति छीन लेता है।

बहुत अच्छे न्यूरल!! लगता है बहुत ही जल्द मैं अपनी खोई जवानी पा लूंगा।

INDIAN ARMY
NAME: NARAD MUNAAL
DEPT: COMMUNICATION TECH.
ID : COMTEC-79
DEPARTMENT HEAD
NEURAAL
एक समय न्यूरल
भारतीय सेना के दूरसंचार
विभाग का एक प्रतिभावान
वैज्ञानिक डॉ. नारद मुनाल
के नाम से जाना जाता था.
विचारों को ट्रांसफर करने के
अपने एडवांस रिसर्च के तहत
उसने अपने दिमाग में ही एक
ट्रांसमीटर लगा दिया था...
ताकि वह टेलीपैथी की
शक्तियों को और
बढ़ा सके.
उसने पाई एक ज़बरदस्त
शक्ति-अपने दिमाग से वह
लोगों के दिमाग पर कब्ज़ा कर
उनके विचारों को चुराता था,
उन्हें सम्मोहित करता था.
इसीलिए उसे सेना से निकाल दिया
गया. और वहीं से वह चल पड़ा बुराई
की राह पर.
एक बार जी-मैन की जी-शक्ति
ने उसे हराकर दूर अंतरिक्ष
में भगा दिया था, जहां पर सिर्फ़
और सिर्फ़ अंधेरा था. वहां
से निकला बहुत मुश्किल था.
वह काले अंतरिक्ष में खो गया या
फिर टेरोलीन ने उसे वहां से आज़ाद
किया, ये कोई नहीं जानता. पर
सच्चाई ये थी कि न्यूरल फिर
वापस आ गया था ...जी-मैन
से अपना बदला चुकाने.
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

मेजर सूर्यराज को चिंता होने लगी।

क्या बात है, आज कोई भी नहीं आया।

BLIP BLIP

मेजर, टैरोलीन फिर कोई चाल खेल रहा है। वह बच्चों को पकड़ कर उनके सोचने-समझने की शक्ति चुरा रहा है। उसका पुराना दोस्त न्यूरल वापस आ गया है जो इस काम में उसकी मदद कर रहा है।

मुझे उनकी जोड़ी तोड़नी होगी।

जी-मैन अब हरकत में आ जाता है।

सूर्यराज अपना मनपसंद बिस्किट पारले-जी खाता है। इससे उसे एनर्जी मिलती है।
ऐसा कहते हैं कि जी-मैन बनने से पहले सूर्यराज पलभर के लिए सूरज की रोशनी को अपने अंदर समेट लेता है। शायद इसीलिए कुछ क्षण के लिए अंधेरा हो जाता है? और कोई भी इस परिवर्तन को देख नहीं पाता।
Parle-G
PARLE-G POWER SUPPLY
G-man
दुष्टों का विनाशक
जी-मैन आग का एक गोला बनकर वहां से उड़ जाता है।
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

माफ़ करना
मैं बिन बुलाए
मेहमान की तरह
आ गया।

ओह,
तुम तो हमारे
ख़ास मेहमान
हो।

जी-मैन!
हम ख़ास मेहमानों
की ख़ास ख़ातिरदारी
करते हैं।

न्यूरल!
पहले मेहमान
का स्वागत
तो करो।

इस बार तो मैं तुम्हें हमेशा-हमेशा के लिए खदेड़ कर रहूंगा।
KLiK
मैं तो समझ रहा था हमारा मेहमान कुछ गप-शप करेगा लेकिन ये तो हाथापाई पर आ गया है।
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

क्या जी-मैन न्यूरल की बाल सेना से आज़ाद हो पाएगा? क्या वह टैरोलीन के प्लान को फ़ेल कर पाएगा? क्या बच्चे फिर से आपनी सोचने-समझने की शक्ति पा लेंगे? जानने के लिए पढ़िए माइंड रेडर का अगला अंक।

PARLE
Fun Center
Cream Biscuits
What games are the Fun Center sporty characters playing?
Butterscotch
Bourbon
Milk
Strawberry
G N I L C Y C C O Y
I N G F O L C A B E
F O O T B A L L I T
L O P E S T M I N Z
Q U G N I T A K S T
L M C N D A G H I B
A C R I C K E T L C
P Q E S M O C E T E
A S T E R B I N T E
B A S K E T B A L L
Unscramble these words to find the new exciting flavours of Parle Fun Center
U B O O R B N
H R T T O B T S U C E C
W R R R S A B Y T E
K I M L
Enlarge the drawing in the space provided below.
Fun Center
Bourbon
OeM 6997
*MRP inclusive of all taxes for net weight 100g.
visit us at www.parleproducts.com
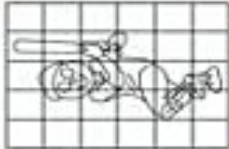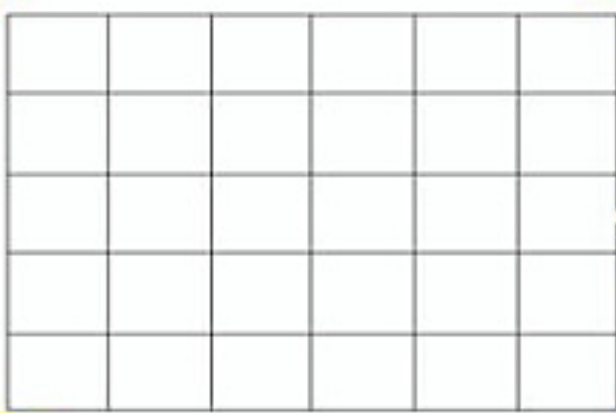
Which of the 3 drawings completes the picture?

Answer A

Which piece will complete the picture?

Answer B

Join the dots and complete the picture.
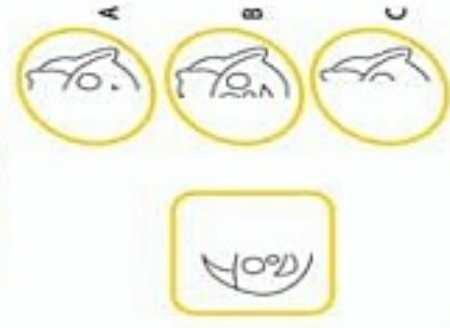
हम सब प्रार्थना करें

तमिल कवि ने दो हजार वर्ष से भी अधिक पहले लिखे अपने महाकाव्य ''सिलप्पधिकारम'' में ''काले मेघों को स्पर्श करनेवाली पर्वताकार लहरों'' का वर्णन किया है। क्या उनका तात्पर्य ज्वार भीटा से था जिसने फलते-फूलते नगर पूम्पुहार को निगल लिया और जिसे हम अब सुनामी के नाम से जानते हैं। जापानी मूल के इस शब्द का अर्थ है - बन्दरगाह (सु) तथा लहर (नामी)। इन दैत्याकार लहरों ने जिन देशों के समुद्र-तटों पर तबाही छा दी, वे हैं - हिन्देशिया, मलयेशिया, थाईलैण्ड, म्यानमार, माली, श्रीलंका तथा भारत के अंडमान-निकोबार, उड़ीसा, आन्ध्र प्रदेश, पांडिचेरी तथा तमिलनाडु से पूर्वी तट के केरल तक के प्रदेश। इस विध्वंस में लगभग दो लाख व्यक्तियों की जानें चली गईं तथा अन्य हजारों लापता, अपंग तथा बेघर हो गये।

हिन्देशिया से एक द्वीप-सुमात्रा के समुद्र-तटसे दूर हुए ८.९ रायशर स्केल की मात्रा के एक समुद्र गर्भीय भूकम्प ने प्रति घंटे एक हजार कि.मी. की तीव्र गति वाले सुनामी को प्रक्षेपित कर दिया, जिसने १८०० से लेकर २८०० कि.मी. की दूरी तक के लोगों को अकस्मात अपनी चपेट में लेलिया। उदारहण के लिए, बहुत से स्थानों पर क्रिसमस का खुशी मनानेवाले २६ दिसम्बर को सवेरे भारी संख्या में बंगाल की खाड़ी के लम्बे रेतीले समुद्र तट पर बाहर निकल आये थे। बच्चे आमोद-प्रमोद के रंग में थे। बहुत थोड़े लोगों को छोड़ कर जो समुद्र तट से दूर खड़े थे, अचानक प्रकट हुई विशालकाय काली लहरों को देखकर भाग निकले, बाकी सब को समुद्र ने सोख लिया। समुद्र तट के सभी मछुए बोरिया बिस्तर के साथ साथ अपनी नावों और मछली पकड़ने के जालों के साथ भी लहरों में बह गये। उनमें हजारों ने जल-समाधि ले ली।

जान-माल और स्थानों के कुल विनाश का वर्णन करने में शब्द असमर्थ हैं। मेटा-मोटी अनुमान के अनुसार इस विध्वंस में मरनेवालों में एक-तिहाई बच्चे थे —चाहे उनकी उम्र कितनी भी हो। उनकी मौत पर गम मनाने से अधिक अच्छा होगा कि जो बच गये किन्तु अनाथ और अपंग हो गये, और पुनर्वास के प्रयासों के पँहुचने तक बेघर और जीवन की आशा से वंचित हैं, उन हजारों के लिए हमारे दिल में पुकार उठे। उन्हें केवल हमारी उत्कट प्रार्थनाओं से ही नई जिन्दगी की रोशनी मिल सकती है।

- प्रकाशक

बाल–अधिकार

सन् १९८९ का २० नवम्बर विश्व भर के बच्चों के लिए एक चिरस्मरणीय दिवस था। संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा ने उस दिन बाल-अधिकारों का समझौता पारित किया। बाद में इसका १९२ देशों ने अनुसमर्थन किया।

बाल-अधिकार क्या हैं? उनमें प्राथमिक महत्व का है स्वास्थ्य। उन्हें एक स्वस्थ जीवन जीने का अधिकार है। जब तक बच्चे माता-पिता के साथ रहते हैं, माता-पिता का कर्त्तव्य होना चाहिये कि वे अपने बच्चों को रोगों से बचायें। रोगाक्रान्त हो जाने पर उन्हें उनका यथोचित उपचार कराना चाहिये।

दूसरा महत्वपूर्ण है -शिक्षा। बहुत से देश कुछ स्तरों तक निःशुल्क शिक्षा प्रदान करते हैं। वे होनहार बच्चों को अतिरिक्त प्रोत्साहन के रूप में छात्रवृत्ति जैसी सुविधाएँ देते हैं। यह देखना विद्यालय और अध्यापक दोनों का उत्तरदायित्व होगा कि कोई बच्चा बीच में विद्यालय छोड़कर न जाये।

आज के बच्चों को अपने चतुर्दिक जीवन को देखने-परखने के अधिक अवसर उपलब्ध हैं, खास कर अपने ही घरों में, जहाँ उनके माता-पिता असंख्य प्रकार की समस्याओं का सामना करते हैं। उन्हें बच्चों को विश्वास में लेकर उनके साथ समस्याओं पर विचार-विमर्श करना चाहिये। इस अधिकार से सम्बन्धित है बच्चों के विचारों की अभिव्यक्ति का अधिकार।

यह एक मात्र समुचित होगा कि बच्चों को अपने अधिकारों के प्रति सजग करते समय उन्हें अपने कर्त्तव्यों का भी स्मरण कराया जाना चाहिये। उन्हें यह मार्गदर्शन देना आवश्यक है कि वे अपने माता-पिता के प्यार और स्नेह और उनके कल्याण हित उनकी चिन्ता का प्रतिदान दें। और विद्यालय के पवित्र परिवेश में ही वे जिम्मेदार नागरिक बनने का पहला कदम उठा सकते हैं।

सम्पादक:विश्वम

चन्दामामा सम्पुट - १०८ फरवरी २००५ सञ्चिका - २

अंतरंग

विशेष आकर्षण

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd. to

Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal,
Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये।
भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १४४ रुपये।
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता (अगस्त)

सर्वश्रेष्ठ विजेता प्रविष्टि - सच्ची मित्रता

जब वन के दो अधिकारियों ने विजय और मनोहर से जंगल में शिकार खेलने का अनुज्ञा पत्र मांगा तब विजय को ख्याल आया कि मनोहर ने जंगल में प्रवेश करते समय बताया था कि वह जल्दी में अपना अनुज्ञापत्र साथ में लाना भूल गया है। अतः उसे अपने मित्र मनोहर को बचाने का एक उपाय सूझा और वह भागने लगा। दोनों अधिकारियों ने उसका पीछा किया और पकड़ लिया। विजय ने झट अपना अनुज्ञापत्र दिखाते हुए पूछा, ''आप मुझे क्यों पकड़ रहे हैं? मेरे पास तो अनुज्ञापत्र है।'' इस पर दोनों अधिकारी चकित रह गये। ''तब तुम भाग क्यों रहे थे?'' एक अधिकारी ने उसका अनुज्ञापत्र जाँच करके पूछा। तब विजय ने अधिकारियों को सच-सच बता दिया कि यह सब उसने अपने मित्र को बचाने के लिए किया है। ''इससे आप लोग मेरा पीछा करेंगे और उधर मेरा मित्र अपने आपको बचाने के लिए कहीं छिप जायेगा।''

अधिकारियों को विजय की चालाकी तथा मित्र के प्रति सच्चा प्रेम देखकर बहुत खुशी हुई। मगर उन्हें अपना फर्ज भी पूरा करना था। विजय को, धोखा देकर भागने व मनोहर के अनुज्ञापत्र न लाने का दण्ड तो मिलना ही था। अतः उन्होंने दोनों से एक वादा करवाया कि अपने शौक को पूरा करने के लिए उन्हें शिकार न करके निशानेबाजी सीखनी चाहिए। जिससे यश और पैसा दोनों मिलेगा और जानवरों की रक्षा भी हो सकेगी। दोनों ने अधिकारियों की बात को सहर्ष स्वीकार कर लिया।

अनुभव अग्रवाल,

ब्लूमिंग बड्स पब्लिक स्कूल, निकट-पेट्रोल पम्प,

भगवती गंज, बलराम पुर-२७१२०१

कर्मेर की चेतावनी

लक्ष्मण दास सिंहपुरी का निवासी था। उसके तीन बेटे और तीन बेटियाँ थीं। सबकी शादियाँ हो गयीं और वे सबके सब उसी गां व में रहने लगे। लक्ष्मण दास की बहुत पहले से ही तीव्र इच्छा थी कि अपना एक चित्र खिंचवाऊँ। पर उस गांव में कोई चित्रकार नहीं था। वह अपने पोते शंकर को बहुत चाहता था, इसलिए उसके बचपन से ही वह उससे बारंबार कहता रहा कि वह चित्रकला का अभ्यास करे।

शंकर ने अपने दादा से साफ़-साफ़ कह दिया कि चित्रकला में उसकी कोई अभिरुचि नहीं है। किसी भी हालत में वह चित्रकार बनना नहीं चाहता था। अब शंकर अठारह साल की उम्र का हो गया। पर अब भी उसे चित्रकला में कोई रुचि नहीं है। जब लक्ष्मण दास सख्त बीमार पड़ गया तब उसने अपने पोते से कहा, ''मैं शायद जल्दी ही मरजाऊँगा। मरने के पहले अपना चित्र बनवाने का मेरा सपना, सपना ही बनकर रह जायेगा।'' दर्द भरी आवाज़ में उसने अपना दुख व्यक्त किया।

शंकर ने ढाढ़स बंधाते हुए कहा, ''मैं आपकी इच्छा पूरी करने के लिए शहर जाऊँगा और वहाँ से एक अच्छे चित्रकार को ले आऊँगा।''

पोते के आश्वासन से लक्ष्मण दास बेहद खुश हुआ। उसने अपने पोते से कहा, ''तुम्हारा निर्णय सही है, पर यह जानने पर लोग हँसेंगे। इस उम्र में मेरी इस इच्छा पर ताने कसेंगे। हमारे परिवार के सदस्य होंगे, लगभग तीस लोग। उस चित्रकार से बताना कि हमारे पूरे परिवार का चित्र वहींचे। उसमें मेरा भी चित्र होगा ही।''

शंकर शहर गया। उसने चित्रकार को सौ अशर्फ़ियाँ देने का निर्णय कर लिया था। परंतु चित्रकारों की मांग थी कि दस हज़ार अशर्फ़ियाँ मिलने पर ही यह काम हो सकता है। उनका कहना

श्री रामकमल

था कि इतने लोगों से भरे हुए चित्र को बनाने में बहुत परिश्रम करना पड़ता है; हर एक का चेहरा स्पष्ट रूप से दिखे, यह कोई आसान काम नहीं है। उनकी इस मांग को सुनकर शंकर ठंढा पड़ गया। अब उसकी समझ में आया कि उसके दादा उसे चित्रकार बनने पर इतना ज़ोर क्यों दे रहे थे। उसे लगा कि इतनी बड़ी रक़म चुकाना उसके लिए संभव नहीं है। जब वह सिंहपुरी लौटने लगा तब संयोगवश उसकी मुलाक़ात कमेर से हुई।

कमेर के पास एक यंत्र था। उस यंत्र में सफेद कपड़े को रखकर मंत्रोच्चारण करते हुए जिस दृश्य को देखा जाता है, वह उस कपड़े पर तस्वीर के रूप में अंकित हो जाता है। चित्रकारों के चित्रों से भी यह स्पष्ट तथा स्वाभाविक होता है।

''मैं तुम्हारी इच्छा के बारे में सुन चुका हूँ। तुम्हारे परिवार का चित्रांकन करने के लिए इस यंत्र का उपयोग करेंगे। इसके लिए मुझे बस, पचास अशर्फियाँ मात्र दो।'' कमेर ने कहा।

शंकर खुश तो हुआ, पर संदेह व्यक्त करते हुए उसने पूछा, ''ऐसा यंत्र तुम्हें कहाँ से मिला?''

कमेर ने बिना सकपकाये कहा, ''मेरे मामा मंत्र-तंत्रों में माहिर हैं। एक साल पहले उन्होंने इस यंत्र का निर्माण किया और मुझे दिया। अपने सब रिश्तेदारों से भरा एक चित्र भी मैंने बनाया। ''देखो'' कहते हुए उसने एक छोटा-सा कपड़ा बाहर निकाला। उसपर एक ऐसा चित्र था, जिसमें बहुत लोग स्पष्ट दिखायी दे रहे थे। पर उनमें से एक आदमी ऐसा था, जिसे देखते ही हँसी फूट पड़ती थी।

''ये कौन हैं, जो इतने विकृत दिख रहे हैं?'' शंकर ने आश्चर्य-भरे स्वर में पूछा।

कमेर ने हँसते हुए कहा, ''इनका नाम है, सुरूपी। जो भी चित्र मैं बनाता हूँ, उसमें अवश्य ही कोई न कोई ऐसा आपको देखने को मिलेगा।''

शंकर ने क्षण भर तक रुककर कहा, ''मेरे दादा चाहते हैं कि उनके पूरे परिवार का एक चित्र बनवाया जाए। उनकी इस इच्छा को पूरा करने के लिए मैं कोई भी त्याग करने को सन्नद्ध हूँ। मुझे तो इस बात का भय है कि कहीं मेरे बदले, मेरे दादा की तस्वीर न कहीं विकृत लगे।''

''पहले ही तुम मान जाओगे तो तुम्हारी ही तस्वीर विकृत होगी।'' कमेर ने कहा।

दोनों सिंहपुरी पहुँचे। शंकर ने अपने परिवार के सब सदस्यों को यंत्र की महिमा बतायी। उस यंत्र से चित्र खिंचवाने के लिए सभी सदस्य उतावले थे। चित्र खिंचवाने वे अपने बगीचे में इकट्ठे हुए। सबने अच्छे वस्त्र पहन रखे थे। औरतों ने तरह-तरह के आभूषणों से अपने को सजाया।

कमेर अपना यंत्र लेकर सबके सामने खड़ा हो गया। यंत्र में उसने एक धवल वस्त्र रखा। आंखें बंद करके उसने मंत्रोच्चारण किया। फिर आंखें खोलकर उसने वह वस्त्र शंकर को दिया। उसमें अपनी तस्वीर देखकर शंकर उदास हो गया। उस चित्र को देखने पर कोई क्रोधी भी ठठाकर हँस पड़ेगा। इतने में बाकी लोग भी चित्र देखने को होहल्ला मचाने लगे। शंकर ने वह चित्र उन्हें दे दिया और खुद दूर जाकर खड़ा हो गया।

कमेर ने शंकर की पीठ थपथपाते हुए कहा, ''अपने दादा का चित्र देखने की तुम्हारी तीव्र इच्छा थी। उनका चित्र ठीक लग रहा है न?''

''मैंने उनका चित्र नहीं देखा। मेरा चित्र बिगड़ गया, इससे मेरा मन भी बिगड़ गया। अब सब लोग मेरी खिल्ली उड़ाने लगेंगे,'' शंकर ने कहा। इसपर कमेर ने ज़ोर से हँसते हुए कहा, ''तुमने अपने दादा की तस्वीर के लिए बहुत बड़ा त्याग किया, पर अचरज की बात तो यह है कि तुमने उनकी तस्वीर नहीं देखी, बल्कि अपनी ही तस्वीर मात्र देखी। उधर देखो।''

शंकर ने अपने परिवार के सदस्यों की ओर देखा। अपनी अपनी तस्वीर देखते हुए वे खुश हो रहे थे। उनमें से कोई भी दूसरे की तस्वीर नहीं देख रहा था।

तब कमेर ने शंकर से कहा, ''देखा, वे अगल-बगल के किसी भी व्यक्ति की तस्वीर देख नहीं रहे हैं। सबके सब अपनी तस्वीर देखने में ही लगे हुए हैं। मनुष्य की मनोदशा ऐसी ही होती है। इसलिए यह न समझना कि तुम्हारी बिगड़ी तस्वीर को देखकर वे तुम्हारी खिल्ली उड़ायेंगे। कमेर की इन बातों से शंकर की उदासी ग़ायब हो गयी। अब उसका चेहरा शांत लगने लगा। उसने कमेर को निर्धारित रक़म से अधिक रक़म दी और सहर्ष उसे बिदा किया।

मेहनत का फल

उस दिन रात को सब बच्चों ने जल्दी ही खाना खा लिया और दादी से कहानी कहने की जिद करने लगे। दादी ने सबको प्यार से देखा और कहानी कहने लगी।

बहुत पहले की बात है। गंगापुर में रतन नामक एक किसान रहता था। वैसे तो वह चार एकड़ ज़मीन का मालिक था, पर उसमें से दो एकड ज़मीन बंजर थी। उस जमीन में पत्थर ही पत्थर थे। उसके दो बेटे थे। जब वे दोनों जवान हो गये और काम करने के लायक़ हुए तब उसकी पत्नी का देहांत हो गया।

रतन का बड़ा बेटा वीर अव्वल दर्जे का सुस्त था। पिता ने उसे समझाने की बहुत कोशिश की, पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। समय पर खा लेता था, गाँव में मटरगस्ती करता था, और रात को भर पेट खाकर सो जाता था। पर, दूसरा बेटा माणिक बड़ा ही मेहनती था। हर काम में वह पिता की मदद करता था।

कुछ सालों के बाद रतन अचानक बीमार पड़ गया और खाट पर ही लेटा रहता था। एक दिन उसने दूसरे बेटे माणिक को बुलाया और रोते हुए कहा, ''बेटे, मैं और अधिक दिनों तक ज़िन्दा नहीं रहूँगा। तुम्हारे बारे में मैं निश्चिंत हूँ पर तुम्हारे बड़े भाई को लेकर बहुत परेशान हूँ। क्या मेरी एक इच्छा पूरी करोगे?''

''कहिये, पिताजी, आप जो भी कहेंगे, अवश्य करूँगा।'' माणिक ने कहा। रतन ने कहा, ''बेटे, तुम मेहनती हो। भगवान मेहनत करनेवालों का हमेशा साथ देते हैं। इसलिए दो एकड़ की बंजर ज़मीन तुम ले लो। मुझे पूरा विश्वास है कि मेहनत करके उस ज़मीन को उपजाऊ बनाओगे और एक दिन उसमें सोने की फसल होगी। दूसरी उपजाऊ भूमि अपने भाई को दे दो। यथासाध्य उसकी सहायता भी करते रहना।'' यों कहकर वह मौत की गोद में सो गया।

इसके बाद माणिक ने पिता के कहे अनुसार

ही उपजाऊ भूमि भाई को दे दी और घर भी उसके हवाले कर दिया। वह उस बंजर भूमि में एक झोंपडी खड़ी करके वहीं रहने लगा और रात-दिन मेहनत करने लगा।

माणिक के बंजर खेत से सटकर एक आंवले का पेड़ था। वह पेड़ एक देवी का निवास-स्थल था। पत्थरों से भरे उस बंजर भूमि में कड़ी मेहनत करते हुए माणिक को देखकर उसमें दया उभर आयी। वह आशीर्वाद देती रही कि उसे उसकी मेहनत का मीठा फल मिले। माणिक ने उस बंजर भूमि में हल चलाया और बीज बोये। हर बीज उगा और खेत में अच्छी फसल हुई।

उधर वीर ने अपने खेत की देख-रेख की जिम्मेदारी किसी और को सौंप दी और खुद बेकार बातें करते हुए समय बिताने लगा। उसके खेत से माणिक का खेत कहीं अधिक उपजाऊ हो गया। एक दिन जब वह माणिक के खेत से गुज़र रहा था तब उसने देखा कि उसका खेत बहुत ही उपजाऊ हो गया है और भरी फसल से अधिक शोभायमान दीख रहा है। उसने तुरंत माणिक को बुलवाया और नक़ली प्यार जताते हुए कहा, ''भैय्या, पिताजी ने तुम्हें बंजर भूमि देकर तुम्हारे साथ अन्याय किया। यह मुझसे सहा नहीं जाता। अच्छा यही होगा कि हम इसी क्षण खेतों की अदला-बदली कर लें।''

माणिक की समझ में आ गया कि भाई की बातों के पीछे ईर्ष्या है। पर, अपने पिता की अंतिम इच्छा इसे याद आयी और उसने हरा-भरा खेत अपने भाई के सुपुर्द कर दिया। माणिक के साथ जो अन्याय हुआ, उसकी ख़बर गाँव के प्रमुख भूषण तक पहुँच गयी। वह नाराज़ हो उठा। उसने वीर को तुरंत अपने यहाँ बुलवाया और उससे कहा, ''वीर, तुमने अपने भाई की अच्छाई का फ़ायदा उठाकर उसके साथ घोर अन्याय किया। फिर एक बार तुमसे ऐसी ग़लती हो जाए तो तुम्हें कड़ी से कड़ी सज़ा दूँगा।'' कटु स्वर में उसने उसे सावधान किया।
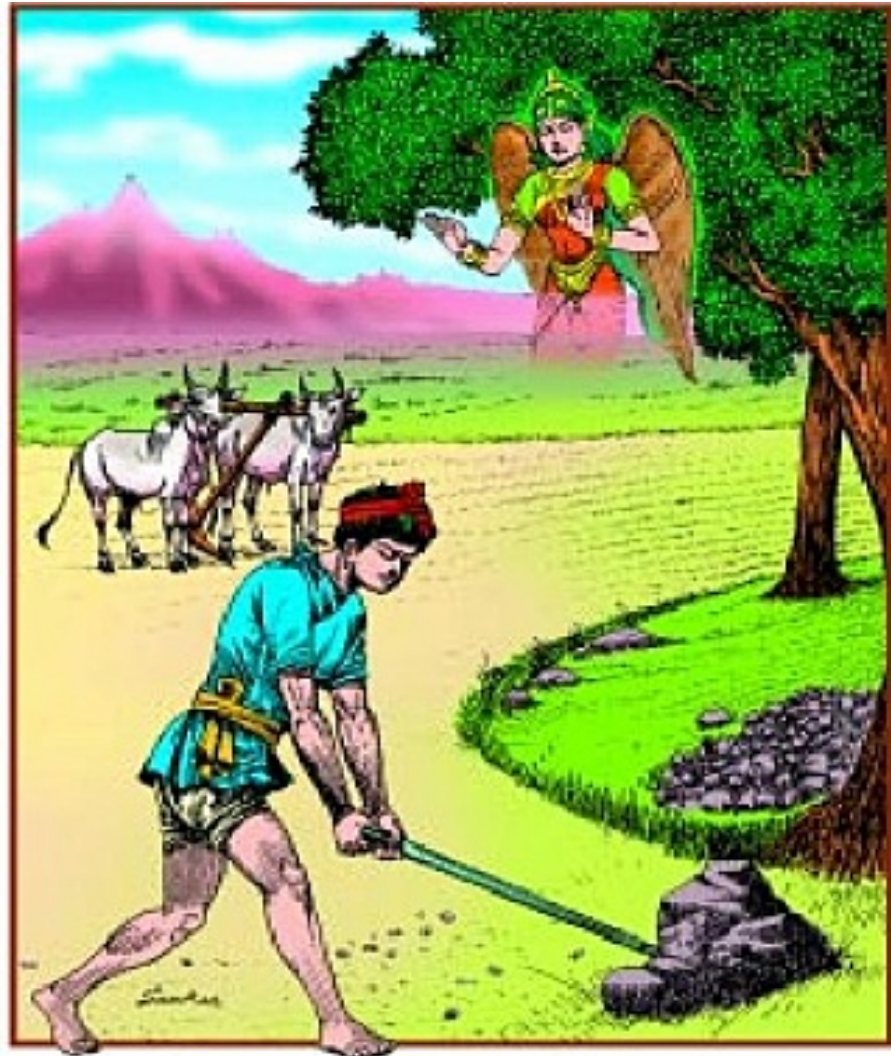
भूषण दूसरे दिन खुद माणिक की झोंपडी में गया और उससे पूछा, ''बेटे, कुशल हो''। फिर उसने बोरे भर का चावल झोंपडी में रखवाते हुए कहा, ''माणिक, यह समझना नहीं कि मैं तुम्हें यह चावल दान में दे रहा हूँ। मेरी और मेरी पत्नी की सदा यह इच्छा रही कि हमारी बेटी चंदना

की शादी तुमसे हो। मेरी बेटी भी तुम्हें बहुत चाहती है। मेरी बेटी से शादी करके मेरे ही घर में रहना।''

भूषण की बातें सुनकर माणिक की आँखों में आंसू भर आये। उसने विनयपूर्वक कहा, ''महाशय, आपकी बेटी से शादी करने से मुझे कोई आपत्ति नहीं है। परंतु विवश हूँ। अभी उसके लिए एक अच्छी साड़ी भी खरीदने की मेरी स्थिति नहीं है। पूरा साल मेहनत करूँगा, कमाऊँगा और फिर आपकी बेटी से ही शादी करूँगा।''

माणिक के स्वाभिमान पर भूषण बहुत ही खुश हुआ। देवी भी उस पर प्रसन्न होई। इसके दूसरे ही दिन जब माणिक आम के पौधों को रोपने के लिए ज़मीन खोद रहा था, तब उसे सोने की अशर्फियों से भरा एक घड़ा मिला। वह उसे तुरंत भूषण के पास ले गया और जो हुआ, पूरा-पूरा बताया।

भूषण ने खुश होते हुए कहा, ''बेटे, किसी वनदेवी ने तुम्हारी मेहनत से संतुष्ट होकर तुम्हें यह भेंट बख्शी है। अब तुम मुझसे भी अधिक धनी हो। अब मेरी बेटी से विवाह रचाने में तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं है ना?''

माणिक ने अपनी स्वीकृति दे दी। जो भी हुआ, वीर को भी मालूम हुआ। अब उसे अपनी गलती पर पछतावा होने लगा। वह माणिक से मिला और कहा, ''भाई, अभी-अभी मैं जान पाया हूँ कि मेहनत का क्या फल होता है। तुम्हारी मेहनत को लूटकर मैंने बड़ा पाप किया। मेरी दो एकड़ ज़मीन भी तुम्हीं ले लो। मैं तुम्हारे यहाँ नौकरी करूँगा। मेहनत करके सुखी जीवन बिताऊँगा।''

माणिक ने फ़ौरन अपने भाई को आलिंगन में ले लिया और कहा, ''बड़े भैय्या, दोनों मिलकर खेत में मेहनत करेंगे। जो भी है, आगे से हम दोनों का है।''

कहानी ख़त्म करने के बाद दादी ने कहा, ''बच्चो, तुम्हें भी वीर की तरह मालूम हो गया होगा कि मेहनत का मीठा फल कितना आनंद देता है। मेहनत का अर्थ है– उसके प्रति श्रद्धा।''

बच्चों ने भी खुश होते हुए कहा, ''दादी, आगे से हम भी इतोधिक श्रद्धापूर्वक पढ़ेंगे-लिखेंगे।''

भल्लूक मांत्रिक

16

(भल्लूक मांत्रिक ने राजा दुर्मुख को माफ़ क दिया। वह मायामर्कट की खोज में लग गया। अंगरक्षकों ने बताया कि मायामर्कट जीव गुप्त के साथ है। कालीवर्मा सहित मांत्रिक वहाँ जाने को निकल पड़ा। इतने में राक्षस उग्रदंड ने मायामर्कट पर पत्थर की गदा फेंकी। वह किसी प्रकार से बच निकला और घोड़े पर जा बैठा । उसके बाद...)

जब राक्षस उग्रदंड ने देखा कि मायामर्कट गदा की चोट से बचकर घोड़े पर जा बैठा है, तो वह आपे से बाहर हो गया। उसने गदा फिर से हाथ में ली और उसे निशाना बनाकर फेंक ी। पर गदा घोड़े के सिर को जा लगी। वह जोर से हिनहिनाता हुआ दौड़ पड़ा और इस प्रक्रिया में वह एक और घोड़े से टकरा गया। उस घोड़े पर सवार सैनिक धड़ाम् से गिर पड़ा। मायामर्कट ने इस मौक़े का फ़ायदा उठाया और उस घोड़े पर सवार होकर नगर की ओर घोड़े को दौड़ाने लगा। उग्रदंड उसका पीछा करे, इसके पहले ही मायामर्कट ने मंत्री जीवगुप्त से कहा, ''जीवगुप्त, तुम्हारी हर चाल नाकामयाब हो गयी। मैं सीधे चंद्रशिलानगर जा रहा हूँ और राजा जितकेतु को पूरा किस्सा बतानेवाला हूँ। नगर की हिफ़ाजत के सब इंतजाम करूँगा।''

किले से बाहर निकलते हुए भल्लूक मांत्रिक और काली वर्मा को देखकर मंत्री जीवगुप्त डर के

मारे थरथर कांपने लगा। वे उसी की तरफ़ बढ़े चले आ रहे थे। उसने मायामर्कट से कहा, ''ज़रा रुक जाना। महाबलशाली राक्षस और अलौकिक शक्तियों के स्वामी भल्लूक मांत्रिक से नगर को भला कौन बचा सकता है? मेरी बात मानो, हम दोनों यहाँ से जंगल में भाग जाएँगे।''

''मंत्री, कायर ही ऐसा काम करते हैं। मैं तुम्हारी तरह कायर नहीं हूँ। मुझे किसी भी हालत में तुरंत राजा जितकेतु से मिलना है। फिर इसके बाद ही भल्लूक मांत्रिक और कालीवर्मा को मार डालने का उपाय सोचूँगा।'' कहता हुआ मायामर्कट घोड़े को नगर की ओर तेज़ी से दौड़ाने लगा।

राक्षस उग्रदंड ने ज़ोर से दांत पीसते हुए कहा, ''अरे मंत्री, न ही मैं तुम्हारे सैनिकों का शत्रु हूँ, न ही तुम्हारे सामंत सूर्यभूपति का। कालीवर्मा को फांसी पर चढ़ाने की साजिश तुम्हीं ने की। तुम्हें सज़ा देकर ही रहूँगा। पहले घोड़े से उतर।''

उग्रदंड अपनी बात पूरी करे, उसके पहले ही मंत्री जीवगुप्त ने घोड़े को सावधान किया और चिल्लाकर सैनिकों से कहने लगा, ''यह राक्षस हम सबपर पिल पड़ेगा और हमें निगल जायेगा। जो जान की ख़ैर चाहते हैं, वे सब मेरे साथ आयें,'' कहता हुआ वह नगर की ओर बढ़ा।

सामंत सूर्यभूपति तथा सैनिक मंत्री के पीछे-पीछे जाने ही वाले थे कि इतने में उग्रदंड ने एक घोड़े का पैर पकड़ा और खींचा। घोड़े के साथ-साथ उसपर सवार सैनिक भी गिर पड़ा। उग्रदंड ने उस सैनिक का गला पकड़कर उसे ऊपर उठाया और कहा, ''लगता है, तुम्हारे हाथ-पांव अब भी नहीं टूटे। तुम जंगल की ओर भागो। नगर से अधिक वही सुरक्षित स्थल है।''

इतने में भल्लूक मांत्रिक और कालीवर्मा वहाँ पहुँचे। नगर की ओर भागे जा रहे सैनिकों को देखते हुए कालीवर्मा ने कहा, ''उग्रदंड, मंत्री सहित सब सैनिकों को तुमने छोड़ दिया और इस मंद सैनिक को पकड़ लिया? तुम्हें जीवगुप्त को छोड़ना नहीं चाहिये था।''

राक्षस उग्रदंड निराशा के मारे ज़मीन पर बैठ गया और गदा को दूर फेंकते हुए कहने लगा, ''भल्लूक मांत्रिक, उस मायामर्कट से मैंने बड़ी बुरी ख़बर सुनी। उसका कहना था कि तांत्रिक निध्यामिश्र ने ही मेरे अग्रज को मार डाला। क्या

उसकी बातों का विश्वास किया जा सकता है?''

भल्लूक मांत्रिक ने पूछा, ''तुम्हारे अग्रज का नाम क्या है?''

''कालदंड। क्या तुमने इसके पहले यह नाम कभी सुना? उसका निवास स्थल भी त ुम्हारा बताया भल्लूक पाद पर्वत ही है।'' उग्रदंड ने कहा।

भल्लूक मांत्रिक ने 'न' के भाव में अपना सिर हिलाते हुए कहा, ''उग्रदंड, वह तांत्रिक मेरे गुरु का अंत करने पर तुला हुआ है। इसके लिए वह हर ऐरे-ग़ैरे की मदद ले रहा है। उसने कुछ लोगों को अपनी तांत्रिक शक्तियों से बाँध रखा है और उनसे बेगारी करा रहा है। कालदंड नामक किसी राक्षस को मैं नहीं जानता। वह मायामर्कट थोड़ी-बहुत मंत्र शक्तियाँ मात्र जानता है। उसकी बातों का विश्वास मत करना।''

उग्रदंड ने एक बार अपने शरीर को झटका दिया और खड़े होने के बाद कहा, ''मेरे अग्रज के जीवित होने का मुझे पूरा भरोसा है। कुछ सालों पहले ब्रह्मपुत्र नदी की घाटी के प्रांतों में आये तांत्रिकों से डरकर मैं वहाँ से भाग निकला। उनके मंत्र-तंत्रों के सामने मेरी गदा निष्फल है। तुम्हारा दावा है कि मंत्र-तंत्र शक्तियों में तुम्हारा गुरु उनसे कहीं शक्तिशाली है, इसलिए मैं तुम्हारे साथ उन प्रदेशों में आऊँगा और उन दुष्टों का सर्वनाश करने में मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।''

उसकी बातों से मांत्रिक और कालीवर्मा बेहद खुश हुए। उन्होंने उससे कहा, ''उग्रदंड, हम निकट भविष्य में ही उस भल्लूक पाद पर्वत प्रदेश में जायेंगे। परंतु, इसके पहले उस मायामर्कट से हमें मंत्रदंड प्राप्त करना है और दुष्ट जितकेतु राजा को यथोचित दंड देना है।''
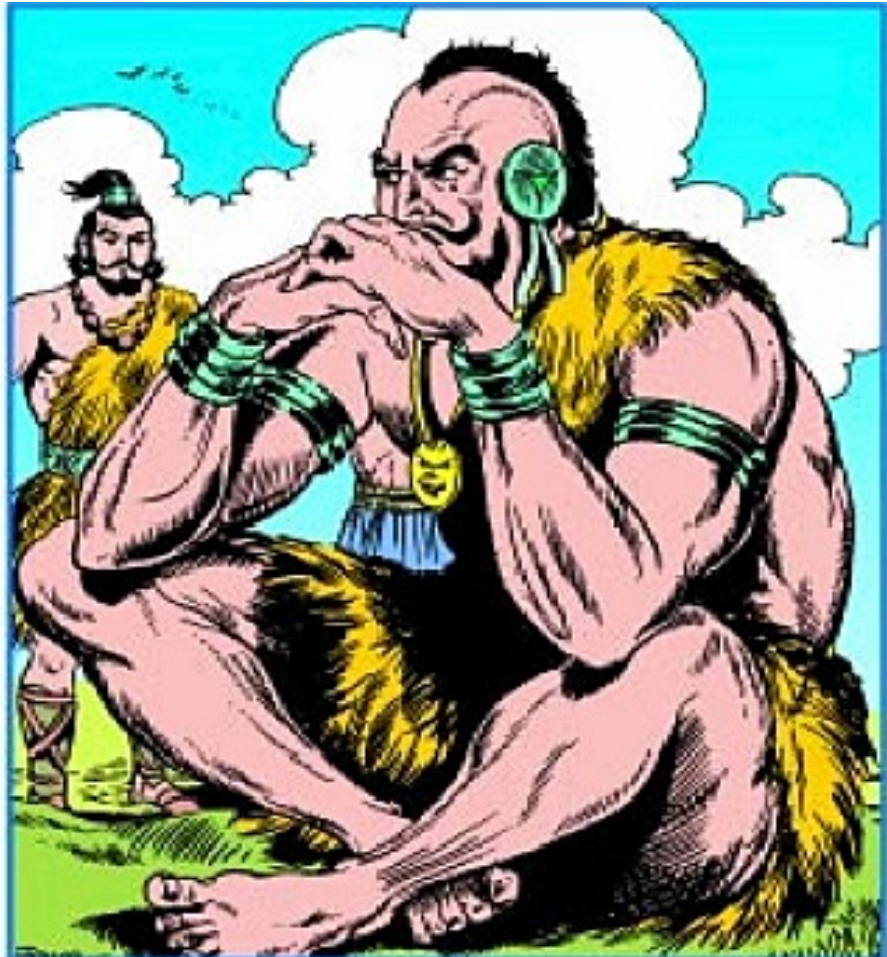
बधिक भल्लूक हाथी पर से ''भैरव'' कहता हुआ चिल्ला पड़ा और नगर की ओर बढ़ने लगा।

माया मर्कट घोड़े को तेज़ी से दौड़ाता हुआ चंद्रशिला नगर के नगर द्वार पर पहुँचा। उसे देखकर आश्चर्य प्रकट करते हुए दो पहरेदारों ने कहा, ''अरे वाह! मर्कट भी घुड़सवारी करते हैं? विश्वास ही नहीं होता।'' फिर उन्होंने घोड़े को पकड़ते हुए पूछा, ''अरे ऐ बंदर, बोलना भी आता है?'' कहते हुए उन्होंने बंदर की पूँछ पकड़ ली।

मायामर्कट ज़ोर से किकियाते हुए बोला, ''अरे अधम पहरेदारो, मैं कोई मामूली बंदर नहीं हूँ। मंत्र-तंत्र शक्तियों से लैस भ्रांतिमति हूँ। हट

जाओ। हमारे महाराज को बहुत बड़े जोखिम से बचाना है।''

पहरेदारों में से एक उसकी बातें सुनकर स्तंभित रह गया। दूसरा पहरेदार साहसपूर्वक आगे बढ़ा और मर्कट के सिर को तलवार का निशाना बनाते हुए बोला, ''तुम मांत्रिक हो या तांत्रिक, इससे मुझे कुछ भी लेना-देना नहीं है। पहले मेरे साथ चलो हमारे सरदार के पास,'' यह कहते हुए उसने घोड़े की लगाम पकड़नी चाही। मर्कट ने तुरंत अपने मंत्रदंड से तलवार को हटाया। मंत्रदंड के स्पर्श से तलवार जल गयी और देखते-देखते भस्म हो गयी।

पहरेदार भय के मारे चिल्ला उठे और वहाँ से हट गये। माया मर्कट, ''जय तांत्रिक गुरु'' कहकर चिल्लाता हुआ आगे बढ़ा।

नगर द्वार से थोड़ी ही दूरी पर पहरेदारों का सरदार कुछ और पहरेदारों से बातें करने में लगा हुआ था। पहरेदारों की चिल्लाहट सुनकर उस ओर मुड़ा। उसने घोड़े पर सवार होकर तेज़ी से निकलते हुए माया मर्कट को देखा। सरदार ने तुरंत तलवार निकाली और एक घोड़े के पास दौड़ते हुए कहने लगा, ''सावधान हो जाओ, शत्रु राजा का कोई गुप्तचर हमारी राजधानी में घुस आया है, लगता है, वह हमारे राज़ जानने के लिए अन्दर घुस आया है। उसका पीछा करो और उसे पकड़ लो।''

पहरेदारों का सरदार घोड़े पर सवार होकर माया मर्कट के पास पहुँचे, इसके पहले ही वह बहुत दूर चला गया और राज भवन के निकट पहुँच गया। उस समय राज भवन के सामने के खुले मैदान में एक मदारी पालतू बंदरों के खेल दिखा रहा था और लोगों को हँसा रहा था।

घोड़े पर सवार होकर मर्कट को अपनी ओर आते हुए देखकर लोग खुशी के मारे तालियाँ बजाने लगे और कहने लगे, ''वाह, वाह! बंदर भी घुड़सवारी करने लगे। आख़िर यह खिलाड़ी है कौन?''

मदारी ने माया मर्कट को एक बार ग़ौर से देखा और अपने आप कहने लगा, ''लगता है कि इस बंदर ने ख़ास प्रशिक्षण पाया। साथ-साथ इसमें कुछ जन्मजात असाधारण प्रतिभा भी मालूम पड़ती है। यह साक्षात हनुमान की तर ह देव-वानर सा लगता है। इसके अनोखे करतब से लोगों का भरपूर मनोरंजन होगा और आमदनी भी बहुत होगी। किसी तरह यह मेरा हो जाए तो

कितना अच्छा होगा।'' यों सोचकर उसने उसे पकड़ने के लिए फांस फेंका। देखते-देखते माया मर्कट नीचे जा गिरा। उस समय उसके हाथ में रखा हुआ मंत्र दंड दूर जा गिरा।

मदारी खुशी से फूल उठा। उसने माया मर्कट के दोनों कानों को पकड़ते हुए ऊपर उठाया और कहा, ''देखो, अब से मैं तुम्हारा मालिक हूँ। मेरा कहा नहीं मानोगे तो पूँछ में कपड़े लपेटूँगा और आग लगा दूँगा।''

माया मर्कट ने दांत पीसते हुए एक सरसरी नज़र दौडायी और कहा, ''अरे बेवकूफ़, मैं कोई मामूली बंदर नहीं हूँ। अद्भुत शक्तियों से भरा मांत्रिक हूँ। तुम्हारे राजा जितकेतु विपत्ति में फंसनेवाले हैं। उन्हें सावधान करने आया हूँ। मेरा अपमान करने का दुस्साहस करके बडी ग़लती कर रहे हो। तुम्हारा सिर कटवा दूँगा। मेरा मंत्र दंड है कहाँ?'' चिल्लाता हुआ वह उठ खड़ा हो गया।

उसकी बातें सुनकर मदारी एकदम डर गया। अपने भालू के गले में लटकती रस्सी को खींचते हुए उसने कहा, ''यह कोई पिशाची बंदर लगता है। एक जंतु ही दूसरे जंतु को अपने अधीन कर सकता है। चल, तू आगे बढ़ और इस बंदर को मज़ा चखा।''

भालू ने अपना मुँह खोला और मर्कट पर टूट पड़ा। माया मर्कट ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाता हुआ बोला, ''मैं जितकेतु राजा की भलाई करने आया हूँ। वे भल्लूक मांत्रिक के चंगुल में फंसनेवाले हैं।''
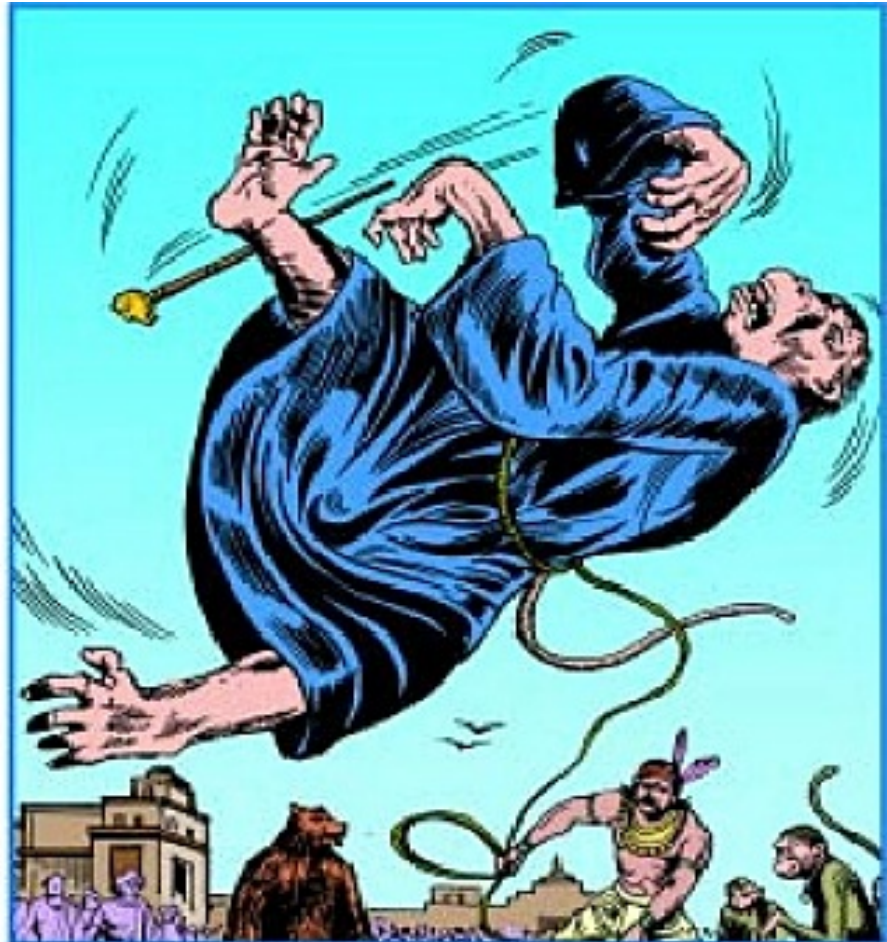
कहते हुए उसने अपने को भालू की पकड़ से छुड़ाया और जब-जब मौक़ा मिला, अपने दांतों से उसे काटने लगा।

वहाँ जमे लोगों ने मर्कट की बातों की परवाह नहीं की। उसकी बातों को किसी ने ध्यान से सुना ही नहीं। वे कहने लगे, ''अरे यह बंदर तो मनुष्य की तरह बोलता भी है। जो भी हो, दोनों की कुश्ती देखने लायक़ है।'' वे सब भालू-बन्दर की लड़ाई से मजा लेने लगे।

इतने में घोड़े पर सवार पहरेदारों का सरदार वहाँ आया। म्यान से तलवार निकालते हुए वह कहने लगा, ''यहाँ क्या हो रहा है? यह भी कोई मनोरंजन हुआ? चले जाओ यहाँ से।''

फिर उसने मदारी की ओर मुड़कर कहा, ''यह मर्कट दुश्मन राजा का गुप्तचर है। क्या इसे अपने भालू से मरवा डालना चाहते हो? सावधान। इसे

पहले जिन्दा पकडना होगा और राजा के पास ले जाना होगा।''

सरदार के यों कहते ही मदारी ने भालू के गले में बंधी रस्सी खींच ली। माया मर्कट चोटों की वजह से कराहता हुआ कहने लगा, ''मैं आया हूँ, तुम्हारे राजा की रक्षा करने। मैं बार-बार इस बात को दुहरा रहा हूँ। तुम्हारेराजा पर आपत्ति आनेवाली है। एक बलवान राक्षस और मंत्र शक्तियों का एक शक्ति शाली स्वामी तुम्हारे राजा के प्राणों के प्यासे हो रहे हैं। मैं उन्हें सावधान करने आया हूँ। पर तुम लोग मेरा ही अपमान करने पर तुल गये? अपने राजा को ही मेरे पास बुलाना। तुमने मुझे क्या समझ रखा है? मैं एक महान मांत्रिक का शिष्य हूँ। मेरा मंत्रदंड कहाँ है।'' कहता हुआ वह मंत्रदंड ढूँढ़ने लगा।

माया मर्कट की बातों पर क्रोधित होते हुए सरदार ने कहा, ''अरे, शत्रु के गुप्तचर, क्या कहा तुमने? हमारे महाराज को ही तुम्हारे पास आना होगा? तुम्हारा यह दुस्साहस कि मेरे महाराज का अपमान करो! क्या वे एक बन्दर के बुलाने पर यहाँ आयेंगे? अभी तुम्हें पकड़ कर राजा के पास ले चलते हैं। वे ही फैसला करेंगे।'' फिर उसने मदारी से कहा, ''मदारी, तुम अपने भालू से कहो कि वह इसे अपना बंदी बना ले। इस मर्कट गुप्तचर को दोनों मिलकर राजा के पास ले जायेंगे।''

मदारी का इशारा पाते ही भालू मर्कट पर टूट पडा और उसे पकड़ लिया। उसने उसे अपनी पीठ पर डाल लिया और मालिक के पीछे-पीछे राजभवन की ओर चला। लोग खुश हुए और उत्साह के साथ चिल्लाते हुए उनके पीछे-पीछे जाने लगे।

माया मर्कट चिल्लाने लगा, ''तांत्रिक गुरु, तुम ही अब मेरी रक्षा कर सकते हो। मेरा मंत्रदंड कहाँ गया?'' फिर कुछ सोच कर वह अपने आप से बोला, ''ठीक है, मुझे राजा के पास ले चलो। मैं भी तो उन्हीं से मिलने और उन्हें सावधान करने आया हूँ। मैं अकेला ही मंत्रदंड की मदद से राजा को दुष्टों से बचा सकता हूँ, लेकिन मेरा मंत्रदंड है कहाँ?''

(और है)
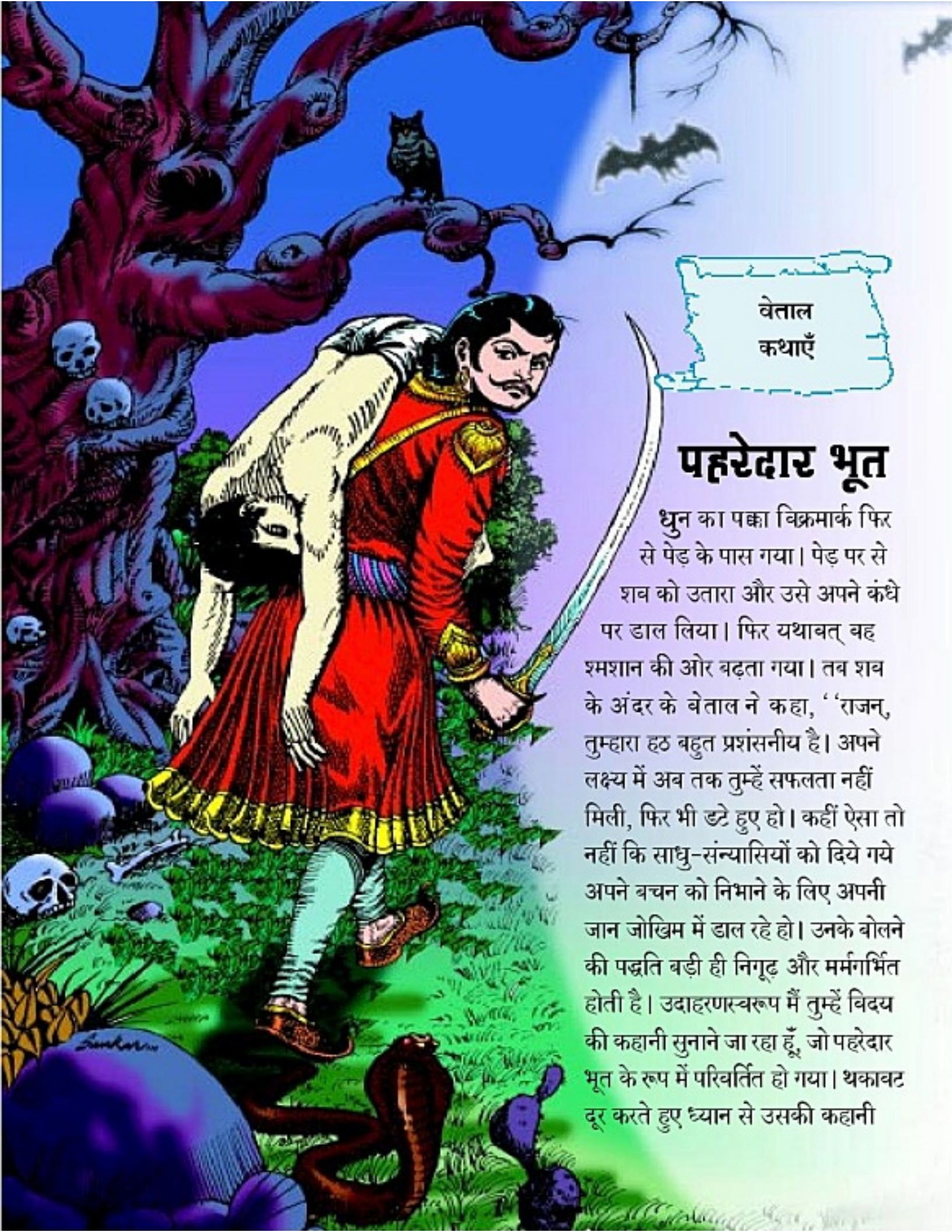
बेताल कथाएँ

पहरेदार भूत

धुन का पक्का विक्रमार्क फिर से पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव को उतारा और उसे अपने कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत् वह श्मशान की ओर बढ़ता गया। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, ''राजन्, तुम्हारा हठ बहुत प्रशंसनीय है। अपने लक्ष्य में अब तक तुम्हें सफलता नहीं मिली, फिर भी डटे हुए हो। कहीं ऐसा तो नहीं कि साधु-संन्यासियों को दिये गये अपने बचन को निभाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल रहे हो। उनके बोलने की पद्धति बड़ी ही निगूढ़ और मर्मगर्भित होती है। उदाहरणस्वरूप मैं तुम्हें विदय की कहानी सुनाने जा रहा हूँ, जो पहरेदार भूत के रूप में परिवर्तित हो गया। थकावट दूर करते हुए ध्यान से उसकी कहानी

सुनो।'' फिर बेताल विदय की कहानी यों सुनाने लगा:

बहुत पहले की बात है। सुधन एक व्यापारी था और देश-विदेश में घूमकर उसने अपार धन कमाया था। उ सका अपना एक छोटा-सा धनागार था। उसकी प त्नी के रिश्तेदार विदय को उसके पहरे की जिम्मेदारी सौंपी गयी।

सुधन, विदय की गतिविधियों को जानने के लिए उ सके काम-काजों पर नज़र रखता था। पर विदय को इसकी बिल्कुल जानकारी नहीं थी, इसलिए वह हर दिन कुछ सोना और अशर्फियाँ घर ले जाया करता था।

सुधन ने यह बात पत्नी सुमति से बतायी। उसने तुरंत विदय को बुलाना चाहा और खरी-खोटी सुनाना चाहा। पर, ऐसा करने से रोकते हुए सुधन ने पत्नी से कहा, ''मुझे तो इस बात का दुख है कि जिसका हमने विश्वास किया, उसी ने हमें धोखा दिया। उसकी चोरी से हमें कोई फर्क नहीं पड़ता। सही समय पर मैं उसे पकड़ कर पाठ सिखाऊँगा।''

सुमति ने इसपर आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, ''पहरेदार पर पहरा देने से अच्छा यह होगा कि हम खुद अपने धनागार पर पहरा दें।''

सुधन ने हँसते हुए कहा, ''पूरे धनागार पर पहरा देना बहुत बड़ा काम है। वह काम विदय संभाल रहा है। पर एक विदय पर ही पहरा देना छोटा काम है। वह काम मैं कर रहा हूँ। हमें नुक़सान बहुत ही कम मात्रा में पहुँच रहा है, पर वह जो काम कर रहा है, वह अवश्य ही ग़लत है। विदय को यह समझने में थोड़ा समय लगेगा।''

देखते-देखते विदय ने जो संपत्ति लूटी, वह दो गागर भर की हो गयी। उसने उन गागरों को पिछवाडे में जमीन के अंदर गाड़ दिया। कुछ दिनों के बाद सुधन ने, विदय को बुलवाया और उससे कहा, ''मैं तुमपर नज़र रखता आ रहा हूँ। धनागार पर पहरा देने के लिए मैंने तुम्हें नियुक्त किया। पर तुमने विश्वासघात किया और तुमने खुद चोरी की। मेरी संपदा को गागरों में भरकर उन्हें अपने घर के पिछवाड़े में ज़मीन के अंदर छिपाया। कहो, तुम्हारी क्या क़ैफियत है?''

विदय घबरा गया। वह सुधन के पैरों पर गिर कर गिड़गिडाते हुए कहने लगा, ''हाँ, मुझसे बड़ी भूल हो गयी। आगे से ऐसी ग़लती नहीं करूँगा।

मुझे माफ़ कर दीजिये।'' उसने कसम खाते हुए कहा।

सुधन ने कहा, ''तुम मेरी पत्नी के रिश्तेदार हो, इसलिए तुम्हें माफ़ कर देता हूँ। साथ ही, वह संपत्ति तुम्हें दे भी देता हूँ। बशर्ते कि तुम अपनी क़ाबिलियत साबित करो। अन्यथा मैं तुम्हें पुलिस के सुपुर्द कर दूँगा।''

विदय ने हाथ जोड़कर कहा, ''आप महान हैं। बताइये कि अपनी काबिलियत साबित करने के लिए मुझे क्या करना होगा।''

सुधन ने फ़ौरन कहा, ''तुमने मेरी जिस संपदा की चोरी की, एक हफ़्ते के अंदर तुम्हारी जानकारी के बिना उस संपदा की चोरी मैं स्वयं करूँगा। पहरेदार होने के नाते मुझे रोको और अपनी काबिलियत साबित करो।''

विदय ने अपनी पत्नी से यह विषय सविस्तार बताया। वह खुश होती हुई बोली, ''इसके लिए हमें भगवान की सहायता चाहिये। हमारे गाँव की सरहदों पर जो पहाड़ी गुफ़ाएँ हैं, उनमें से आख़िरी गुफा में एक महिमाबान साधु रहते हैं। आप उनसे मिलिये और सहायता मांगिये।''

विदय साधु से मिला और पूरा विषय बताया। साधु ने कहा, ''मैं तुम्हें अभिमंत्रित भस्म देता हूँ। इस भस्म को जहाँ छिड़कोगे, वहाँ छिपाकर रखी गयी संपदा को एक सप्ताह तक कोई छू भी नहीं सकता। सुधन से भी यह काम नहीं हो सकता। लेकिन, वह संपदा सुधन की अपनी है, जिसे लेने से तुम उसे रोक रहे हो। यह

पाप है। इस से तुम्हारा अनिष्ट हो सकता है। फिर भी क्या यह काम करना चाहते हो?''

विदय पाप का भार अपने ऊपर लेने को तैयार हो गया और वैसा ही किया, जैसा साधु ने कहा था। भस्म के प्रभाव के कारण सुधन उस संपदा को अपना नहीं पाया। एक सप्ताह के बाद अपने दिये बचन के अनुसार उसे मानना ही पड़ा कि यह संपदा विदय की है। इसपर विदय को बेहद खुशी हुई। पर दूसरे ही क्षण उसका बदन जलने लगा। भयभीत होकर वह दौड़ा-दौड़ा साधु के पास गया। साधु ने कहा, ''सुधन अच्छा आदमी है। उसे धोखा देकर तुमने उसकी संपत्ति की चोरी की । अपनी संपत्ति को लेने से उसे रोकने के लिए मेरा दिया भस्म छिडका। यह पाप है और वही पाप तुम्हारे शरीर को जला रहा है। इस

पीडा को जीवन भर तुम्हें सहना ही पड़ेगा। अथवा, तुम्हें भूत बनना पडेगा और उस संपत्ति पर पहरा देना होगा, जिससे बह किसी दूसरे के हाथ न लगे। किसी भी हालत में यह राज़ अपनी पत्नी से भी छिपाकर रखना होगा।''

शारीरिक पीडा को सह न सकने के कारण विदय साधु की सहायता से भूत में बदल गया। अपने विकृत रूप से दुखी होकर उसने साधु से पूछा, ''स्वामी, कब तक मुझे इसी रूप में रहना होगा?''

''सुधन ने जो संपदा तुम्हें दी, उसे तुम बेतन मानते हो तो जितने साल तुम्हें काम करना होगा, उतने सालों तक तुम भूत बनकर ही रहोगे।'' साधु ने कहा।

विदय ने हाथ जोड़कर कहा, ''इसका मतलब यह हुआ कि सौ सालों तक मुझे काम करना होगा। इसके पहले ही मुक्त होने का क्या कोई उपाय नहीं?''

''अगर तुम्हारा भाग्य चमका और कोई एक और पहरेदार भूत तुम्हें ढूँढ़ता हुआ आये तो तुम्हें मुक्ति मिलेगी।'' यह कहकर साधु ने विदय को वहाँ से भेज दिया।

यों, विदय सुधन की दी हुई सम्पत्ति का पहरेदार बना। उसकी पत्नी और संतान को मालूम नहीं हो पाया कि विदय पर क्या गुज़रा। जब उन्होंने जमीन के अंदर गाड़ी गगरियों को बाहर निकालने की कोशिश की, तब भूत प्रकट हुआ और उन्हें डराया-धमकाया। उन्हें मालूम नहीं था कि यह भूत, स्वयं विदय ही है। डर के मारे उन्होंने गाँव छोड़ दिया और कहीं चले गये। सुधन ने सोचा कि विदय पत्नी समेत संपत्ति लेकर कहीं चला गया।

यों कुछ साल बीत गये। अब विदय के घर में देवनाथ नामक एक व्यक्ति परिवार सहित रहने लगा। वह अब्बल दर्जे का कंजूस था। उसकी एक बेटी और एक बेटा थे। वह बेटी की शादी के पक्ष में नहीं था, क्योंकि उसका धन खर्च हो जायेगा। उसकी बेटी की शादी उसके मामाओं ने करवायी। पिता के स्वभाव से नाराज़ होकर उसका बेटा घर छोड़कर चला गया। बेटे के दुख में और उसकी बीमारी का इलाज न कराने के कारण उसकी पत्नी भी मर गयी।

पर, देवनाथ को इसका कोई दुख नहीं था।

एक दिन पडोसियों ने सत्यनारायण पूजा कराने के बाद देवनाथ को भी आम के दो फल दिये। आम के वे फल बड़े ही स्वादिष्ट थे। उसमें आशा जगी कि इन फलों की गुठलियों को ज़मीन में गाड़ दूँ तो वे देखते-देखते बड़े पेड़ हो जायें गे और उनके मीठे फल मैं खा सकूँगा। पिछवाडे में जाकर कुदाल से ज़मीन को वह खोदने लगा तो खन्-खन् की आवाज़ हुई। उसने और गहरा खोदा तो वहाँ दो गगरियाँ मिलीं। वह उन गगरियों को बाहर निकालने ही वाला था कि उस गड्ढे से धुआँ निकला जो एक बड़े भूत के रूप में परिवर्तित होकर कहने लगा, ''अरे नीच, इन गगरियों में जो भी संपदा है, उसका मैं पहरेदार हूँ। एक क्षण भी यहाँ रुके तो तुम्हें मार डालूँगा।''

देवनाथ भूत को देखकर पहले तो डर गया, पर जब उसने सुना कि उन गगरियों में संपदा है तो धीरज बाँध कर उसने कहा, ''यह घर मेरा है। यह पिछवाडा मेरा है। यहाँ जो भी निधियाँ हैं, मेरी हैं। मुझे रोकनेवाले तुम कौन होते हो?''

भूत ठठाकर हँस पड़ा और मौन रह गया। देवनाथ ने कुदाल अपने हाथ में लेकर ऊपर उठाया तो वह उसके हाथों से फिसल गया। इतने में देखते-देखते वह गढ्ढा भी भर गया। देवनाथ को अपनी असहायता का एहसास हुआ और उसने हाथ जोड़कर कहा, ''ऐ भूतनाथ, मेरी तीव्र इच्छा इन गगरियों का मालिक बनने की है। इसके लिए मुझे क्या करना होगा?''

भूत ने, देवनाथ से अपनी कहानी बतायी और कहा, ''यहाँ की संपत्ति किसी और पहरेदार भूत को ही मिल सकती है।'' फिर उसने गुफ़ा में रहनेवाले साधु के बारे में बताया। देवनाथ दौड़ा-दौड़ा साधु के पास गया और अपनी इच्छा जाहिर की। उसकी ओर आश्चर्य-भरे नेत्रों से देखते हुए साधु ने शांत स्वर में कहा, ''बेटे, अब तक मुझमें यह संदेह बना हुआ था कि तुम जैसे कंजूसों से दुनिया को क्या कोई लाभ है? पर अब उस संदेह की निवृत्ति हो गयी। ग़लती करनेवाले विदय जैसों को मुक्ति दिलानेवाले मानव रूप में आये तुम अवतार हो। तुम्हारी इच्छा अवश्य पूरी होगी।''

साधु की बातों से बहुत ही संतुष्ट देवनाथ ने उन्हें साष्टांग नमस्कार किया। फिर लौटकर पूरा विषय भूत बने विदय से बताया। विदय मौन था, इसलिए इस मौक़े का फायदा उठाने के लिए

बडे ही उत्साह से उसने कुदाल से खोदना शुरू किया। दोनों गगरियों को उसने बाहर निकाला। उनमें भरे रत्नों और अशर्फियाँ को देखकर वह पागल हो उठा और कहने लगा "ये सब मेरे हैं, मेरे ही हैं।" वह कूदने लगा, नाचने लगा। देखते-देखते उसके प्राण-पखेरु उड़ गये।

दूसरे ही क्षण विदय को उसका रूप मिल गया और वह सामान्य मनुष्य बन गया। भूत बनकर गड्ढे के चारों ओर घूमते हुए देवनाथ को उसने एक बार देखा और वहाँ से चलता बना।

वेताल ने इस कहानी को सुनाने के बाद राजा विक्रमार्क से कहा, "राजन्, साधु की बातें क्या परस्पर विरोधी नहीं लगतीं? उन्होंने देवनाथ से कहा था कि तुम मानव रूप में जन्मे "अवतार" हो। यह भी कहा था कि तुम्हारी इच्छा अवश्य पूरी होगी। तो फिर देवनाथ क्यों मर गया? क्या साधु की बातों में कोई गूढ़ार्थ है? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी तुम चुप रहोगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे।"

विक्रमार्क ने उसके संदेहों को दूर करने के उद्देश्य से कहा, "देवनाथ ने अपनी पुत्री के विवाह के विषय में और पत्नी के विषय में जो व्यवहार किया, वह बड़ा ही निकृष्ट था। उससे उसकी कंजूसी स्पष्ट गोचर होती है। संपत्ति से भरी गगरियों को देखते ही उन्हें अपना बना लेने की तीव्र इच्छा उसमें जगी। स्वार्थ ने उसे अंधा बना डाला। वह समझ नहीं पाया कि पराये का धन विष के समान है। ऐसा लोभी व स्वार्थी भूत के समान है। उसके लोभ ने ही उसके प्राण हर लिये। उसकी कंजूसी तथा अमित स्वार्थ ने ही उसे पहरेदार भूत बनाया। चूँकि साधु की दृष्टि में लोभी मानव मरे आदमी के बराबर है, इसलिए पिछवाडे में छिपायी गयी संपत्ति का वही योग्य रक्षक है। इसी कारण उन्होंने कहा भी था कि तुम्हारी इच्छा अवश्य पूरी होगी। साधु की बातों में कोई वैविध्य है ही नहीं।"

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित अदृश्य हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधारः सुभद्रा देवी की रचना)

गाँधीजी के लिए मन्दिर

हमारा सम्पूर्ण देश गाँधी जी के प्रति श्रद्धा रखता है। उड़ीसा में सम्बलपुर के निवासियों ने एक मन्दिर का निर्माण कर उसमें गाँधी जी की एक कांस्य प्रतिमा प्रतिष्ठित की है। वहाँ नियमित रूप से प्रातः और संध्या काल पूजा और आरती की जाती है। भजन के स्थान पर उनके भक्त राष्ट्रीय गीत गाते हैं जो गाँधी जी की सांध्य वार्ताओं का नियमित कार्यक्रम था। गणतंत्र दिवस (२६ जनवरी), शहीद दिवस (३० जनवरी) तथा गाँधी जयन्ती (२८ अक्तूबर) दिवस मन्दिर के विशेष दिन माने जाते हैं जब भारी संख्या में उनके भक्त वहाँ एकत्र होते हैं।

जैन गुरु और उनके वाहन

यद्यपि वर्धमान महावीर को जैन धर्म का प्रवर्तक माना जाता है, यह धर्म इनके बहुत पहले से अस्तित्व में था, क्योंकि महावीर अन्तिम जैनगुरु या तीर्थंकर थे। उनके पूर्व २३ जैनगुरु हो चुके थे। सभी २४ गुरुओं की प्रतिमाएँ एक जैसी दिखती हैं, यह आश्चर्य की बात है। बैठी हुई प्रतिमाएँ चिपटे आधार पर होती हैं, जिस में अलग-अलग वाहन होते हैं। जैसे आदिनाथ का वाहन बैल है; सुमतिनाथ का वाहन पक्षी है। वाहन सामान्य रूप से आधार के केन्द्र में उत्कीर्ण किया रहता है।

अन्य देशों (पोलैण्ड) की जनश्रुत कथाएँ

राजा की विशिष्ट नाक

एक सौ साल पहले तक उत्तरी पोलैण्ड के लोग विविध प्रकार के वृक्षों से हरी-भरी एक छोटी-सी घाटी की ओर संकेत करते हुए कहते थे, ''एक समय वहाँ ब्लादिमीर का चमत्कारी सेब वृक्ष था। काश! अभी तक वह होता।''

अब तो वह हरी-भरी घाटी भी नहीं रही। उसका स्थान एक नगर ने ले लिया है। परन्तु ब्लादिमीर और उसका सेब वृक्ष देश की जनश्रुत कथाओं में अब भी अमर हैं। एक भविष्यवाणी ने ब्लादिमीर की माँ को बताया था कि वह एक असाधारण बालक को जन्म देगी। लेकिन उसे यह चुनाव करना होगा कि वह अपने बेटे को धनी देखना चाहती है या सुखी। वह अपने बेटे के लिए जैसा भाग्य चाहती है वैसी भगवान से प्रार्थना कर सकती है।

वह युवा महिला पर्याप्त बुद्धिमती थी, इसलिए उसने एक सुखी बालक की कामना की। क्योंकि धन तो सुख प्राप्त करने के अनेक साधनों में से केवल एक साधन है। यदि बालक इसके बिना सुखी रह सकता है तो इसके लिए परेशान होने की क्या आवश्यकता है, जो चिन्ताओं के बिना कभी नहीं आता।

उसने अपने बेटे ब्लादिमीर को बड़े प्यार से पाला-पोसा। वह गरीब थी, इसलिए वह अपने बेटे को स्कूल नहीं भेज सकी, जो हालांकि दूर के शहरों में ही हुआ करता था। उसने उसे एक दक्ष मोची के पास भेज दिया जिससे वह जूते बनाने की कला सीख सके। बालक कुछ दिनों तक मोची के पास रहा, लेकिन एक दिन यह शिकायत लेकर माँ के पास वापस आ गया कि जूतों की मांग करने वाले धनी लोग होते हैं। गरीबों के पास जूतों के लिए पैसे नहीं होते। वह

कोई ऐसा काम नहीं करना चाहता था जिसमें केवल धनी लोगों की सेवा करनी पड़े।

उसकी स्नेहशील माँ मान गई। उसने तब एक दक्ष दर्जी से बात की जो ब्लादिमीर को एक प्रशिक्षार्थी के रूप में अपने पास रखने को राजी हो गया। लड़के ने कुछ दिनों तक काम किया, लेकिन बाद में इसलिए वह वापस आ गया, क्योंकि, जैसा कि उसने कहा, केवल धनी लोग ही कपड़े सिलवाते हैं और उसे धनी लोगों की सेवा करना पसन्द नहीं है।

उसके बाद माँ ने उसे ऐसे व्यक्ति के पास भेजा जो तलवार बनाने में दक्ष था । राज्यों में अक्सर युद्ध होने के कारण तलवारों की बहुत मांग थी, इसलिए तलवार बनानेवाले बहुत मुनाफा कमा रहे थे। लेकिन ब्लादिमीर वहाँ भी एक हफ्ते से अधिक नहीं रहा। ''माँ, क्या मेरे लिए ऐसी चीजें बनाना जरूरी हैं जो लोगों की हत्या करने में काम आती हैं? मैं ऐसा क्यों करूँ?'' उसने दुखी होकर पूछा।

''तुम्हारे लिए यह जरूरी नहीं है, बेटे, लेकिन मैं तुम्हारे जीवननिर्वाह के लिए कोई और मार्ग नहीं बता सकती। हाँ, तुम मवेशियों की देखभाल कर सकते हो, उन्हें चरागाह तक ले जा सकते हो और उन्हें घर वापस ला सकते हो, जैसा कि गाँव के अन्य लड़के करते हैं,'' माँ ने कहा।

ब्लादिमीर ने माँ की सलाह मान ली। उसे हरे खेतों में घूमना, गीत गाना और चरवाहों के साथ लुका-छिपी खेलना बहुत अच्छा लगता था। एक दिन उसने देखा कि एक छोटी शिला के चारों ओर आग की लपटें उठ रही हैं। बाद में उसने देखा कि शिला पर एक छिपकली है जो आग से बचने की कोशिश कर रही है, पर सफल नहीं हो पा रही है। उसने एक छड़ी की मदद से उसे बचा लिया। वह छिपकली तुरन्त एक बूढ़ी स्त्री में बदल गई। उसने ब्लादिमीर को धन्यवाद दिया और सेब का एक पौधा देते हुए कहा, ''इसे अपने बाग में लगा दो । इसके फल में रोगहरण क ी चमत्कारी शक्ति होगी।'' वह स्त्री पुनः छिपकली में बदल गई और झाड़ियों में छिप गई।

ब्लादिमीर ने अपनी खिड़की के निक ट उस पौधे को लगा दिया। दो महीनों में वह एक सुन्दर वृक्ष बन गया और सेब का फल देने लगा। ब्लादिमीर की माँ को बुखार था। उसने पहला सेब अपनी माँ को दिया। उसका बुखार तुरन्त ठीक हो गया।

कि वृक्ष ने फल देना बन्द कर दिया। यह वैद्य और मंत्री दोनों के लिए अपमानजनक बात थी। राजा ने उन पर क्रोधित होकर इसके विषय में कुछ करने का आदेश दिया। वास्तव में, उसे जुकाम हो गया था और वृक्ष से सेब फल पाने का इन्तजार कर रहा था जिसे खाकर वह अपना जुकाम ठीक कर सके। राजवैद्य की कड़वी गोलियों और रंग-बिरंगी पीनेवाली मिक्सचर दवाइयों से उसे कुछ भी आराम नहीं मिला था।

इस बीच ब्लादिमीर रोगियों की सेवा न कर सकने के कारण उदास होकर, चरागाह में उस शिला के पास, जहाँ ब ह छिपकली-स्त्री से मिला था, एक वृक्ष के नीचे बैठ गया। ''हे दयावती, क्या आप एक बार फिर दर्शन देने की कृपा करेंगी?'' वह बोला। तभी एक आँधी ने उसके सामने सूखे पत्तों का एक स्तम्भ सा बना दिया। दूसरे ही क्षण उसके समक्ष छिपकली-स्त्री खड़ी थी।

ब्लादिमीर ने उसे राजा और उसके आदमियों के द्वारा उस पर किये गये अन्याय के बारे में बता दिया। छिपकली स्त्री ने उसे लाल सेबों से भरी एक टोकरी दी। ''राजमहल में जाओ और इन्हें बेचो। एक अच्छा मजाक देख ोगे।'' उस अलौकिक प्राणी ने कहा और एक दूसरे बिंडोबा के साथ वह अदृश्य हो गई।

ब्लादिमीर तुरन्त राजमहल चला गया। ''क्या कोई इन सेबों को खरीदेगा? इससे अप्रत्याशित

उसके बाद ब्लादिमीर ने उस सेब से बहुत रोगियों की चिकित्सा की और उसे इसमें शत प्रतिशत सफलता मिली। राजा को भी उसके चमत्कार के बारे में खबर मिली। ''उसे क्यों नहीं हम अपना एक दरबारी बना लें।''

राजा ने प्रस्ताव रखा। ''यह आवश्यक नहीं है, महाराज'', राजवैद्य ने कहा। ''हम लोग उस वृक्ष को अपने बाग में लगा लें, उससे काम चल जायेगा।'' मंत्री ने, जो राजवैद्य का साला था, इसका समर्थन किया।

राजा ने आवश्यक आदेश जारी किया और सिपाहियों ने ब्लादिमीर से पूछे बिना ही वृक्ष को उखाड़ लिया और उसे शाही बाग में लाकर रोप दिया। लेकिन यह जान कर सब को निराशा हुई

परिणाम होगा, यद्यपि हम बता नहीं सकते कि वह क्या होगा।'' उसने टेर लगाई।

राजा के आदमी उसे दरबार में ले गये। राजा ने पूछा कि क्या उससे उसका जुकाम ठीक हो जायेगा। ''शायद ठीक हो जाये, लेकिन कुछ और भी अधिक होगा।'' ब्लादिमीर ने कहा।

राजा और उसके दरबारियों ने स्वाद के साथ सेब खाये। और देखो, क्या हो गया? राजा की नाक बड़ी होने लगी और बगुले की चोंच इतनी हो गई।

''यह क्या हो गया?'' राजा डर से चीख पड़ा।

''महाराज, पहले यह बताइये कि आप का जुकाम ठीक हुआ कि नहीं?'' ब्लादिमीर ने पूछा।

''हमारी नाक इतनी बड़ी हो गई है कि जुकाम का पता करना मुश्किल है?'', राजा ने कहा।

''यह क्या हो गया? यह क्या हो गया?'' दर्जनों आवाजें आईं।

यह देखने लायक दृश्य था। सभी दरबारियों की नाकें जैसी लम्बी हो गईं।

''महाराज, आप और आप के काबिल दरबारी विशेष प्रकार की नाकों के कारण बिलकुल विशिष्ट दिखाई पड़ रहे हैं!'' ब्लादिमीर ने टिप्पणी की।

''लेकिन हम लोग इतना विशिष्ट दिखाई पड़ना नहीं चाहते। हमें वे अच्छी छोटी नाकें कैसे वापस आयेंगी?'' राजा ने पूछा।

''शायद उस वृक्ष के सेब खाने से जो आपने मेरे बाग से चुरा लिया। और उसमें फल तभी लगेंगे जब उसे पूर्व स्थान पर फिर से रोपा जायेगा।'' ब्लादिमीर ने सोच-विचार कर कहा। ''तब तक, महाशय, आप अपनी इन विशिष्ट नाकों को जहाँ-जहाँ जायें, ढोते चलिये।''

राजा ने उस वृक्ष के ब्लादिमीर के बाग में फिर से रोप देने का प्रबन्ध कर दिया। फल आने में एक सप्ताह लग गया। तब तक न तो राजा और न उसके दरबारी महल से बाहर निकले। कल्पना करो उन्हें कितनी राहत मिली होगी जब ब्लादिमीर उस चमत्कारी वृक्ष के सेबों की टोकरी के साथ वहाँ आया और राजा और उसके दरबारियों ने उन्हें खाया तथा जब उनकी नाकें पूर्ववत सामान्य हो गईं।

राजवैद्य और मंत्री की सलाह की परवाह किये बिना राजा ने ब्लादिमीर को अपना दरबारी बना दिया। लेकिन ब्लादिमीर ने वेतन लेना स्वीकार नहीं किया। वह सिर्फ अपने चमत्कारी सेबों से जरूरतमन्द लोगों की सेवा में ही सन्तुष्ट और सुखी था। वह बहुत सालों तक जीवित रहा। उसकी मृत्यु के बाद वृक्ष ने फल देना बन्द कर दिया।

-विश्ववसु

समाचार झलक

अविराम नृत्य

जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम, नई दिल्ली में चालीस युवक और युवतियों ने नया विश्व कीर्तिमान स्थापित करने के लिए ५५ घण्टों तक नृत्य किया। उन्होंने क्लिवलैण्ड, अमेरिका में स्थापित ५२ घण्टे ३ मिनट के अविराम नृत्य के पूर्व कीर्तिमान को ध्वस्त कर दिया। वास्तव में भारत ने ऐसा कीर्तिमान दो बार स्थापित किया। सन् १९९९ में, हरयाणा के गुड़गाँव में एम.टी.बी.चैनल के लिए एक सामूहिक नृत्य ५० घण्टों तक चलता रहा।

तोते ने हत्या का रहस्य खोला

एक दम ऐसा तो नहीं, लेकिन हैदराबाद के तुकाराम गेट का यह तोता अपराधी के अपने अपराध को कबूल कराने में यंत्र बना। मलेश अपनी जीविका के लिए घरों की रंगाई-पुताई का काम करता रहा है। एक दिन अगस्त में यह २७ वर्षीय रंगसाज अपना भाग्य जानने के लिए मार्ग के किनारे बैठनेवाले एक तोता-ज्योतिषी के पास गया। उसने ज्योतिषी से यह सवाल पूछा। ज्योतिषी ने तोते से प्रश्न दुहरा कर उसे पिंजड़े से बाहर आने दिया। तोते ने कार्ड के ढेर में से चुन कर एक कार्ड निकाला। मलेश ने कार्ड लेकर उस पर लिखे सन्देश को पढ़ा: ''अपने अपराध को कबूल कर लो, अन्यथा अन्त में तुम्हारी दुर्गति होगी।'' मलेश स्तम्भित रह गया और जब उसे याद आया कि तीन वर्ष पूर्व उसने एक हत्या की थी, तब वह कुछ क्षणों के लिए पश्चाताप में डूब गया। उसने फिर दुबारा नहीं सोचा और एक निकटतम थाने में जाकर अपने को पुलिस को सुपुर्द कर दिया।

Save
Energy
FOR ENERGETIC
FUTURE
पी. सी. आर. ए.
PETROLEUM CONSERVATION RESEARCH ASSOCIATION
www.pcra.org e-mail : pcra@pcra.org

Let The Message Reach New Heights
CONSERVE FUEL
FOR CLEAN AIR
KHEL KHEL
PETROLEUM CONSERVATION
RESEARCH ASSOCIATION
New Delhi
Visit us at : www.pcra.org
WHERE CONSERVATION FAILS, POLLUTION STARTS
OIL CONSERVATION FOR A CLEAN ENVIRONMENT

ऊर्जा हमारे ब्रह्माण्ड के सर्वाधिक आधारभूत भागों में से एक है। यह हमारे दैनिक जीवन का भी एक महत्वपूर्ण अंग है।

हम ऊर्जा का प्रयोग कार्य करने के लिए करते हैं। ऊर्जा हमारे घरों और नगरों को प्रकाशित करती है। यह हमारे वाहनों, रेलगाड़ियों, वायुयानों तथा रॉकेटों को शक्ति प्रदान करती है। सौर ऊर्जा दिन में हमें प्रकाश देती है। यह हमारे कपड़ों को, जब ये अलगनी पर टंगे रहते हैं, सुखाती है। यह पौधों को बढ़ने में मदद करती है। जब पशु पौधों को खाते हैं तब पौधों में एकत्र ऊर्जा उन्हें मिलती है। जब परभक्षी पशु अपना शिकार खाते हैं तब उन्हें अपने शिकार से ऊर्जा मिलती है।

हम जो कुछ करते हैं वह किसी न किसी तरह ऊर्जा से सम्बन्धित रहता है।

ऊर्जा को "कार्य करने की क्षमता" के रूप में परिभाषित कर सकते हैं।

जब हम खाते हैं, तब हमारा शरीर भोजन में एकत्र ऊर्जा को कार्य करने की ऊर्जा में बदल देता है। जब हम दौड़ते या चलते हैं, हम अपने शरीर में भोजन की ऊर्जा को "जलाते" हैं। जब हम सोचते हैं, पढ़ते या लिखते हैं, तब भी हम काम करते होते हैं। कई बार वास्तव में ही कार्य कठिन हो जाता है।

कार, वायुयान, बिजली के बल्ब, बोट और यंत्र भी ऊर्जा को कार्य में रूपान्तरित करते हैं। विविध प्रकार के कार्यों में से ये मात्र कुछेक हैं। लेकिन ऊर्जा आती कहाँ से है? ऊर्जा के अनेक स्रोत हैं। ये हैं:

- पौधों से पाई जानेवाली बयोमास ऊर्जा
- भूउष्मीय ऊर्जा
- जीवाश्म ईन्धन : कोयला, तेल, प्राकृतिक गैस
- जलविद्युत और समुद्र ऊर्जा
- आण्विक ऊर्जा
- सौर ऊर्जा
- वायु ऊर्जा

इस पुस्तिका में, इन स्रोतों पर विचार करेंगे, और प्रदूषण तथा इसके कारणों, जल के महत्व, वन्य जीवन के संरक्षण, तथा अपने इस्तेमाल की ऊर्जा के संरक्षण पर भी एक नज़र डालेंगे।

बयोमास ऊर्जा

सामान्य रूप से कूड़ा-कचरा समझा जाने-वाला पदार्थ बयोमास है। इसका कुछ भाग मात्र वह पदार्थ है जो इधर उधर पड़ा रहता है। जैसे-सूखे हुए पेड़, शाखाएँ, यार्ड की कतरनें, बची-खुची फसलें, लकड़ी की चैलियाँ और पेड़ के छाल तथा आरा घर का बुरादा। फेंके हुए टायर और पशु धन की खाद को भी इसमें सम्मिलित किया जा सकता है।

ईन्धन तथा अन्य उपयोगों के लिए बयोमास की रीसाइकिलिंग करने से कूड़ा-कचरों के लिए लैंडफिल्स की ज़रूरत कम हो जाती है। पशु चारा के ढेरों के लिए कुछ ऐसा ही किया जा सकता है। ऐसे स्थानों में जहाँ अनेक जानवर पाले जाते हैं, मवेशी, सूअर, तथा मुर्गियाँ भी खाद उत्पन्न करती हैं। खाद, सड़ जाने पर कूड़ा-कचरा की तरह मेथेन गैस छोड़ती है। इस गैस को फार्म चलाने के लिए फार्म पर ही जला कर ऊर्जा में बदला जा सकता है। बयोमास के उपयोग करने से ग्लोबल वार्मिंग में बढ़ोतरी नहीं होती। पौधे जब बढ़ते हैं तब वे कार्बन डायोक्साइड (CO_2) का उपयोग करते हैं और प्रतिधारण भी करते हैं। पौधे के उपादान के जल जाने से यह मुक्त हो जाता है।

कार्बन डायोक्साइड गैस ज्यादा उत्पन्न होने पर "ग्रीन हाउस प्रभाव" तथा ग्लोबल वार्मिंग का कारण बन सकती है। इसलिए बयोमास का प्रयोग पर्यावरण के अ नुकूल है, क्योंकि बयोमास को नष्ट कर रीसाइकिलिंग की जाती है और दुबारा प्रयोग में लाया जाता है।

सौर ऊर्जा

जब से पृथ्वी पर मानव का अस्तित्व है तब से हम लोगों ने बराबर सौर ऊर्जा का उपयोग किया है। आज हम जानते हैं कि सूर्य हमारा सबसे निकट तम तारा है। इसके बिना पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व असम्भव है।

हम प्रत्येक दिन सौर ऊर्जा का प्रयोग अनेक भिन्न-भिन्न तरीकों से करते हैं। जब हम धुले कपड़े सुखाने के लिए दिन में बाहर फैलाते हैं, तब हम सूर्य की गरमी का, काम करने के लिए– अपने वस्त्र सुखाने के लिए प्रयोग करते हैं। पौधे सूर्य की गरमी का प्रयोग भोजन बनाने के लिए करते हैं। पशु पौधों का भोजन करते हैं। अप्रत्यक्ष रूप से सूर्य अथवा अन्य सितारे हमारी समस्त ऊर्जा के कारणभूत हैं।

हो सकता है, अन्ततः विश्व के सागर हमारे घरों और कारखानों में बिजली के लिए ऊर्जा प्रदान करें। अभी समुद्री ऊर्जा उत्पादन के बहुत कम संयन्त्र हैं और उनमें अधिकांश बहुत छोटे हैं। लेकिन हम समुद्र से ऊर्जा कैसे प्राप्त कर सकते हैं? समुद्र से ऊर्जा प्राप्त करने के तीन मार्ग हैं :

- हम समुद्र की लहरों का इस्तेमाल कर सकते हैं।
- समुद्र की ज्वार-भाटाओं का प्रयोग कर सकते हैं अथवा
- जल में ताप के अन्तर का प्रयोग कर सकते हैं।

वायु

कार्य करने के लिए वायु का उपयोग किया जा सकता है। वायु की गतिज ऊर्जा को यांत्रिक ऊर्जा में बदला जा सकता है। जब नाव पाल को उठाती है तब पानी के अन्दर इसे धकेलने के लिए वायु ऊर्जा का प्रयोग करती है। यह कार्य का एक रूप है। किसान लोग पवन-चक्की के प्रयोग द्वारा, जैसा कि दायीं ओर चित्रित किया गया है, कुएँ से पानी निकालने के लिए वर्षों से वायु ऊर्जा का प्रयोग करते आ रहे हैं।

इसे स्वयं करो गतिविधि

जब तुम घर पर रहते हो अथवा जब स्कूल, किसी अन्य कार्य, जिम, मित्र के घर या सिनेमा जाने के लिए घर से बाहर निकलते हो, तब अपने कर्त्तव्य के रूप में ऊर्जा को संरक्षित रखने की याद क्या तुम्हें रहती है?

निम्नलिखित प्रश्नों के यथा सम्भव ईमानदारी से सरल **हाँ** या **नहीं** में उत्तर दो

क्या मैं...

- **आवश्यकता से अधिक लाइट्स ऑन रखता हूँ?**
- **थोड़ी देर के लिए कमरा छोड़ने पर भी लाइट जलता छोड़ देता हूँ?**
- **पूरे कमरे में रोशनी जला कर रखता हूँ जब कि हमें थोड़ी सी जगह में ही रोशनी की ज़रूरत रहती है?**
- **हाथ धोते समय या दाँतों पर ब्रश करते समय नल का पानी गिरने देता हूँ?**
- **ज़रूरत से अधिक बार स्नान करता हूँ?**
- **शवर के नीचे सिर्फ आनन्द के लिए अधिक देर तक रहता हूँ?**
- **ज़रूरत नहीं रहने पर भी गर्म पानी का प्रयोग करता हूँ?**
- **ताप-अन्तः सरण रोकने का शेड बन्द करना भूल जाता हूँ?**
- **थरमोस्टेट की मान्य सेटिंग से ऊपर या नीचे सेट करता हूँ?**
- **कम्प्यूटर को सारा दिन ऑन रखता हूँ - तब भी जब इसका इस्तेमाल नहीं होता?**
- **टी.वी. अथवा रेडियो को तब भी ऑन रखता हूँ जब मैं इसके कार्यक्रम को नहीं देखता या सुनता?**
- **हर तरह से ऊर्जा का अपव्ययी हूँ क्योंकि, "आखिर मैं इसके लिए पैसे खर्च नहीं कर रहा हूँ।"**
- **मैं भूल जाता हूँ कि ऊर्जा का अपव्यय मुझे, मेरे परिवार और पृथ्वी को प्रभावित करता है।**

अंक निर्धारण

प्रत्येक 'नहीं' उत्तर के लिए एक अंक दो। यदि तुम्हारा प्राप्तांकः

१०-१३ : तुम्हें धन्यवाद! तुम ऊर्जा - सजग हो चाहे कहीं भी जाओ।

७-१० : सतर्क रहो! ऊर्जा का अपव्यय न करो सिर्फ इसके लिए कि तुम घर पर नहीं हो।

२-६ : व्यवस्थित बनो! तुम धन और ऊर्जा का अपव्यय कर रहे हो जो प्रत्येक के द्वारा अधिक उपयोगी हो सकता था। सिर्फ अपने लिए ऊर्जा की बचत न करो– ग्रह के लिए बचत करो।

प्रदूषण के कारण

प्रदूषण विश्व भर में एक बड़ी समस्या है। इसने लाखों-करोड़ों के जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है और यह स्वास्थ्य सम्बन्धी अव्यवस्थाओं तथा मौतों का भी कारण बना है।

प्रदूषण एक रसायन या किसी अन्य माध्यम के द्वारा एक सम्पर्क - प्रभाव है जो पर्यावरण के एक अंश को वांछित उपयोग के लिए अनुपयुक्त बना देता है। उल्लेखनीय है कि पर्यावरण में वह स्थान भी शामिल है जहाँ तुम रहते हो। प्रदूषण के कुछ मुख्य कारण हैं :

१. वन-कटाई - कारखानों और उद्योगों के लिए और विश्व के अनेक भागों में शहरीकरण के कारण व्यापक स्तर पर वृक्षों को काटा जाता है और नये वृक्षों को रोपने के पर्याप्त प्रयास नहीं किये जाते। इससे वन नष्ट हो जाते हैं और प्रदूषण का स्तर बढ़ जाता है।

२. प्रदूषित नदियाँ - औद्योगिक संयंत्रों तथा कारखानों के गन्दे जल और बहिःस्राव के निकटस्थ नदियों में मिल जाने के कारण नदियाँ प्रदूषित हो जाती हैं। विकासशील/अविकसित देशों के लोग भी अपने वस्त्र और बर्तनों को धोकर और स्नान तथा अन्य मानवीय क्रिया-कलापों द्वारा नदियों को प्रदूषित कर देते हैं।

३. ध्वनि प्रदूषण - कारखानों के यंत्र दिन भर शोर करते हैं और इससे आसपास के वातावरण की शान्ति भंग हो जाती है, क्योंकि समुचित ढक्कन के बिना मशीनों के प्रयोग से ध्वनि-प्रदूषण फैलता है। इससे आस-पास के क्षेत्रों में रहनेवाले लोग भारी मानसिक तनाव के शिकार हो जाते हैं।

४. वायु प्रदूषण - प्रत्येक वर्ष औद्योगिक दृष्टि से विकसित देश करोड़ों टन प्रदूषक पैदा करते हैं। बहुत से प्रदूषक सीधे अभिज्ञेय स्रोतों से आते हैं, उदाहरण के लिए सल्फर डायोक्साइड, कोयला या पेट्रोल जलानेवाले बिजली संयंत्रों से निकलता है। सड़कों पर मोटर वाहनों की बढ़ती संख्या ने भी, इनसे निकलनेवाली हानिहारक गैसों, जैसे, कार्बन मोनाक्साइड के कारण वायु प्रदूषण में वृद्धि की है।

५. भूमि प्रदूषण - मुख्य रूप से मानव-आवासीय क्षेत्रों में कूड़ा-कचरा डालने से भूमि प्रदूषण हो जाता है। उत्पादन जगह के आसपास जो खेत है, वह वहाँ से निकली गन्दे पानी से प्रदूषित हो जाती है। इससे वे खेती के लायक नहीं रहते।

शहरी वायु को दूषित करनेवाले प्रदूषकों में सूक्ष्म निलम्बित विविक्त पदार्थ, सल्फर डायोक्साइड (SO_2) तथा ओज़ोन सबसे व्यापक और विकट खतरा पैदा कर सकते हैं; जो भी हो, वायु जनित प्रदूषण अनेक नगरों में भी एक गंभीर समस्या बन गया है। वायु प्रदूषण के प्रति चिरकालिक असुरक्षा के प्रभावों के हाल के अध्ययन से पता चला है कि केवल विविक्त पदार्थ ऐसा प्रदूषक है जो अस्वस्थ वायु में आयु कम करनेवाले प्रभाव के लिए जिम्मेदार है, यद्यपि अन्य प्रदूषकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। ये प्रदूषक श्वास सम्बन्धी तथा अन्य रोगों के कारण बन जाते हैं।

रक्तचाप तथा मानसिक तनाव में वृद्धि करने के अतिरिक्त, ध्वनि प्रदूषण से श्रवण पर भी हानिकारक प्रभाव पड़ सकता है। ध्वनि प्रभावन से दो प्रकार की श्रवण क्षति हो सकती है। श्रवण-सदमा श्रवण-क्षति है जो एकमात्र धमाके की आवाज़, जैसे, विस्फोट से होती है। शोर से होनेवाली श्रवण क्षति सामान्य शोर के प्रति निरन्तर अरक्षित रहने से बढ़ जाती है। यह क्षति ध्वनि प्रदूषण के कारण श्रवण-क्षति का अधिक सामान्य रूप है।

जल प्रदूषण जल को संक्रमित कर पीने तथा दूसरे उपयोगों के लिए अयोग्य बना देता है। यह अधिकांश जल जनित रोगों का भी मुख्य कारण है।

प्रदूषण नियन्त्रण के साधन – विश्व भर में प्रदूषण के प्रतिकूल प्रभावों के प्रति आम लोगों में जागरुकता से प्रदूषण की प्रबलता को कम किया जा सकता है। यह जागरुकता समाचार पत्रों, दूरदर्शनों, रेडियो, फ्लायर्स तथा सेमिनार के माध्यम से लाई जा सकती है।

'प्रदूषण की समस्यों' के प्रश्न पर हमें अभी तुरन्त विचार करना चाहिये, नहीं तो भावी पीढ़ियों पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

जल का महत्व

हमारी पृथ्वी अन्य ज्ञात खपिण्डों में असाधारण प्रतीत होती है। यहाँ पर जल है जो यहाँ की धरातल के तीन-चौथाई भाग को ढकता है तथा प्राणिजगत का ६०-७० प्रतिशत इसमें निवास करता है। जल पुनरुज्जीवित होता है और बाष्पीकरण के द्वारा पुनर्वितरित होता है जिससे यह प्रक्रिया अनन्त रूप से नवीनीकरणीय प्रतीत होती है। इसलिए क्यों चिन्ता करें?

प्रति व्यक्ति उपलब्ध पेय जल की मात्रा नाटकीय रूप से घट रही है। वास्तव में स्वच्छ जल की उपलब्धता, जनसंख्या में तेजी से वृद्धि तथा मौसम के ढाँचे में भारी परिवर्तन के कारण अगले पचास बर्षों में ३३ प्रतिशत कम हो जायेगी।

हम जल की बचत कैसे कर सकते हैं?
यदि तुम अभी से हर रोज छोटा-सा प्रयास करो, तब पूरे जीवन-काल में एक महत्वपूर्ण अन्तर उत्पन्न कर सकते हो।

जल-संरक्षण के कुछ सरल साधन

प्रति बूंद सहायक है

१. लो-फ्लो शवरहेड्स, टोंटी और शौचघर लगाओ जो अधिकतर नलसाजी की दुकानों पर उपलब्ध हैं।

२. दाँत साफ करते समय, दाढ़ी बनाते या हाथ धोते समय तथा थालियाँ या सब्जियाँ साफ करते समय नल खुला न रखो। सिंक में डाट लगा कर या टब में, प्रयोग में लाये जल को एकत्र कर पौधों के लिए इस्तेमाल करो।

३. कभी-कभी 'नेवी शवर' पर विचार करो। जलपोत पर जहाँ स्वच्छ जल की आपूर्ति कम रहती है, नाविक अपने शरीर को गीला कर नल बन्द कर देते हैं और साबुन लगाने के बाद फिर पानी चलाते हैं।

४. टपकनेवाली टोंटी तथा रिसनेवालेट्वाइलेट्स में वाशर तथा घिसे पार्ट्स को तुरन्त बदल दो। टोंटी के टपकने और शौच घर की अदृश्य रिसाई से हर रोज १५ लीटर तक पानी बर्बाद होता है। शौच घर की रिसाई की जाँच करने के लिए टैंक में १० बून्द खाने का रंग (फूड कलरिंग) डाल दो। पन्द्रह मिनट तक इन्तजार करो। यदि बाउल में रंग आता है तब समझना चाहिये कि पानी रिस रहा है।

वास्तव में, जल की सीमित उपलब्धता की तुलना में जल उपयोग की वर्तमान दर एक भयानक चित्र प्रस्तुत करता है, लेकिन तुम और तुम्हारे परिवार के लोग इस दिशा में कुछ कदम उठा सकते हैं। सरल, दैनिक संरक्षण के द्वारा हमलोग सुनिश्चित कर सकते हैं कि भावी पीढ़ियों के लिए पर्याप्त जल होगा।

क्षेत्र भ्रमण
नन्दीग्राम स्थित महात्मा प्राथमिक विद्यालय ने एक ऊर्जा संरक्षण क्लब का संगठन किया है। इसके चार सदस्य हैं। उनकी पर्यावरण अध्ययन टीचर मिस निर्मला कॉर्डिनेटर हैं। यह एक सक्रिय क्लब है।
महात्मा प्राथमिक विद्यालय
गुड मॉर्निंग मिस!
वे एक शनिवार को एक क्षेत्र भ्रमण पर जाने की योजना बनाते हैं। नाश्ते के बाद बच्चे और टीचर स्कूल में ७.३० बजे मिलते हैं।
गुड मॉर्निंग बच्चो!
टीचर अपनी कार लेकर आई है। वह बोनेट खोलती है और इंजिन के तेल और रेडियेटर के पानी की जाँच करती है। वह रेडियेटर को ऊपर तक पानी से भर देती है।
बच्चो, अपने बैग, लंच पैक्स और अन्य चीजें बूट में रख दो।
कार के चारों ओर जाकर चारों टायर की जाँच करती है। बूट खोल कर देखती है कि टूल-किट है या नहीं। स्पेयर टायर की जाँच उसे दबा कर करती है।
आठ बजे प्रातः। बच्चे और टीचर सीट-बेल्ट बाँध लेते हैं। टीचर इंजिन को बिना उठाये कार को स्टार्ट करती है, संकेतक प्रकाश की (बायां, दायां और पीछे का) तथा हार्न की जाँच करती है। तब वह धीरे-धीरे गति बढ़ाते हुए कार को आगे बढ़ाना आरम्भ करती है। अधिकतर वाहनों की अपेक्षा कार धीमी लगती है।
हम लोग इतने धीरे-धीरे क्यों जा रहे हैं मिस? मेरे पिता तेज कार चलाते हैं और हमलोगों को अच्छा लगता है।
जब तुम धीमी गति से कार चलाते हो तब कार को नियन्त्रण में रखना आसान होता है। और इससे काफी पेट्रोल की बचत भी होती है। मेरा अपना अनुभव बताता है कि ८० के स्थान पर ५० कि.मी. प्रति घण्टा चलाने से हमलोगों को ४० प्रतिशत अतिरिक्त मील संख्या मिलती है।
तो यह सुरक्षित ही नहीं, बल्कि पैसे की बचत भी करता है।

जब भी टीचर स्पीड ब्रेकर देखती है, अचानक ब्रेक लगाने के स्थान पर, वह पहले से गति को क्रमशः धीरे कर देती है, जिससे उसे ब्रेक पैडल को बहुत हल्के-से दबाने की जरूरत पड़ती है।

जब मेरी माँ कार चलाती है, वह ब्रेक का प्रयोग अचानक करती है। वह झटका हमलोगों को अच्छा लगता है।
जया, अचानक ब्रेक लगाने से ब्रेक और टायर दोनों में टूट-फूट अधिक होती है। ताप के रूप में काफी मात्रा में ऊर्जा भी नष्ट होती है।

क्या इसका अर्थ यह है कि हम यहाँ भी पैसे की बचत कर सकते हैं?

बिलकुल ठीक! ब्रेक और टायर अधिक दिनों तक चलेंगे यदि हम जोर से अचानक दबाने के स्थान पर ब्रेक पैडल को धीरे-धीरे दबायें।
जब वे आगे बढ़ते हैं, कार धीमी चाल से चलती रहती है। जब वे पिकनिक स्थल पर पहुँचते हैं, टीचर कार धीरे कर देती है, बहुत आहिस्ता गियर बदल कर नीचे लाती है और हल्का ब्रेक लगा कर कार को रोक देती है।

कार एक मोड़ पर आती है। मिस निर्मला कार को धीमी कर लेती है और गियर को बदल कर नीचे ले आती है।
मिस, मेरी माँ भी इसी तरह कार चलाती है। लेकिन जब हम टैक्सी या बस से जाते हैं, अक्सर मैंने देखा है कि वे तेज गति में मोड़ते हैं। क्या यह खतरनाक नहीं है मिस?
यह सिर्फ खतरनाक ही नहीं है, यह अनावश्यक ईंधन भी खर्च करता है। जब कार को धीमी या तेज करती हो तब गति के अनुसार गियर बदलना हमेशा सुरक्षित रहता है। ये सब नियम ''इंसट्रक्शंस मैन्यूअल' की पुस्तक में दिये रहते हैं जो कार खरीदते समय हमें मिलती है।
बच्चो, हम आ गये!

बहुत अच्छा लगा मिस! आपने बताया कि ठीक से कैसे गाड़ी चलायें और पैसे की बचत करें। हमलोग अपने माता-पिता को बतायेंगे जिससे वे भी आप की तरह गाड़ी चलायें। जब हम गाड़ी चलाने लायक बड़े हो जायेंगे, तब हम इन नियमों को याद रखेंगे। धन्यवाद, मिस!

बहुत अच्छा। मैं बहुत खुश हूँ कि तुम सब ने इस यात्रा में काफी चीजें सीख लीं। उम्मीद है, इस यात्रा में मजा आया होगा।

जी हाँ मिस, इसमें कोई सन्देह नहीं !
समाप्त

ऊर्जा

सम्बन्धी तुम्हारे बौद्धिक स्तर की जाँच के लिए यहाँ एक प्रश्नोत्तरी है

१. हमारे उपयोग की अधिकांश ऊर्जा मूलतः कहाँ से आती है?

अ) सूर्य, आ) वायु, इ) भूमि, ई) समुद्र

२. विद्युत ऊर्जा किससे उत्पन्न की जा सकती है?

अ) यांत्रिक ऊर्जा, आ) रसायनिक ऊर्जा,
इ) विकिरक ऊर्जा, ई) उपरिलिखित सबसे

३. कौन-सा जीवाश्म-ईंधन गैसोलिन उत्पन्न के लिए परिष्कृत किया जाता है?

अ) प्राकृतिक गैस, आ) कोयला,
इ) प्रेट्रोलियम, ई) प्रोपेन

४. आण्विक पावर प्लाण्ट में यूरेनियम परमाणु

अ) मिल कर ताप ऊर्जा देते हैं।
आ) अलग-अलग होकर ताप ऊर्जा देते हैं।
इ) जल कर ताप ऊर्जा देते हैं।
ई) अलग-अलग होकर विद्युदणु उत्पन्न करते हैं।

५. प्राकृतिक गैस किनके द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाई जाती है?

अ) पाइपलाइन्स, आ) ट्रक,
इ) नौका, ई) इन सब से

६. ग्लोबल वार्मिंग, वातावरण में गैस-स्तर की वृद्धि पर संकेन्द्रित करता है। किस गैस?

अ) ओज़ोन, आ) सल्फर डायोक्साइड,
इ) कार्बन डायोक्साइड, ई) नाइट्रस ऑक्साइड

७. सौर, बयोमास, जियोथर्मल, वायु तथा हाइड्रोपावर ऊर्जाएँ ऊर्जा के नवीनीकरण के योग्य स्रोत क्यों कहलाते हैं? क्योंकि

अ) वे स्वच्छ और उपयोग के लिए उपलब्ध हैं।
आ) वे सीधे ताप और विद्युत में बदले जा सकते हैं।
इ) वे प्रकृति के द्वारा कम समय में आपूरित हो सकते हैं।
ई) वे वायु प्रदूषण नहीं फैलाते।

८. विद्युत किनका संचलन है?

अ) परमाणु, आ) अणु,
इ) विद्युदणु, ई) न्यूट्रान

९. कोयला जलाने पर कितनी ऊर्जा बिजली के रूप में उपभोक्ता तक पहुँचती है?

अ) एक-तिहाई, आ) आधी,
इ) तीन-चौथाई, ई) नौ-दसवाँ

उत्तर

१. अ बयोमास, वायु, सौर ऊर्जा तथा जीवाश्म ईंधन में ऊर्जा मूलतः सूर्य से आती है।
२. ई विद्युत ऊर्जा सभी तीनों - यांत्रिक ऊर्जा, रसायनिक ऊर्जा तथा विकिरक ऊर्जा, से उत्पन्न की जा सकती है।
३. इ पेट्रोलियम
४. आ यूरेनियम परमाणु अलग-अलग होकर ताप ऊर्जा देते हैं।
५. अ पाइपलाइन्स द्वारा अधिकांश प्राकृतिक गैस पहुँचाई जाती है।
६. इ जीवाश्म ईंधन जला कर कार्बन डायोक्साइड पर ग्लोबल वार्मिंग संकेन्द्रित करता है।
७. इ नवीनीकरण के योग्य ईंधन प्रकृति के द्वारा कम समय में आपूरित किये जा सकते हैं।
८. इ विद्युदणु के संचलन से विद्युत मिलता है।
९. अ ३३ प्रतिशत

यहाँ दिये गये संकेतों में से कुछेक का पालन कर आप ईंधन की बचत के साथ वायु प्रदूषण भी कम कर सकते हैं। आप किस संकेत का पालन करेंगे, यह आप की अपनी विशेष परिस्थिति पर निर्भर करेगा, लेकिन उनमें से किसी का भी पालन करने से गैसोलिन का खर्च कम हो जायेगा।

वाहन -चालन

- तेज एक्सेलेरेशन से बचें; अधिक हॉर्स पावर (बहुत गैस खाता है) कारों में तेज गति के लिए बनाया जाता है; गति बनाये रखने के लिए अपेक्षाकृत बहुत कम पावर (इसलिए ईंधन) की आवश्यकता होती है।
- जोर से ब्रेक न दबायें और गाड़ी को अचानक न रोकें। सावधान रहें और ट्रैफिक लाइट्स, स्टॉप साइन्स तथा मर्जेज पर ध्यान रखें। मोड़ने का संकेत प्रयोग में लायें। सभी गाड़ियाँ अधिक आराम से आगे बढ़ेंगी, जिससे हरेक का ईंधन बचेगा।
- गाड़ी स्टार्ट करते समय इंजिन पर जोर डाले बिना जल्दी से जल्दी अगला गियर बदल दें।
- गाड़ी धीरे चलायें। एक अध्ययन के अनुसार सब वाहन को जाँच करने पर, ५५ से ७५ मील प्रति घंटे गति बढ़ाने पर ईंधन में कम से कम २० प्रतिशत का नुकसान होता है।
- सिर्फ गियर बदलने के लिए क्लच का प्रयोग करें। क्लच दबाने से ऊर्जा की हानि होती है और क्लच लाइनिंग को नुकसान पहुँचता है।
- राजपथ- यात्राओं पर क्रूज कंट्रोल का प्रयोग करें।
- कहीं एक मिनट से अधिक रुकना हो तो इंजिन को बन्द कर दें।

ईंधन और रखरखाव

● हवा और ईंधन फिल्टर्स को नियमित रूप से बदलते रहें जैसा कि वाहन के रखरखाव मैन्यूअल में निर्देश दिया गया है। यदि धूल से भरे स्थानों में गाड़ी चलती हो तो वायु-फिल्टर को जल्दी-जल्दी बदलें। ● इंजिन को ठीक से ट्यून में रखें। ● 'अग्रेसिव' ट्रेड टायर्स को न खरीदें यदि ज़रूरत न हो। ● टायर्स को हमेशा हवा भर कर रखें और पहियों को एलाइण्ड रखें। ● आपातकालीन ईंधन आपूर्ति या सीलबन्द एयर टाइट कनटेनर में गैसोलीन-फियूल्ड पावर इक्विपमेण्ट के लिए ईंधन का प्रबन्ध रखें और यह दूसरे मौसम में भी प्रयोग करने योग्य होगा।

ऊर्जा संरक्षण के कारण तथा संकेत

ऊर्जा संरक्षित रखने के बहुत कारण हैं। उनमें से कुछ हैं :

१. बिजली, गैसोलिन तथा ऊर्जा के अन्य साधन के व्यय को कम करना।

२. जीवाश्म ईंधन (तेल, गैस, कोयला) को निःशेषण से बचाना।

३. ऊर्जा के इस्तेमाल के कुप्रभावों जैसे प्रदूषण, पशु आवास स्थलों की क्षति, प्राकृतिक दृश्यों के विनाश, को कम करना।

४. यदि आप अपने उपयोग की ऊर्जा का मूल्य नहीं दे रहे हैं, फिर भी ऊर्जा को अपव्यय से बचाना बहुत महत्वपूर्ण है।

बहुत से लोग जो घर पर ऊर्जा के प्रति सजग हैं वे अन्य स्थानों पर ऊर्जा की बचत करने के अभ्यासों को भूल जाते हैं। क्योंकि सभी २४ घण्टे ऊर्जा संरक्षण का पालन करना महत्वपूर्ण है, इसलिए कार्यस्थल पर ऊर्जा संरक्षण के लिए यहाँ कुछ संकेत दिये जा रहे हैं।

प्रकाश -

ऊर्जा की बचत का आसान मार्ग है -अनावश्यक प्रकाश को बन्द कर दो। तुम यह कर सकते हो :

- इस्तेमाल में नहीं आने वाले लाइट का स्विच ऑफ कर दो।
- कम वाटेज का बल्ब प्रयोग में लाओ।
- जब भी सम्भव हो, प्राकृतिक रोशनी-धूप का प्रयोग करो।
- बल्ब तथा फिक्सचर साफ-सुथरा रखो।
- काम के स्थान पर प्रकाश को केन्द्रित रखो।
- जहाँ भी संभव हो, प्रतिदीप्त बल्ब तथा सी.एफ.एल्स. का प्रयोग करो।

क्या तुम जानते थे?

एक वर्ष में सूर्य, मनुष्य के बिजली के उपभोग से १०,००० गुना अधिक ऊर्जा प्रदान करती है।

तुम उन्हें परामर्श दे सकते हो जो तुम्हारे भवन में प्रकाश का प्रबन्ध या रखरखाव सम्बन्धी निर्णय लेते हैं। प्रतिदीप्त (फ्लारेसेंट) बल्ब का प्रयोग करो। रात में प्रकाश की ज़रूरत से बचो अथवा छुट्टियों में जब कोई काम नहीं हो रहा हो, तब सभी बल्ब बन्द रखो।

वन्य जीवन की रक्षा करो

तुम कुछ जातियों के विलुप्त होने के झुकाव तथा उनके प्राकृतिक आवासों के विनाश को रोकने के लिए कुछ कर सकते हो। तुम अपनी ओर से थोड़ी-सी शिक्षा और दृढ़ निश्चय के साथ काफी मात्रा में योगदान कर सकते हो। निम्नलिखित को पढ़ो कि कैसे तुम वन्य जीवन को हानि पहुँचाने से बचा सकते हो।

उन्हें घर दो

पौधे और पशु हमेशा साथ-साथ रहते रहे। पशुओं को अरण्यों और जंगलों में शरण मिली। पक्षी वृक्षों में घोंसले बनाते हैं। तितलियाँ अपना भोजन जंगली फूलों से लाती हैं। झाड़ियों और दलदलों में कीड़ों की लाखों किस्में निवास करती हैं। जब से मनुष्य ने अरण्यों व जंगलों पर आक्रमण कर पशु-पक्षियों को मारना और वृक्षों को काटना आरम्भ किया, तब से प्राकृतिक संतुलन को खतरा पैदा हो गया और धीरे-धीरे जातियाँ एक-एक करके विलुप्त हो गईं।

इस स्थिति में परिवर्तन लाने में हमलोग मदद कर सकते हैं। कैसे?

- जीवजन्तुओं पर आक्रमण न करें और उन्हें जीवित रहने दें।
- उन्हें राष्ट्रीय पार्कों में, अभयारण्यों में तथा प्राकृतिक आरक्षणों में घर दें।
- मानव आवास स्थलों में चिड़िया घर या बैट हाउस बनायें।

अपना यार्ड सुरक्षित रखें

यदि आप अपने अहाते की बागवानी के लिए सफाई करना चाहते हैं या किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग करना चाहते हैं तो झाड़ियों तथा पुराने वृक्षों के चकतों को छोड़ दें जिससे उनमें रहनेवाले जीव जन्तुओं की शान्ति भंग न हो।

जब वायु या पक्षी आप के बाग से विदेशी बीज ले जाते हैं, ये आक्रमणकारी पौधे देशी घासों, फूलों, झाड़ियों तथा वृक्षों को बाहर निकाल दे सकते हैं। जब कोई वृक्ष लुप्त हो जाता है, इस पर निर्भर करने वाले कीड़े भी लुप्त हो जायेंगे। उन कीड़ों पर भोजन के लिए तथा वृक्षों पर घोंसले बनाने के लिए निर्भर करने वाले पक्षी अन्य स्थान पर चले जायेंगे तथा इन पक्षियों को खाने वाले स्तनपायी भी छोड़ जायेंगे।

जो भी हो, देशी पौधे देशी पक्षियों, तितलियों तथा कीड़ों और सम्भवतः संकटापन्न जातियों को आकर्षित करेंगे। यदि आप विदेशी जातियों को रोकने में अपनी भूमिका का पालन करें तो आप वन्य जीवन की रक्षा करने में मदद करेंगे। अपने बाग में कम्पोस्ट बनाने से आप का कूड़ा-कचरा कम होगा, आप के पौधों को लाभ मिलेगा और रसायनिक खाद की आवश्यकता नहीं रहेगी, जो आप के स्थानीय वन्य जीवन को केवल हानि ही पहुँचायेगी।
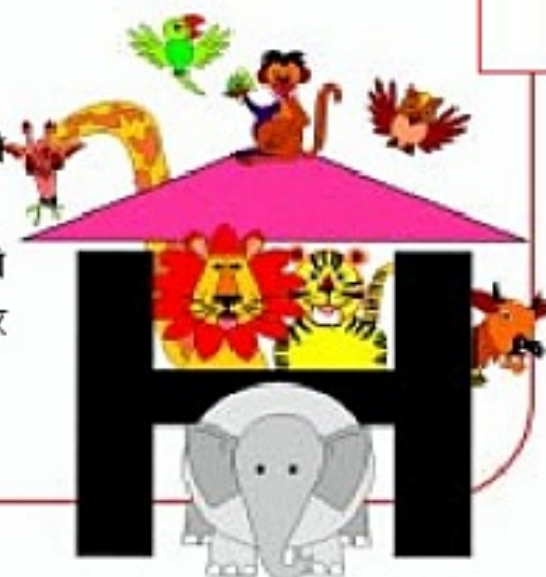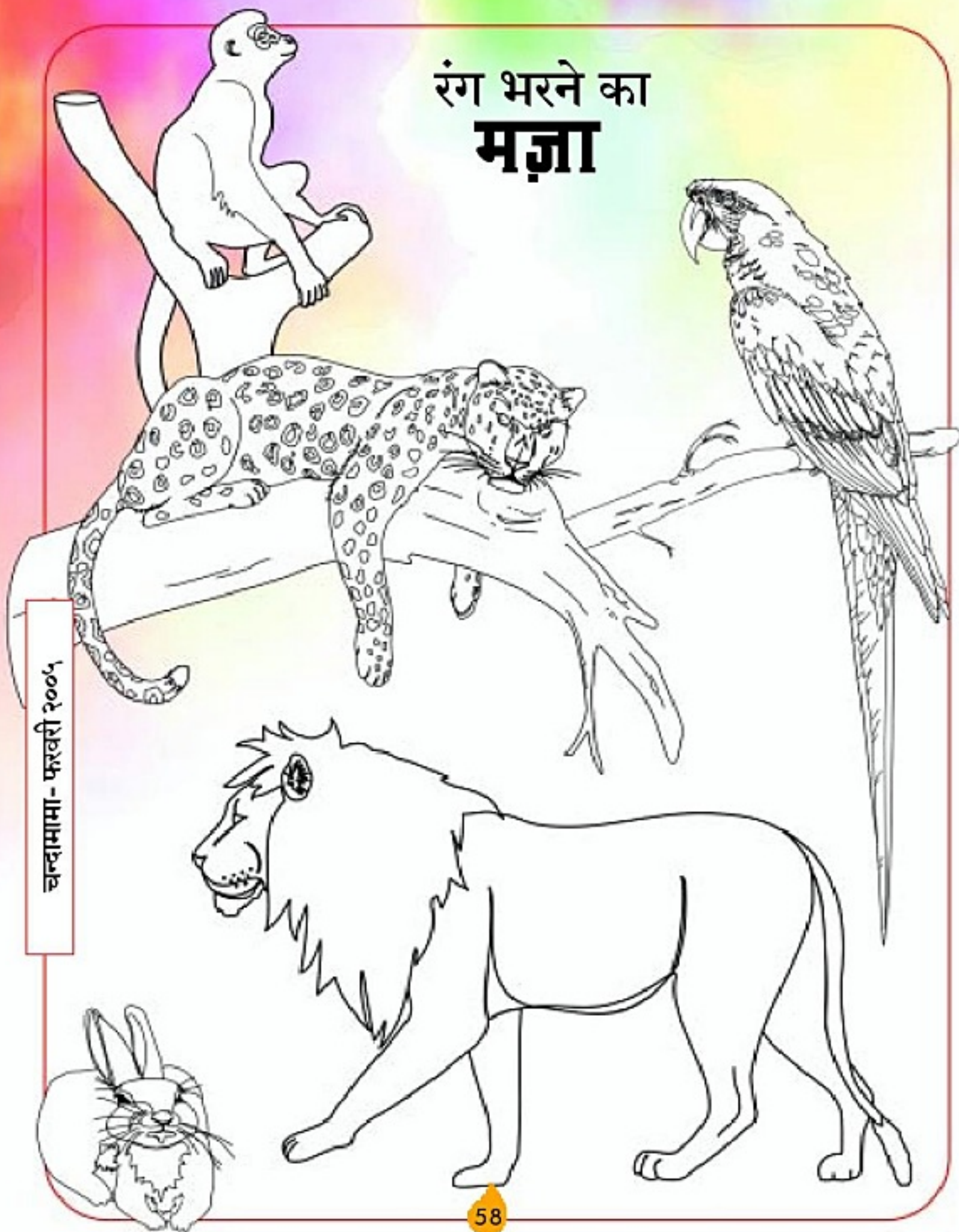
रंग भरने का
मज़ा

रंग भरने का मज़ा
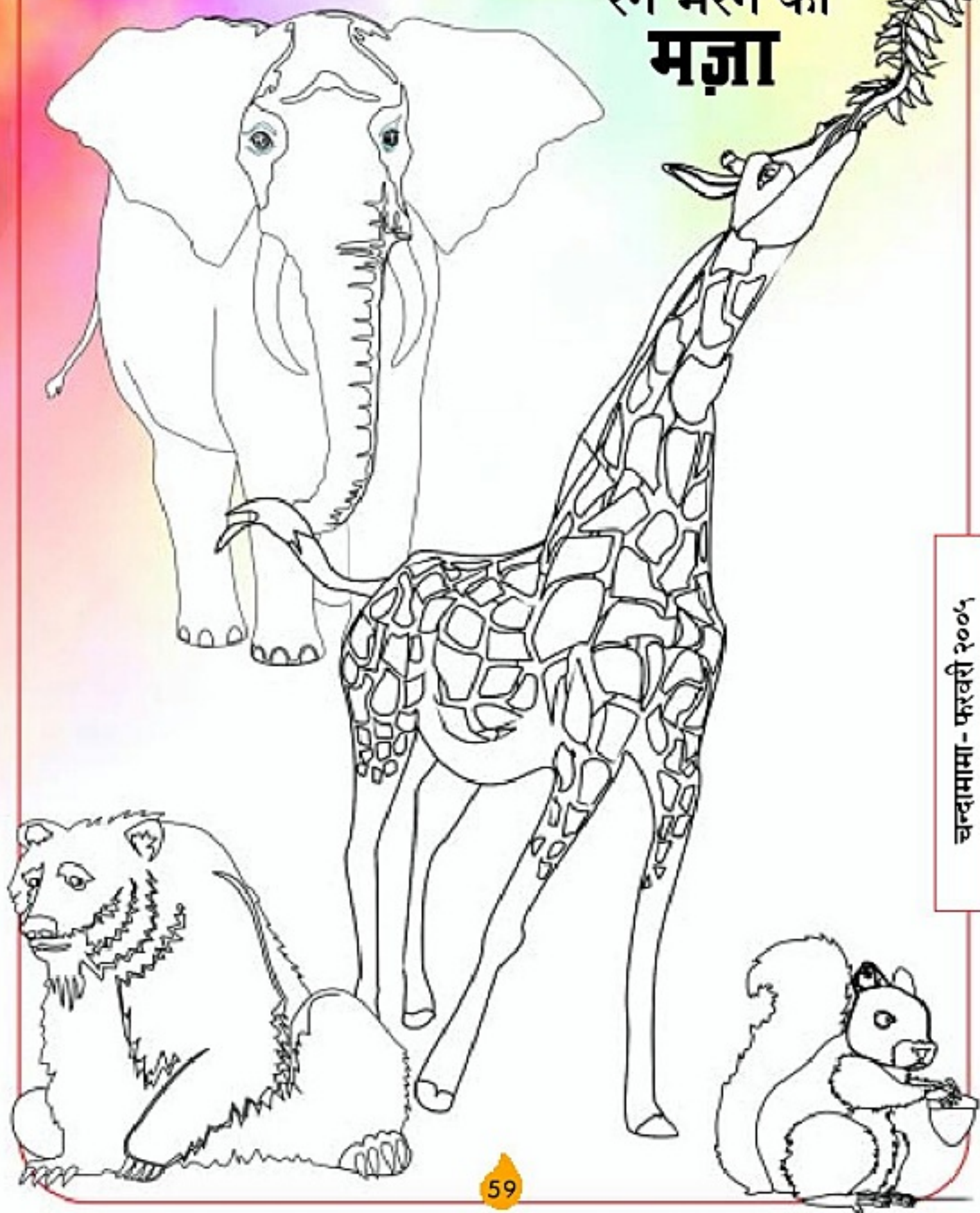
बिन्दुओं को मिलाओ

१ से ३३ तक के बिन्दुओं को मिलाओ और छिपे हुए चित्र का पता लगाओ।

खोज करो

ये दोनों चित्र एक जैसे लग सकते हैं किन्तु कुछ फर्क हैं। शुभ खोज!

Listen, Enjoy & Learn

about the benefits of

Oil Conservation & Environment Protection

"Boond Boond Ki Baat"

The programme is telecast from 47 other stations in Hindi and regional languages

PETROLEUM CONSERVATION RESEARCH ASSOCIATION
E-mail : pcra@pcra.org
Visit us at : www.pcra.org

Learn conservation with fun

Every Sunday on DD-I at 11.00 AM

(Repeat telecast on Wednesday at 9.00 AM)

Watch the programme & know all about :

- Oil Conservation
- Wildlife Preservation
- Significance of Water
- Environment Protection etc.

PETROLEUM CONSERVATION RESEARCH ASSOCIATION
E-mail : pcra@pcra.org
Visit us at : www.pcra.org

Petroleum Conservation Research Association

"Sanrakshan Bhavan",10, Bhikaiji Cama Place, New Delhi-110 066
Phone : 26198856 Fax : 26109668

Northern Region :

Chief Regional Co-ordinator, "Sanrakshan Bhavan", 10, Bhikaiji Cama Place,
New Delhi-100 066. Phone : 26198753, 26182161 Fax : 26109668

Eastern Region :

Chief Regional Co-ordinator, Everest House (2nd Floor), 46-C, Chowringhee Road,
Kolkata-700 071. Phone : 22887250 / 22881913 Fax : 22880763

Western Region :

Chief Regional Co-ordinator, C-5, Keshva Building (Ground Floor),Bandra-Kurla Complex,
Bandra East, Mumbai-400 051. Phone : 26592587 / 26592181 Fax : 26590034

Southern Region :

Chief Regional Co-ordinator, TMB Mansion (1st Floor),739, Anna Salai,
Chennai-600 002. Phone : 28521662 / 28520417 Fax : 28521662

दर्पण में युद्ध

शंकर सोलह साल का नादान किशोर था। उसके जन्म के तीसरे ही साल उसकी माँ पार्वती का निधन हो गया। उसके पिता श्याम ने लक्ष्मी से दूसरी शादी कर ली। क्रमशः लक्ष्मी ने दो लड़कों को जन्म दिया। वह अपने बेटों से बेहद प्यार करती थी और गाँव की पाठशाला में पढ़ने भेजा करती थी। पर शंकर से घर का और खेत का काम कराती थी। फिर भी उसे इसकी कोई शिकायत नहीं थी।

यों समय बीतता गया। श्याम अचानक बीमार पड़ गया। वह समझ गया कि अब ज़िन्दा रहना मुश्किल है। किसी भी क्षण मौत उसे निगल सकती है। उसने पत्नी और बेटों को अपने पास बुलाया। फिर पत्नी से कहा, ''शंकर मासूम है। उसकी परवरिश की जिम्मेदारी तुम्हें सौंप रहा हूँ। अपने सगे बेटों की तरह इसे भी प्यार दो।'' फिर इसके दूसरे ही दिन वह मर गया।

पर लक्ष्मी का इरादा कुछ और ही था। वह शंकर को घर से निकालने की योजना बना रही थी। उसने उससे कहा, ''बेटे, कल रात को तुम्हारे पिता सपने में दिखायी पड़े और उन्होंने यह दर्पण मुझे सौंपा। उन्होंने कहा कि यह दर्पण बड़ा ही महिमावान है। इसे अपनी जायदाद का हिस्सा मानो।''

श्याम की पहली पत्नी पार्वती को यह दर्पण एक साधु के उजड़े आश्रम में मिला था, जब वह खेत में काम करके घर लौट रही थी। लोग अब भी कहा करते हैं कि वह साधु बड़ा ही महिमावान था। खेत से घर पहुँचने के बाद पार्वती ने यह दर्पण अपने पति के सुपुर्द कर दिया।

शंकर ने अपनी सौतेली माँ की बातें शांति से सुन लीं और दर्पण को लेते हुए कहा, ''माँ, तो क्या अब मुझे घर से निकल जाना होगा?'' उसके सवाल में मासूमियत भरी हुई थी।

धर्मराज

"हाँ बेटे, तुम्हारे पिता ने इस दर्पण को अपनी जायदाद के एक हिस्से के रूप में तुम्हें सौंपने के लिए कहा था। इसका मतलब यही हुआ कि इसे लेकर तुम घर से बाहर चले जाओ और जैसा जीना चाहते हो, जीओ।" फिर उसने उसके हाथ में चार रुपये थमा दिये।

शंकर ने उसी दिन एक फटी थैली में अपने कपड़े रख लिये और उनके बीच में सावधानी से दर्पण रखकर घर से चल पड़ा। शाम तक राजा के क़िले के पास की सराय में पहुँचा। आधा रुपया चुकाकर सराय में ही खाना खा लिया और उनके दिये एक कमरे में सो गया। धीरे से उसने फिर थैली से दर्पण निकाला।

दर्पण देखने में बड़ा ही सुंदर था। शंकर ने उसमें अपना प्रतिबिंब देखा और अपने ही आप कहने लगा, "पिताजी, माँ ने कहा था कि यह दर्पण बड़ा ही महिमान्वित है। पर उसने यह राज़ नहीं बताया कि यह महिमा क्या है और कैसे जानी जाए।" यों सोचते हुए वह उस दर्पण को अपने सीने पर रखकर सो गया।

ठीक, आधी रात के समय, सराय में कोलाहल मच गया। वहाँ के लोगों की बातों से उसे मालूम हुआ कि व्याघ्रकेतु नामक पड़ोसी राजा ने राजा मित्रवर्मा पर अचानक आक्रमण कर दिया और किले को घेर लिया। अब दोनों राज्यों की सेनाओं में घमासान लड़ाई होने लगी। मित्रवर्मा भी शत्रु सेनाओं का सामना करने निकल पड़े। प्रजा मित्रवर्मा को बहुत चाहती थी, क्योंकि उनका शासन बडा ही न्यायपूर्ण था। जनकल्याण ही उनका एकमात्र लक्ष्य था।

सराय का मालिक वहाँ रहनेवालों को बताने लगा कि व्याघ्रकेतु कितना बड़ा दुष्ट, महत्वाकांक्षी और क्रूर है। वह कहने लगा। "हमारे राजा मित्रवर्मा युद्ध करने चल पड़े। भगवान से हमारी प्रार्थना है कि उनकी विजय हो।"

इन बातों को सुनते ही शंकर ने अपने दर्पण में देखते हुए कहा, "कितना अच्छा होगा, अगर धर्मात्मा मित्रवर्मा विजयी हो जायें।"

बस, दूसरे ही क्षण बिजली कौंध उठी और दर्पण में से ततैया जैसे छोटे आकार के सैनिक कुकुरमुत्तों की तरह बाहर आ टपके और दृढ़ सैनिकों के रूप में परिवर्तित हो गये। वे बड़ी ही तेज़ी से आगे बढ़े और शत्रुसेना पर पिल पड़े।

इस आकस्मिक व भयंकर परिणाम को देखते हुए व्याघ्रकेतु चकित हो ही रहा था कि इतने में उसने देखा कि उसके सैनिक एक-एक करके धराशायी हो रहे हैं। फिर दर्पण में से एक लंबी रस्सी निकली और उसने व्याघ्रकेतु को घेरकर बाँध लिया।

अभी-अभी युद्धक्षेत्र में आये मित्रवर्मा ने भी उन वीर सैनिकों को देखा, जो दर्पण में से आये और शत्रु संहार में लगे हुए हैं। फिर उसने यह भी देखा कि एक रस्सी ने व्याघ्रकेतु को बाँध लिया। राजा स्वयं सराय आये और शंकर से मिलकर कहा, ''इस महिमान्वित दर्पण के कारण ही राज्य बच गया। तुम्हारा नाम क्या है और कहाँ के हो?''

शंकर ने अपना विवरण सविस्तार दिया।

उसने कहा, ''इस दर्पण से मेरा क्या भला होगा, यह खुद मैं नहीं जानता। बस, मैंने इतना ही चाहा कि धर्मात्मा राजा मित्रवर्मा की विजय हो। देखते-देखते दर्पण में से सैनिक निकल आये और दुश्मनों को हरा दिया।''

राजा ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, ''पता नहीं, तुम्हारी सौतेली माँ ने किस आशय से तुम्हें यह दर्पण दिया, पर इससे राज्य का महान कल्याण हुआ। आज ही तुम्हें गुरुकुल में भर्ती कराऊँगा और विद्याभ्यास का प्रबंध करूँगा। यह क्या तुम्हें स्वीकार है?''

शंकर सिर हिलाते हुए अपनी सहमति दे ही रहा था कि इतने में सबने देखा कि उसके हाथ में रखा हुआ वह दर्पण हवा में उड़ गया और बड़ी ध्वनि करता हुआ टुकड़ों में टूट गया।

यह दृश्य देखकर शंकर निराश हो गया और दर्पण के टुकड़ों को ध्यान से देखने लगा। तब राजा मित्रवर्मा ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, ''दर्पण के दूर जाने पर दुखी मत होना। महिमाएँ और मंत्र मनुष्य की प्रगति व विकास के लिए अधिक समय तक सहायता नहीं पहुँचाते। मनुष्य को चाहिये कि वह आत्मविश्वास व साहस के साथ अपनी प्रगति व विकास स्वयं कर ले। अब चलो।'' कहते हुए राजा उसे लेकर चल पड़े। अब शंकर के चेहरे पर मुस्कान फैल गई।

एक संथाली लोक कथा

मूकाभिभूत राजा

एक समय की बात है। एक राजा के पास अनन्त सम्पति थी– स्वर्ण या रजत मुद्राओं या मूल्यवान रत्नों के रूप में नहीं, बल्कि मवेशियों, हाथियों, घोड़ों, गधों तथा ऊँटों के रूप में।

एक बार उसने अपने सभी परिचारकों और सेवकों को एक निश्चित दिन और समय पर एकत्र होने का आदेश दिया। उसने इसका उद्देश्य किसी को नहीं बताया, इसलिए वे आपस में कानाफूसी कर अनुमान लगाने लगे।

निर्धारित दिन और समय पर राजा के महल के सामने आंगन में सब एकत्र हो गये। राजा ने आकर बिना किसी औपचारिकता के पूछा, "क्या हरेक व्यक्ति उपस्थित है?" सब चुपचाप थे।

राजा ने एकत्र समूह पर एक व्यापक दृष्टि डाली और कहा, "तुम्हारी चुप्पी से मैं अनुमान लगाता हूँ कि कोई अनुपस्थित नहीं है। मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूँ और तुममें से प्रत्येक से इसका उत्तर चाहता हूँ।"

राजा ने तुरन्त पूछा, "क्या तुम बता सकते हो कि मेरे मन में क्या है? क्या मेरे मन में कोई चिन्ता या परेशानी है? मैंने यही जानने के लिए तुम सब को यहाँ बुलाया है।" उसने विस्तार से कुछ नहीं समझाया। "तुम सब बारी-बारी से आगे आकर अपना उत्तर मुझेबताओ।"

वे सब एक-एक कर राजा के सामने आये और जो भी उत्तर उन्हें ठीक लगा, सबने बताया। राजा ने सिर हिला कर सब के साथ अपनी असहमति प्रकट की। सौभाग्यवश, उसके चेहरे से कोई भाव प्रकट नहीं होता था; यह निश्चय करना कठिन था कि वह क्रोधित, निराश, उदास या कुण्ठित है।

जब सबने अपना-अपना विचार दे दिया, तब राजा ने उन्हें सम्बोधित करते हुए कहा, ''मुझे दुख है कि मैं किसी के उत्तर के साथ सहमत नहीं हूँ। तुम सब वापस जाकर अपना-अपना काम देखो।''

राजा का एक मात्र मंत्री आंगन के सामने की ड्योढ़ी के कोने से यह सब गतिविधि देख रहा था। राजा ने उसकी ओर देख कर कहा, ''एक ऐसे व्यक्ति की खोज करो जो मेरे मन की बात जानता हो। एक महीने के अन्दर उसे मेरे पास लाओ, नहीं तो नौकरी से तुम्हें निकाल दिया जायेगा।'' यह अनिवार्य आदेश देकर राजा अन्दर चला गया।

मंत्री ने एक हाथ से अपनी ठुड्डी सहलाई और दूसरे हाथ से अपना माथा ठोका। फिर वह घर जाकर लेट गया और छत को निहारने लगा। ''मैं कहाँ जाकर ऐसे व्यक्ति को खोजूं जो राजा के मन को जान सके?'' वह सारा दिन इसी चिन्ता में डूबा रहा। ''मैं कल से उसकी खोज शुरू करूँगा।'' यह सोचकर वह सोने की कोशिश करने लगा।

दूसरे दिन वह जल्दी उठ कर बाहर चला गया। उसने राह में हर मिलनेवाले से अपनी समस्या बताई लेकिन हरेक ने उसे निराश किया। या तो वे अज्ञानी थे या राजा के क्रोध के भय से किसी का नाम बताना नहीं चाहते थे। वह बहुत दिनों तक घूमता रहा, लेकिन उसे कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो राजा के मन की बात जान सके। अब राजा के पास जाने में कुछ ही दिन शेष रह गये थे।

मंत्री की भूख और नींद जाती रही। उसने खाना छोड़ दिया और अक्सर वह गहरे विचारों में खोया अपने बिस्तर पर बैठा रहता। उसकी पत्नी ने खाने के लिए उससे अनुनय-विनय किया, किन्तु उसने एक कौर भी मुँह में लेने से इनकार कर दिया। उसकी बेटी ने उसकी यह दुर्दशा देखकर पूछा, ''पिता जी, आप क्यों चिन्तित हैं? आप बहुत दुखी लगते हैं। आप खाना क्यों नहीं खा रहे हैं? क्यों नहीं सो रहे हैं? कृपया बताइये।''

मंत्री ने उसकी बातों की परवाह नहीं की। एक दिन उसने स्नान भी नहीं किया। उसकी बेटी और सहन नहीं कर सकी। ''यदि आप स्नान नहीं करेंगे और भोजन नहीं करेंगे तो माँ और मैं दोनों ही खाना नहीं खायेंगी।'' उसने धमकी दी। ''अन्यथा बताइये कि आप की चिन्ता क्या है? हो सकता है मैं कोई समाधान बता सकूँ।''

मंत्री उठ कर बैठ गया। यह पहला मौका था जब किसी ने उसकी समस्या का, जो इतने दिनों से उसे परेशान कर रही थी, समाधान देने का आश्वासन दिया है। उसने तब उसे राजा के आदेश के बारे में बताया और कहा कि कैसे वह अब तक किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में असफल रहा है जो राजा का मन जान सके। ''अब कितने दिन और रह गये हैं पिता जी?'' बेटी ने पूछा।

''एक या दो दिन शायद'', मंत्री ने कहा।

''ठीक-ठीक तारीख बता दीजिये और मैं ठीक समय पर उस व्यक्ति को ले आऊँगी।'' उसकी बेटी ने बड़े आत्मविश्वास के साथ कहा। ''अब आप स्नान कर लीजिये और हमलोगों के साथ भोजन कीजिये।'' बेटी ने पिता को उठने के लिए बाध्य कर दिया और लगभग धकिया कर कमरे से बाहर कर दिया। भोजन करते समय मंत्री ने बेटी से कहा, ''मुझे राजा के पास परसों जाना है। तुम उस व्यक्ति को कब लाओगी?'' उसने चिन्तित होकर पूछा।

''परसों! चिन्ता न करें, पिता जी'', बेटी ने निश्चय के साथ कहा। ''मैं उससे पहले ही उस व्यक्ति को ले आऊँगी और वह परसों आप के साथ जायेगा।''

लड़की कहीं नहीं गई। उसने उस लड़के के बारे में सोचा जो उसकी भेड़ें और बकरियाँ चराता था। उसके अपने तीन भेड़ थे। वह बहरा और गूँगा दोनों था। लड़की ने उसे बुला कर समझाया और उसे खाना देकर कहा कि उसे उसके पिता के साथ राजा से मिलने के लिए जाना है। उसने सहमति में सिर हिला दिया।

बेटी ने पिता को राजा के पास जाने के दिन तक दुविधा में रखा। जब चरवाहा मंत्री के पास लाया गया तो वह चकित और स्तब्ध रह गया। ''लेकिन यह बहरा और गूँगा है, बेटी,'' मंत्री ने विरोध किया।

''आप निश्चिंत होकर इसे ले जाइये'', उसकी बेटी ने विश्वास दिलाया, ''राजा के मन में क्या है, यह जान जायेगा।''

मंत्री को अपनी बेटी पर बहुत विश्वास था, इसलिए वह चरवाहे को अपने साथ ले जाने के लिए तैयार हो गया। ''ओ गूँगे, चल मेरे साथ!'' दोनों राजा के महल की ओर चल पड़े।

राजा, मंत्री और उस व्यक्ति को देखने के लिए, जो राजा को उत्तर देगा, भीड़

एकत्र हो गई। मंत्री के आगमन की सूचना पाकर राजा आया और अपने सिंहासन पर बैठ गया। मंत्री ने झुक कर राजा का अभिवादन किया। चरवाहे ने भी वैसे ही राजा का अभिवादन किया। राजा कुछ नहीं बोला। उसने केवल अपना हाथ उठा कर एक उंगली दिखाई। लड़के ने दो उंगलियाँ दिखा कर उत्तर दिया। राजा ने मुस्कुरा कर तीन उंगलियाँ दिखाईं। चरवाहे ने अपना सिर हिलाते हुए फिर दो उंगलियाँ दिखाईं।
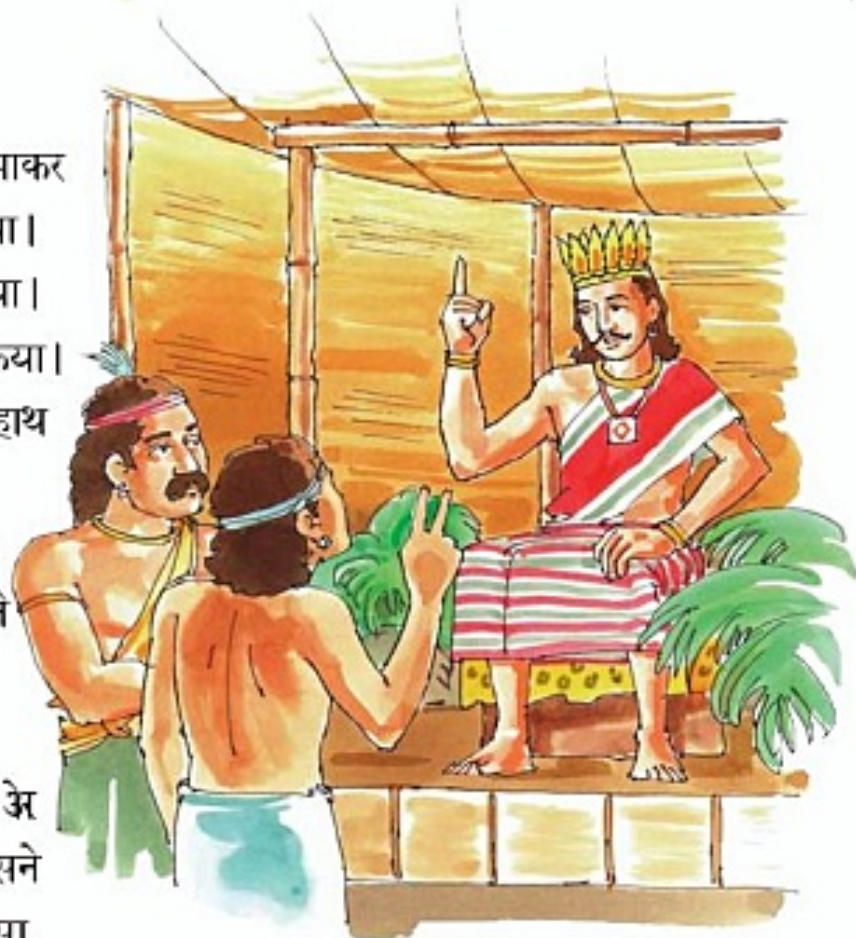
राजा बहुत प्रसन्न हो गया। वह मंत्री की ओर मुड़ा। ''तुम एक श्रेष्ठ व्यक्ति को लाये हो। उसने मुझे बहुत ठीक उत्तर दिया। मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूँ।''

''धन्यवाद महाराज'', मंत्री ने एक बार फिर झुक कर कहा। ''आप यदि बुरा न मानें तो क्या आप हमें और यहाँ एकत्र लोगों को समझा देंगे कि आपने क्या प्रश्न किया और उसने क्या उत्तर दिया?''

''यह बहुत आसान था, मंत्री!'' राजा ने कहा। ''जब मैंने एक उंगली दिखाई तो मैंने पूछा कि क्या मैं ही एकमात्र यहाँ का स्वामी हूँ। तब उसने दो उंगलियाँ दिखा कर यह कहा कि नहीं, मैं एक मात्र स्वामी नहीं हूँ, दूसरा स्वामी परमात्मा है। जब मैंने तीन उंगलियाँ दिखा कर यह पूछा कि क्या मेरे राज्य पर किसी तीसरी शक्ति का भी अधिकार है, तब उसने दो उंगलियाँ फिर दिखाईं और पुष्टि की कि हमारे राज्य पर केवल मेरा और परमात्मा का ही अधिकार है, किसी अन्य क ा नहीं। इस तरह उसने ठीक समझा कि मेरे मन में क्या है!''

राजा ने मंत्री और चरवाहे को अलग-अलग मुद्राओं की थैली देकर बिदा किया। घर पहुँच कर मंत्री ने अपनी बेटी की मदद से चरवाहे से पूछा कि उसने राजा के मन की बात को कैसे जान लिया। उस गूंगे ने समझाया कि ''राजा ने यह पूछा था कि क्या मैं एक भेड़ उसे बेच सकता हूँ। मैंने उसे कहा कि मैं उसे दो भेड़ तक बेच सकता हूँ, क्योंकि वह राजा है। लेकिन जब राजा ने कहा कि वह मेरे तीनों भेड़ खरीद सकता है तब मैंने सिर हिला कर कहा कि नहीं, मैं केवल दो ही भेड़ बेच सकता हूँ!''

मंत्री और उसकी बेटी ठठा कर हँस पड़े।

महान साध्वी

ब्रह्मदत्त जिन दिनों काशी राज्य पर शासन करते थे, उन दिनों बोधिसत्व काशी के समीप एक गाँव में एक संपन्न परिवार में पैदा हुए।

बोधिसत्व ने बचपन में ही सारी विद्याएँ सीख लीं। युक्तवयस्क होने पर बोधिसत्व के माता-पिता ने काशी नगर में एक अच्छा रिश्ता तैयार किया और सुजाता नामक एक सुंदरी के साथ उनका विवाह कर दिया। सुजाता न केवल सौंदर्यवती थी, बल्कि गुणवती और विवेकशीला भी थी। वह अपने सास-ससुर औसति की सेवा बड़ी श्रद्धा तथा भक्ति के साथ करने लगी।

बोधिसत्व भी सुजाता के प्रति बड़ा ही अनुराग रखते थे। एक दिन सुजाता ने अपने पति से पूछा, ''मेरे माता-पिता बूढ़े हो चुके हैं। उन्हें देखने की मेरे मन में बड़ी लालसा हो रही है। अगर आप भी मेरे साथ चलें तो हम दोनों उन्हें देखकर लौट सकते हैं।''

सुजाता की यह इच्छा जानकर बोधिसत्व बड़े ही खुश हुए और बोले, ''अच्छी बात है,हम दोनों ज़रूर उन्हें देख आयेंगे। मेरे मन में भी कई दिनों से सास और ससुर को देखने की बड़ी इच्छा है। लेकिन घर पर ज्यादा काम-काज होने की वजह से मैं चुप रह गया, वर्ना मैं ही पहले काशी जाने की तैयारी करता।''

इसके बाद दूसरे ही दिन यात्रा के लिए सारी तैयारियाँ कीं और ज़रूरी चीज़ें गाड़ी पर लादकर घर से चल पड़े। सुजाता गाड़ी पर सवार हुई और बोधिसत्व गाड़ी हांकने लगे। जब वे काशी नगर की सीमा पर पहुँचे, तब एक पेड़ के नीचे बैलों को खोल दिया। वहाँ के तालाब में हाथ-पैर धोकर खाना खा लिया। थोड़ी देर आराम करने के बाद फिर गाड़ी में बैल जोतकर चल पड़े।

बोधिसत्व की गाड़ी जब नगर में पहुँचने को थी, ठीक उसी वक़्त काशी के राजा हाथी के हौदे पर सवार हो नगर में जुलूस के साथ निकले थे। उस जुलूस को देखने के ख्याल से सुजाता

अपने पति की अनुमति से गाड़ी से उतरकर पैदल चलने लगी। बोधिसत्व गाड़ी में पीछे थे।

हौदे पर बैठे काशी राजा ने अत्यंत रूपवती सुजाता को देखा। उनके मन में सुजाता के साथ शादी करने की इच्छा जगी। राजा ने जब उस नारी के बारे में दर्याफ़्त किया, तब पता चला कि वह अमुक गृहस्थ की पुत्री है और गाड़ी पर सवार व्यक्ति ही उसका पति है।

राजा ने अपने मन में यह विचार किया कि किसी उपाय से सुजाता के पति का बध कराकर उसे अपनी रानी बना ले। इसके लिए राजा ने एक योजना बनाई।

इस निर्णय के बाद राजा ने अपने एक विश्वासपात्र सेवक को बुलाकर उसके हाथ अपना मुकुट दे दिया और आज्ञा दी- ''तुम सब लोगों की आँखें बचाकर इस मुकुट को उस गाड़ी में डाल आओ।''

सेवक ने बोधिसत्व की आँखें बचाकर मुकुट को गाड़ी में डाल दिया और यह समाचार राजा को सुनाया। एक घड़ी के अन्दर लोगों के बीच हलचल मच गई कि राजा के मुकुट को किसी ने चुराया है।

राजा ने अपने सेवकों को आदेश दिया कि मुकुट को चुराने वाले चोर को पकड़ लाये। आख़िर ढूँढ़ने पर एक सेवक को बोधिसत्व की गाड़ी में मुकुट दिखाई दिया। सेवक बोधिसत्व को चोर ठहरा कर खींच ले गया और उसको राजा के सामने हाज़िर किया।
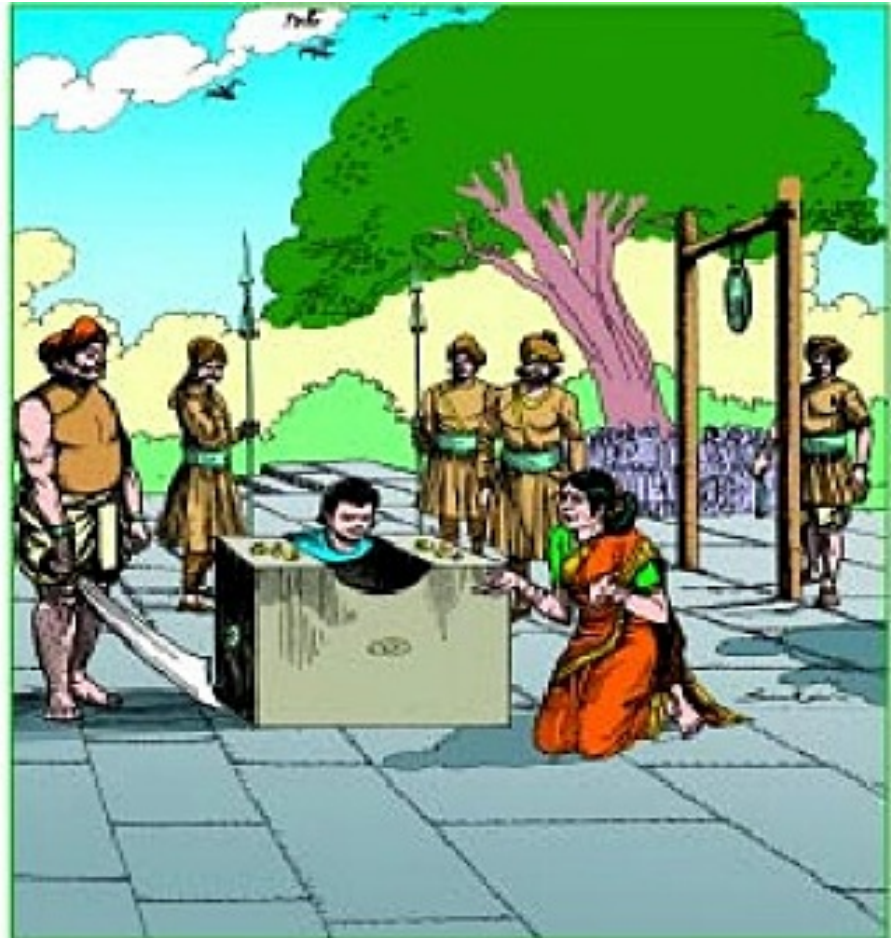
राजा ने क्रुद्ध होकर आदेश दिया, ''क्या इसीने मेरा मुकुट चुराया है? इस दुष्ट को ले जाकर इसका सर काट डालो।''

यों अपनी योजना को सफल होते देख राजा खुश हुए। उधर राज सेवकों ने बोधिसत्व को कोड़ों से पीटते राजपथों पर घुमाकर उनका अपमान किया और अंत में उनका सर काटने के लिए बध स्थान पर ले गये।

यह ख़बर मालूम होने पर रोती हुई सुजाता अपने पति के पीछे चल पड़ी। वह विलाप करने लगी, ''मैंने ही आप को इस बिपदा में डा दिया है।'' इसके बाद वह भी बध स्थान पर पहुँची, दुख के मारे आक्रोश करने लगी, ''क्या भोले-भाले और निरपराधियों को बचाने वाले भगवान नहीं हैं? दुष्टों के अत्याचारों का क्या कोई अंत नहीं है?'' महान साध्वी सुजाता का विलाप

सुनकर स्वर्ग में इन्द्र का सिंहासन डोल उठा।

इन्द्र आश्चर्य में आ गये। वे सोचने लगे, ''आख़िर इसकी वज़ह क्या है?'' इसके बाद उन्होंने अपनी दिव्य दृष्टि से सारी बातें जान लीं।

इस पर इन्द्र ने एक विचित्र स्थिति पैदा की, उन्होंने अपनी महिमा के द्वारा राज । और बोधिसत्व के स्थान इस प्रकार बदल दिये, जिससे राजा के स्थान पर बोधिसत्व और बोधिसत्व की जगह पर राजा पहुँच जाये!

लोगों को यह अद्भुत मालूम न था। इसलिए उन्होंने सोचा कि हाथी के हौदे पर बैठा हुआ व्यक्ति राजा है। मगर वास्तव में वहाँ पर राजकी पोशाकों में बोधिसत्व बैठे हुए थे। इसी तरह बधिकों के अधीन में बलिवेदी पर बोधिसत्व के वस्त्रों में राजा खड़ा हुआ था।

इस रहस्य को बधिक जानते न थे! इसलिए राजा के आदेशानुसार अपने अधीन में रहने वाले व्यक्ति का सर बधिकों ने काट डाला। मरने के बाद दुष्ट काशी राजा को उनका निज रूप प्राप्त हुआ। प्रजा को मालूम हो गया कि मारा गया व्यक्ति काशी का राजा है।दूसरे ही क्षण जनता में कोलाहल मच गया, वे यह सोचकर आश्चर्य में आ गये कि इस अनोखी घटना के कारणभूत कौन हैं?

उस समय इन्द्र ने बोधिसत्व तथा जनता को दर्शन देकर सारा वृत्तांत सुनाया और कहा, ''आज से बोधिसत्व ही तुम लोगों का राजा है और सुजाता पटरानी है।'' इसके बाद इन्द्र अदृश्य हो गये।

राज्य की सारी जनता यह सोचकर खुश हुई कि दुष्ट राजा के पापों का घड़ा भर गया था, इसलिए वह बलिवेदी की आहुति बन गया है। उसके अत्याचारों से प्रजा दुखी थी। इसलिए इन्द्र के आदेशानुसार प्रजा ने बोधिसत्व को अपने राजा तथा सुजाता को अपनी रानी के रूप में सहर्ष स्वीकार कर लिया।

उस दिन से काशी राज्य में धर्माचरण होने लगा,समय पर वर्षा होने लगी। इस कारण सारा देश संपन्न और सुखी बन गया। प्रजा सुख-शान्तिपूर्वक रहने लगी।

विष्णु पुराण

मन्दोदरी ने भी, विभीषण की भाँति ही, रावण को सलाह देते हुए कहा, ''हे नाथ! आपने सीता को इस प्रकार लाकर अच्छा नहीं किया। शायद आपने यह अत्याचार इसलिए किया कि लक्ष्मण ने आप की बहन शूर्पणखा के नाक-कान काट लिये और रामचंद्र ने उससे विवाह करने से इनकार कर दिया। अब भी सीता जी को लौटा दें तो दोनों पक्ष सर्वनाश से बच जायेंगे।''

''तुम्हारा पति कायर और डरपोक नहीं है जो साधारण मानव से डर जाये। जिस महाबली रावण से सभी देवता थर-थर काँपते हैं, उसे तुम मनुष्य के सामने झुकने को कहती हो? यदि उसने मुझसे टकराने की कोशिश की तो उसे प्राणों से हाथ धोने पड़ेंगे।''

इधर रावण पर चढ़ाई करने के लिए राम वानरों की सेना संगठित करने लगे। सुग्रीव, नील, अंगद, सुषेण तथा जांबवान आदि बड़े-बड़े योद्धाओं ने जंगल में इधर-उधर फैले सभी वानरों को एकत्र किया। हनुमान जी की देखरेख में सेना के संगठन और हमले की पूरी तैयारी हो गई।

नील की देखरेख में सेतु का निर्माण शुरू हुआ। वानर बड़ी-बड़ी शिलाएँ लाकर समुद्र में डालने लगे। इस प्रकार एक सौ योजन लम्बे पुल का निर्माण भी पूरा हो गया।

विभीषण ने लंका छोड़ दी और राम के पास आकर शरण के लिए प्रार्थना की। रामचंद्र ने उन्हें अभय देते हुए लंका का राजा बनाने का वचन दिया तथा उसी क्षण समुद्र के जल से लंकापति के रूप में विभीषण का अभिषेक भी कर दिया।

सेतु-निर्माण के बाद राम ने धनुष-बाण
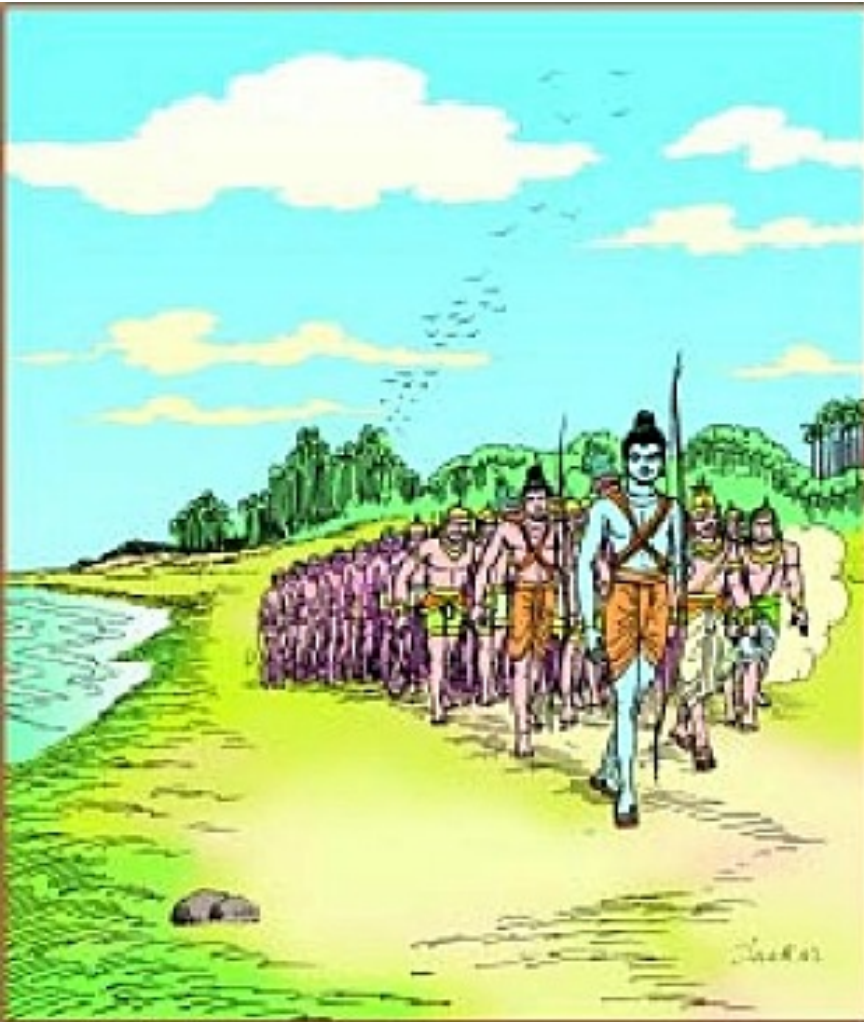
धारण कर लिया। इनके साथ एक ओर लक्ष्मण और दूसरी ओर हनुमान थे। विभीषण पीछे थे।

जब गुप्तचरों ने रावण को खबर दी कि राम ने वानरों की बड़ी भारी सेना के साथ लंका पर चढ़ाई कर दी है, तो रावण, सहसा, विश्वास न कर सका। वह सोचने लगा– ''सौ योजन तक समुद्र पर सेतु का निर्माण कैसे संभव हुआ? लेकिन तब भी क्या वह मनुष्य राम तीनों लोकों को भयभीत करने वाले रावण का संहार कर अपनी पत्नी को वापस ले जा सकेगा? असम्भव!'' फिर वह ज़ोर से अट्टहास करता हुआ बोला, ''जब मौत आती है तो चींटी के भी पर निकल आते हैं। आने दो बन्दरों को।''

तभी रावण के मंत्री प्रहस्त ने सुझाव दिया, ''प्रभु! मार्ग में ही शत्रु का सामना करना तथा नगर में प्रवेश करने से पूर्व ही उसे नष्ट कर देना उचित होगा।''

इस पर रावण अहंकार से बोला, ''उन्हें नगर में प्रवेश करने दो। कुंभ कर्ण ने बहुत दिनों से भर पेट भोजन नहीं किया है। वे लोग जाल में फँसी मछलियों की भाँति मेरे भाई की भूख मिटाने में काम आयेंगे।''

रामचंद्र सेना के साथ लंका के समुद्र तट पर आकर सेना की व्यूह रचना कर रहे थे।

तभी अंगद समुद्र तट पर से उछल कर रावण के पास आकर बोला, ''हे रावण! मैं बालि का पुत्र हूँ। मेरे पिता जी ने एक बार आप को अपनी पूँछ से उठा कर दूर फेंक दिया था। उस समय से आप मेरे पिता जी के प्रति बहुत आदर-भाव रखते हैं इसीलिए मैं आप को यह समझाने आया हूँ कि आप राम जी के साथ शत्रुता छोड़ कर उनकी शरण में आ जाइए। वे आप को क्षमा कर देंगे। लेकिन अहंकार वश यदि आप यह समझते हैं कि वानर सेना आप का क्या बिगाड़ लेगी तो यह बताने की जरूरत नहीं होनी चाहिये कि वानर कितने वीर और पराक्रमी होते हैं।''

अंगद की बातों से रावण को क्रोध आ गया इसलिए उसने अंगद को मारने के लिए अपनी तलवार खींच ली। अंगद ने उसका गर्व चूर करने के लिए उसके मुकुट पर एक लात मारा, जिससे रावण धरती पर गिर पड़ा। इसके बाद अंगद अपनी सेना में वापस आ गया।

इसके बाद वानरों ने लंका नगर को चारों

ओर से घेर लिया और राक्षसों को मारने लगे।

चींटियों की तरह अनगिनत संख्या में बन्दरों को नगर में प्रवेश करते देख रावण ने कुंभकर्ण को जगाया। कुंभकर्ण ने एक समय घोर तपस्या द्वारा ब्रह्मा को प्रसन्न करके यह वर मांगा था कि वह छः महीने तक खाता रहे और सिर्फ़ एक दिन सोये। लेकिन, ब्रह्मा ने सरस्वती की सहायता से उसके वरदान में यह भूल करवा दी कि वह छः महीनों तक सोये और सिर्फ़ एक दिन खाये। ब्रह्मा ने जल्दी ही तथास्तु कह कर यह चेतावनी भी दी कि यदि उसकी नींद पूरी नहीं हुई और छः महीने पूरे होने से पहले ही किसी ने जगा दिया तो उसकी शक्ति घट जायेगी।

इसलिए जब रावण ने उसे जगाया तो वह झल्ला उठा। उसने भी रावण को समझाया कि वह नाहक झगड़े में न पड़े और रामचंद्र की पत्नी को लौटा दे।

कुंभकर्ण के उपदेश सुन कर रावण की त्योरियाँ चढ़ गईं और क्रोध में बोला, "ठीक है, या तो युद्ध भूमि में शत्रु का सामना करो या कायरों की तरह दुबक कर सो जाओ।"

कुंभकर्ण क्रोध में था ही। वह अपने भाई को कुपित होते देख लड़ाई के लिए चला गया और बन्दरों को पकड़ कर खाने लगा। अन्त में राम के साथ युद्ध करते हुए वह काम आ गया।

कुंभकर्ण के बाद एक-एक करके कई राक्षस योद्धा युद्ध में मारे गये। इसके बाद रावण का बेटा इंद्रजित गरजता हुआ रणक्षेत्र में आया।

रावण को अपने बेटे की अलौकिक वीरता पर गर्व और विश्वास था। उसने एक बार युद्ध में इंद्र को परास्त कर दिया था, इसलिए उसका नाम इंद्रजित पड़ा था। वह मेघों में छिप कर उन्हीं की तरह गर्जन करता हुआ युद्ध कर सकता था, इसीलिए वह मेघनाद कहलाया। वह मंत्र तंत्र में कुशल बड़ा ही मायावी योद्धा था, साथ ही वह एक कुशल राजनीतिज्ञ भी था। उसके प्राणों को खतरा सिर्फ़ ऐसे व्यक्ति से हो सकता था जिसने चौदह वर्षों तक ब्रह्मचर्य पालन कर निद्रा और आहार का त्याग कर दिया हो। लेकिन ऐसे व्यक्ति की कल्पना भी असम्भव-सी लगती थी इसलिए रावण समझता था कि उसका बेटा अमर है और वह अकेला ही राम की सारी सेना को गाजर-मूली की तरह काट देगा।

इंद्रजित ने युद्ध के मैदान में आते ही राम की सेना पर गाज ढाह दिये। उसने माया से सीता की सृष्टि करके राम के सामने उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये। लक्ष्मण ने रामचंद्र को इंद्रजित के माया-युद्ध के बारे में बताया और इंद्रजित के साथ घोर युद्ध किया।

इंद्रजित ने मेघों में छिप कर राम और लक्ष्मण दोनों पर नागास्त्र की वर्षा की और उन्हें नाग पाश में बाँध दिया। तब गरुड़ ने आकर नागों को नष्ट कर उन्हें नाग-पाश से मुक्त किया। इसके बाद इंद्रजित लक्ष्मण के बाण से मारा गया।

अपने पुत्र की मृत्यु के बाद रावण का बल क्षीण हो गया। इसलिए पाताल-लंका के राजा अपने भाई महिरावण से वह सहायता मांगने गया और राम-लक्ष्मण को ले जाकर काली देवी को उनकी बलि देने का अनुरोध किया। रावण के अनुरोध करने पर महिरावण सोये हुए राम और लक्ष्मण को चुरा कर पाताल ले गया और काली के मन्दिर में उनकी बलि देने लगा।

हनुमान ठीक समय पर पहुँच कर राम-लक्ष्मण को मन्दिर से उठा ले आये। इसके बाद राम-लक्ष्मण और महिरावण में घोर युद्ध हुआ, लेकिन महिराबण नहीं मरा। राम की भक्त चंद्रसेना महिरावण के महल में बन्दिनी थी। वह महिरावण की मृत्यु का रहस्य जानती थी। हनुमान ने उससे यह भेद ले लिया। तभी राम के हाथों महिराबण युद्ध में मारा गया।

हनुमान ने महिरावण की मृत्यु के बाद मत्स्य वल्लभ को पाताल-लंका का राजा बना दिया और राम-लक्ष्मण को अपने कन्धों पर बिठा कर लंका लौट आये।

महिराबण की मृत्यु के बाद रावण की कमर टूट गई। उसके सभी बहादुर योद्धा मारे जा चुके थे। जब राम को परास्त करने के उसके सारे प्रयास विफल हो गये तब उसने इस्पात के योद्धा और चतुरंगी सेना की सृष्टि करने वाले पाताल-लंका योग का शुभारंभ किया। अंगद उसके योग में विघ्न डालने के लिए अदृश्यकरणी विद्या की सहायता से अदृश्य होकर रावण के महल में चला गया और राबण के समक्ष ही मन्दोदरी का जूड़ा पकड़ कर खींच लिया। इससे रावण का ध्यान भंग हो गया।

अन्त में निराश होकर रावण अकेला हीयुद्ध

के लिए निकल पड़ा। युद्ध में आते समय मन्दोदरी ने उसे फिर समझाया, ''क्यों नहीं अब भी सीता को लौटा कर राम से क्षमा माँग लेते? वे अवश्य आप को क्षमा कर देंगे।''

लेकिन रावण हताश होकर भी अपने हठ पर अड़ा रहा। ''चाहे सूर्य और चंद्र अपने निश्चय से भले हट जायें लेकिन रावण का निश्चय अटल है, भले ही इसके लिए प्राणों की बाजी क्यों न लगानी पड़े।'' आवेश में ऐसा कहते हुए दस घोड़ों के रथ पर सवार हो रावण युद्ध के लिए चल पड़ा।

सबसे पहले उसकी मुठभेड़ लक्ष्मण से हुई जिसके हाथों उसके बेटे इंद्रजित की मृत्यु हुई थी। उसे देखते ही रावण बौखला उठा।

रावण ने एक बार इंद्र को पराजित कर उसे बन्दी बना लिया था। इंद्र ने उससे मुक्त होने के लिए उसे एक महायुध अस्त्र प्रदान किया था। रावण ने क्रोध में आकर उसी अस्त्र का लक्ष्मण पर प्रयोग किया। लक्ष्मण उस अस्त्र का आघात सह न सके और मूर्छित हो गये।

हनुमान शीघ्र ही संजीवनी बूटी के लिए हिमालय पर्वतों की ओर चल पड़े और रातोंरात औषधि लाकर लक्ष्मण की प्राण-रक्षा की।

इंद्र ने राम की सहायता के लिए मातलि सारथी के साथ एक दिव्य रथ भेजा। राम उसी रथ पर सवार हो रावण के साथ युद्ध करने लगे। दो महान योद्धाओं में भयंकर युद्ध होने लगा।

रावण की नाभि में एक अमृत-पात्र था। जब तक वह अमृत-पात्र सुरक्षित था, तब तक रावण को मारना असम्भव था। यह रहस्य सिर्फ़ विभीषण जानता था। उसने राम के पास जाकर धीरे से

उनके कान में यह भेद बता दिया। राम ने झट ब्रह्मास्त्र का प्रयोग कर उस अमृत कलश को नष्ट कर डाला। रावण का विशालकाय शरीर निष्प्राण हो धरती पर लुढ़क गया।

रावण-वध के साथ ही लंका में राक्षसों का साम्राज्य समाप्त हो गया। विभीषण लंका के नये राजा बनाये गये।

अशोक वाटिका से सीता को लाकर राम ने उनसे कहा, ''सीते! दुष्ट रावण को दण्ड देकर मैंने एक राजा का कर्त्तव्य निभाया है। रावण ने तुम्हें बहुत दिनों तक अपने पास रखा है। ऐसी हालत में यदि मैं तुझे स्वीकार करके अयोध्या ले जाऊँ तो समाज को आपत्ति होगी। अतः अब तुम स्वतंत्र होकर इच्छानुसार जीवन-यापन कर सकती हो।''

रामंचद्र जी की ये बातें सुन कर सीता मर्माहत हो उठीं। उन्होंने अग्नि परीक्षा देने का निश्चय किया।

उनकी इच्छा के अनुसार एक अग्निकुण्ड तैयार किया गया। कुण्ड में धू-धू कर आग की लपटें उठने लगीं। सीता राम के चरणों में अपना ध्यान लगा कर उन लपटों में कूद पड़ीं। अग्नि ज्वाला और भी भड़क उठी और सीता उसमें अदृश्य हो गयीं।

कुछ देर बाद उन लपटों में से अग्निदेव प्रकट हुए। उनकी नवविकसित कमल जैसी अंजुलि में सीता जी विराजमान थीं।

''सीता जी पावक जैसी पावन हैं। इन्हें स्वीकार कीजिए।'' रामचंद्र को सम्बोधित करते हुए अग्निदेव ने कहा।

उसी समय आकाश में विमान में बैठे दशरथ सबको दर्शन देते हुए बोले, ''बेटे रामचंद्र! अग्नि परीक्षा से यह बात सिद्ध हो गई है कि सीता पवित्र है। इसलिए अब तुम निःसंकोच और निर्भय होकर अयोध्या लौट जाओ और वहाँ का राज्य संभालो। अयोध्या की प्रजा तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है।''

रामचंद्र जी ने झुक क र पिता को प्रणाम किया और एक आदर्श पुत्र का उदाहण प्रस्तुत करते हुए। सब को साथ ले पुष्पक विमान से अयोध्या लौट आये।

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि के लिए २५० रु.

निम्नलिखित कहानी को पढ़ोः

धनी राम और जगतराम दोनों पड़ोसी थे। धनीराम धनी था, जबकि जगतराम गरीब था। उसके चार बेटे थे। उसने बड़ी कठिनाई से उन्हें पाला-पोसा था।

सन्तानहीन धनीराम उसके एक बेटे को गोद लेना चाहता था। वह जगतराम के पास गया और उसके बेटों के बारे में पूछताछ की। फिर उसने अपनी इच्छा के बारे में उसे बताया।

लेकिन जगतराम चुपचाप रहा। उसके बेटे को गोद लेने के प्रस्ताव पर उसने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। धनीराम को आश्चर्य हुआ। ''तुम क्यों नहीं चाहते कि तुम्हारे बेटों में से किसी एक को ऐसे स्वर्णिम अवसर का लाभ मिले?''

अब विचार करोः

- जगतराम चुपचाप क्यों रहा?
- क्या धनीराम ने विषय को आगे नहीं बढ़ाया?
- इस प्रस्ताव के पीछे धनीराम का वास्तविक उद्देश्य क्या था?
- मान लो कि धनीराम ने इस प्रस्ताव को सीधे उसके बेटों के समक्ष रखा होता तो उनकी प्रतिक्रिया क्या होती?

अपनी प्रतिक्रिया १००-१५० शब्दों में दो और कहानी का एक उपयुक्त शीर्षक बताओ। अपनी प्रविष्टि के साथ निम्नलिखित कूपन को भर कर एक लिफाफे में भेज दो जिस पर ''पढ़ो और प्रतिक्रिया दो'' लिखा हो।

अन्तिम तिथिः फरवरी २८, २००५

नाम --उम्र------------जन्मतिथि----------------------

विद्यालय --कक्षा------------

घर का पता --

--पिनकोड----------------------

अभिभावक के हस्ताक्षर — प्रतियोगी के हस्ताक्षर

चन्दामामा इंडिया लिमिटेड

८२, डिफेंस ऑफिसर्स कालोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

भूख की दवा

एक बार एक देश में अकाल पड़ा। उस देश के राजा ने मंत्रियों तथा अन्य सरकारी अधिकारियों की सभा बुलाई और कहा, ''हमारे देश में अकाल का तांडब हो रहा है। भूख की मौतें दिन ब दिन बढ़ती जा रही हैं। भूख को सदा के लिए भगाने के हेतु मैं वैद्यों के द्वारा एक ऐसी दवा तैयार कराऊँगा जिससे भविष्य में किसी को भूख ही न लगे।''

अधिकारियों तथा मंत्रियों ने राजा की बातें सुनीं, लेकिन सब यह सोचकर मौन रह गये कि सुझाव देने पर न मालूम राजा क्या सोच बैठें।

लेकिन वृद्ध मंत्री सुबुद्धि ने उठकर निवेदन किया, ''महाराज, हर साल देश के किसी न किसी प्रदेश में अकाल पड़ रहा है। यदि उसे दूर करना हो तो सिंचाई की सुविधाएँ अधिक करके देश को सस्यश्यामल बनाना होगा। मगर भूख की दवा से अकाल को रोकना असंभव है।''

''मैं देखूँगा, क्यों संभव नहीं है?'' राजा मंत्री पर बरस पड़ा। इसके बाद राजा ने मंत्री की निंदा करते कहा कि मंत्री हर बात में अडंगा लगाना चाहता है। इस पर बाक़ी लोगों ने सुझाव देना बेकार समझा और राजा के कथन का मुक्त कंठ से समर्थन किया।

तब राजा ने देश के सभी वैद्यों को बुला भेजा और आदेश दिया, ''तुम लोगों को मैं एक महीने की मोहलत देता हूँ।इस बीच भूख कोमिटानेवाली दवा तैयार कर दो।''

सब वैद्य राजा की बात सुनकर चकित रह गये। उनमें से एक ने कहा- ''महाराज, क्षमा कीजिए। भूख रोकनेवाली दवा का जिक्र किसी भी वैद्य-ग्रन्थ में नहीं है।''

''तब इन सभी वैद्यों को कारागार में बंद कर दो।'' राजा ने आदेश दिया।

उस वक़्त एक बूढ़ा आगे आया और बोला, ''महाराज, आप इन सभी वैद्यों को कारागार से

मुक्त कर दीजिये। मैं एक हफ्ते के अन्दर भूख की दवा तैयार करके दे सकता हूँ।''

''हाँ, वैद्य हो तो ऐसा हो।'' उस वैद्य की तारीफ़ करते हुए राजा ने सभी वैद्यों को कारागार से मुक्त कर दिया।

इसके बाद चंद दिनों में वही बूढ़ा राजा के पास आया। ताड़ के फल के बराबर की दवा लाकर राजा के सामने रखा और कहा, ''महाराज, हर एक आदमी घुंगुची के बराबर की दवा खा ले तो फिर उसे ज़िंदगी-भर कभी भूख न लगेगी।''

राजा ने उस बूढ़े का सम्मान करके सारे नगर में दवा बंटवा दी। मगर राजमहल के निवासियों में से किसी ने वह दवा नहीं खायी, इसलिए उन्हें पहले की भांति भूख लग रही थी। लेकिन शीघ्र ही यह समाचार मिला कि नगरवासियों में से किसी को भूख नहीं लग रही है। तब बृद्ध मंत्री ने राजा को समझाया-''महाराज, लोगों ने काम-धाम करना छोड़ रखा है। उन्हें अब भूख नहीं सताती, इसलिए सदा मनोरंजन और निद्रा में अपना वक़्त बिता रहे हैं।''

''लेकिन सबसे बड़ी भूख की समस्याहल हो गयी।'' राजा ने कहा।

दो दिन बाद फिर मंत्री ने आकर राजा को समझाया, ''महाराज, लोगों ने अब अपना-अपना पेशा करना छोड़ रखा है। जुलाहे कपड़े बुन नहीं रहे हैं, नाई दाढ़ी नहीं बना रहा है। सभी वस्तुओं का अकाल पड़ गया है। पहले केवल अनाज नहीं मिलता था, लेकिन अब बाज़ार में कोई भी चीज़ नहीं मिल रही है। अगर मिलती भी है तो उसके बज़न का सोना देकर ख़रीदना पड़ रहा है।'' राजा ने ये बातें सुनीं, मगर मौन रहा।

थोड़े दिन बाद मंत्री ने आकर राजा से कहा,
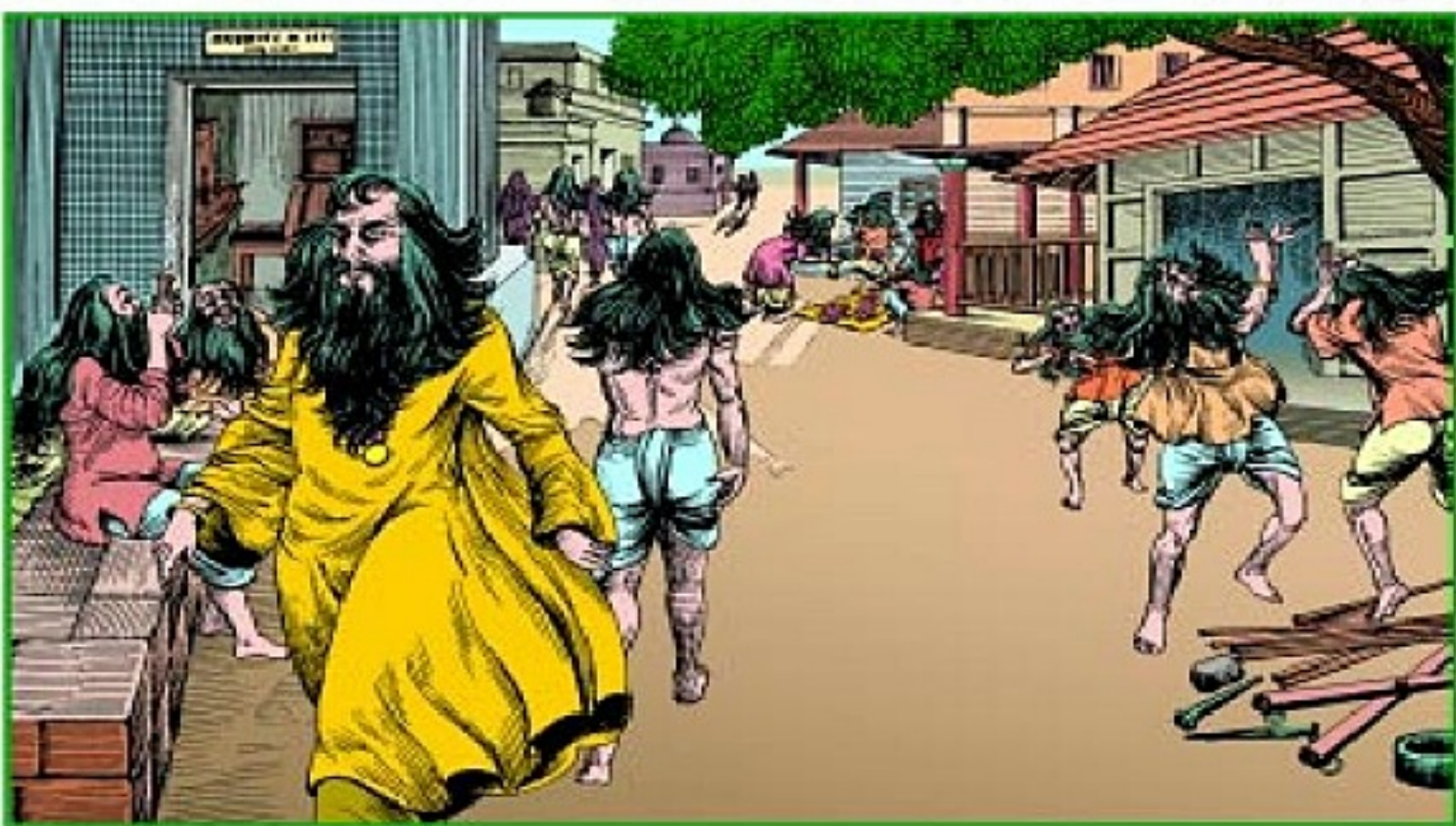
''महाराज, लोग क़ानून भंग कर रहे हैं। सारे देश में अराजकता फैलती जा रही है।''

मंत्री की बातें सुनने पर राजा क्रोध में आकर बोला, ''जनता ऐसी नमकहराम हो गयी है? सेनापति से कह दो कि वह सेना तैयार रखे।''

''महाराज, अब हमारे पास सेना ही कहाँ रही? सैनिकों में से बहुत से लोग हमारी नौकरी छोड़ चले गये हैं।'' मंत्री ने जवाब दिया।

इतने में सेनापति घबराया हुआ आ पहुँचा और बोला, ''महाराज, हमारा शत्रु चण्डप्रचंड अपनी सेना के साथ हमला करने आ गया और उसने हमारी राजधानी को भी घेर रखा है।''

''अब क्या किया जाये? तुम्हीं बताओ?'' राजा ने कहा।

''सिवाय शत्रु के अधीन होने के हमारे सामने कोई उपाय नहीं रह गया है?'' सेनापति ने ठण्डे दिल से कहा। सेनापति यों कह ही रहा था कि शत्रु सैनिक आ पहुँचे। उनका नेता बोला, ''महाराज, आपका राज्य हमारे हाथों में आ गया है। आप अनावश्यक हमारा सामना करके अपने प्राणों को ख़तरे में न डालें।''

''अब सामना कैसा? भूख की दवा ने मुझे इस हालत में खड़ा कर दिया है। अब मैं आप लोगों का बंदी हूँ।'' यों कहते राजा आगे बढ़ा।

इतने में बूढ़ा वैद्य आगे आया और बोला, ''महाराज, मैंने पहले ही बताया था कि भूख मिटाने की दवा सभी अनर्थों का मूल है। आप ने मेरी बात नहीं मानी?'' ''इसीलिए उसका फल भोग रहा हूँ।'' राजा ने कहा।

''अब भी सही, आप ने असली बात समझ ली, हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है।'' इन शब्दों के साथ वैद्य ने अपना वेष बदल डाला। वह वृद्ध और कोई नहीं, बल्कि मंत्री सुबुद्धि था।

''महाराज, आप मुझे क्षमा करें । आपके द्वारा अच्छी योजनाएँ कार्यान्वित कराने के हेतु हमने यह स्वांग रचा है। दुश्मन के सभी सैनिक हमारे ही सैनिक थे। आप किसीके हाथ बन्दी नहीं हैं, देश की संपत्ति का समुचित उपयोग करने के लिए योजनाएँ तैयार कराइए और देश को सस्यश्यामल बना कर अकाल के भूत को भगाइए।'' मंत्री सुबुद्धि ने राजा को समझाया।

20

राजगढ़ी के अपहारी सेनापति वीर सिंह के अपने को स्थापित करने के सारे प्रयास व्यर्थ कर दिये जाते हैं। जयनगर में धरती से एक स्वर्ण प्रतिमा के मिलने की उसे सूचना मिलती है। वह उसे इसलिए लेना चाहता है ताकि वह सोना बेचकर सेना के लिए आयुध खरीद सके। प्रतिमा जयनगर के सरदार सुखदेव के पास है। वह वीर सिंह को देने से इनकार कर देता है। उसका महल घेर लिया जाता है।

आर्य

अज्ञात राजकुमार का रहस्य

चित्र : गाँधी अय्या

कमान बाहर आता है।

महोदय, हमलोग प्रतिमा को हटाने में असमर्थ हैं।

क्या प्रतिमा की स्थापना पहले ही कर चुके हो, सुखदेव?

सुखदेव परोक्ष संकेत का उत्तर नहीं देता है।

जमीन को तोड़ कर उसे निकाल लो।

जी महोदय!

जबर सिंह और कमान गाड़ी में प्रतिमा को ले जाते समय मार्गरक्षक हैं।

जमीन तोड़ने की आवाज सुनाई पड़ती है। कुछ देर बाद...

हे भगवती माता! हमलोग आप के लिए एक मन्दिर का निर्माण करेंगे।

प्रतिमा बाहर निकाल ली गई है।

चलो!
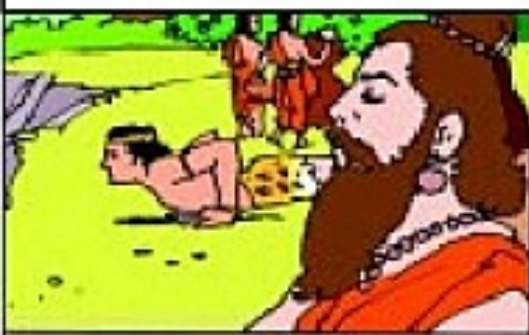
आश्रम में जयानन्द गहरे ध्यान में हैं।
अचानक मुनि खड़े हो जाते हैं।
आर्य ! गोविन्द ! मैंने प्रतिमा को अन्तर्दर्शन में देखा है।
इसे कोई नाव में लिये जा रहा है। नदी के पश्चिम जाओ।
नाव में प्रतिमा को रखने के बाद यह आगे बढ़ने लगती है। सेनापति और कमान नाव के पीछे-पीछे जाते हैं।
पशुओ ! जल्दी चलो।
ये कहाँ से आ गये?
जानवर नाव के पास आ जाते हैं।
जब नाविक जानवरों से आतंकित थे, तभी हवा के एक तेज झोंके से नाव डगमगा गई।
प्रतिमा को पकड़े रहो, डटे रहो !
सेनापति महोदय ! क्या नाव को छोड़ दें?

हवा के तेज झोंके से नदी में लहरें उठती हैं जिससे नाव प्रचण्ड रूप से डगमगाती है। एक युवक एक वट वृक्ष की लम्बी शाखा से झूलता हुआ आता है और प्रतिमा को पकड़ लेता है।

नाविको! तुम सब कहाँ हो?

प्रतिमा!

प्रतिमा चली गई!

प्रतिमा नाव में नहीं है!

जब जबरसिंह तथा एक कमान खोये हुए सैनिकों का पता करते हैं...

एक तीर?

इसमें कोई सन्देश है!

अपने सिपाहियों को जयनगर से लौट जाने को कहो। सुखदेव को शान्तिपूर्वक रहने दो। यह चेतावनी है।

-आर्य

आर्य? ऐसा नाम कभी नहीं सुना !
दूसरा तीर आने से पहले हम लोग भाग चलें !
बीर सिंह अपने सेनापति की बात सुन कर नाराज हो जाता है।
महोदय, प्रतिमा एक दम गायब हो गई। यह जादू हो सकता है !
अलौकिक शक्तियाँ हमारे विरुद्ध कार्य कर रही हैं?
बकवास ! मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं है ! शर्म आनी चाहिये तुम्हें जबर !
वह क्या चाहता है?
महोदय, क्या याद है जंगल में क्या हुआ?
बीर सिंह अपने क्रोध पर काबू नहीं कर पाता।
जबर ! मुझे उसकी याद न दिलाओ ! मुझे प्रतिमा को लाने के लिए किसी और को भेजना चाहिये था।
जबर को इस टिप्पणी से बहुत चोट पहुँचती है।
प्रतिमा जहाँ भी हो, किसी भी मूल्य पर उसे अवश्य लाना है !
जी, महोदय !
क्रमशः

LOOKING FOR AN IDEAL NEW YEAR GIFT FOR YOUR DEAR ONES?

HERE ARE EDUTAINMENT PRODUCTS FROM THE HOUSE OF CHANDAMAMA

With a simple click and drag movement of the mouse, Chandamama Fun Workshop promises hours of fun.

We have over a half-million words in English to communicate with, but half of everything we write and read depends on 300 most frequently used words. But many of these words cannot be sounded out, so they must be learned as sight words. What exactly are "sight words?" - the, a, is, of, to, in, and, I, you - are just a few. Words that good readers instantly recognise.

JATAKA TALES - Early Reader Series (Level 2) teaches children to instantly recognise 100 of these sight words.

The renowned Indologist Professor Purenuthin is trapped inside the Mound of Murukki. You search through 12 different games and activities to find clues and keys to save the professor.

For more details, Contact :
Mr. Shivaji, Chandamama India Limited, 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai 600 097. INDIA. Ph: +91-44-22313637 / 22347399.
e-mail: support@chandamama.org WWW: http://www.chandamama.org

आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

कम्प्यूटर का बौद्धिक स्तर

सन् १९५० में, एक प्रसिद्ध गणितज्ञ आलन एम.तुरींग ने कम्प्यूटर के बौद्धिक स्तर की जाँच करने का एक तरीका निकाला। एक व्यक्ति को एक बन्द कमरे में रखा जाता है और उसे एक व्यक्ति से (जो उसे दिखाई नहीं देता) और एक कम्प्यूटर से बात करने के लिए कहा जाता है।

वह व्यक्ति (जो प्रश्नकर्त्ता भी कहलाता है) नहीं जानता कि कौन मनुष्य है और कौन कम्प्यूटर। उसका कार्य यह पता लगाना है कि दोनों उम्मीदवारों में कम्प्यूटर कौन है और मनुष्य कौन है।

यदि प्रश्नकर्त्ता निश्चित समय में निर्णय नहीं ले सकता तब मशीन को बुद्धिमान माना जाता है। जो भी हो, अब तक ऐसी कोई मशीन नहीं है जो तुरींग की जाँच में सफल रही हो। यह आधुनिक कम्प्यूटर वैज्ञानिकों के लिए सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है।

तुम्हारा प्रतिवेश

अनोखी मेथी

फेन्यूग्रीक या मेथी, मटर जाति का पौधा है। इस छोटे पौधे में सफेद फूल होते हैं और इसकी छीम्बी में १० से २० तक चिपटे-छोटे, पीले-भूरे, तीखे और सुगन्धयुक्त बीज होते हैं। बीज की गंध तेज होती है और स्वाद कड़वा होता है। इसके बीज में काफी मात्रा में विटामिन और खनिज पाये जाते हैं। इनमें भारी मात्रा में प्रोटीन भी पाये जाते हैं।

मेथी को भारतीय पाक में बहुत व्यापक रूप से प्रयोग में लाया जाता है। आयुर्वेद में इसके औषधीय तत्वों को निम्नलिखित कारणों से बहुत महत्वपूर्ण बताया गया है।

- इसमें रक्त शर्करा स्तर को कम करने की शक्ति है, इसलिए मेथी प्रमेह चिकित्सा में उपयोगी है।
- इसकी पत्तियाँ दैनिक आहार के रेशों के श्रेष्ठ स्रोत हैं।
- इसके निरन्तर प्रयोग से रक्तक्षीणता दूर होती है।
- इसके पत्तियों की लेई लगाने से चर्म शोथ कम होता है।

విజ్ఞానం .... వినోదం .... వికాసం ....

మీకు తెలుసా?

పెన్సిళ్ళ చరిత్ర

పెన్సిల అనే ప ట ల్యాటిన పేన్సిలుము (చిన్న తోక) అనే పదం నుంచి వచ్చింది. ప్రాచీన రోమ నులు ఎ ప్యారసు రెల్లును ఉపయోగించిరానే వార్రు. ఒక రకం గ్రాఫైట అంటే కర్బన పిల్లల పుట్ట దారాలు పుట్టి ప్రతిఫలంగా పెన్సిళ్ళ తయ రు చేశారు. గ్రాఫైట పెల్లు స్ప గా మూడి స్పలభంగా విరిగి ఎ వడం వల్ల ఇది అంత ఉపయోగకరంగా లేకపోయింది. అందువల్ల

ఉత్తరోత్తరా కర్బనపిమిమ్మిల్లలను దొల్లగా మన్ను కొంయ్యలలోపిల అప్పర్చడం ప్రారంభించార్రు.

పు నం ఈనాడు ఉపియె గించే పేన్సిళ్ళను దాదాపిరెండు శతాబ్దాలకు పూర్వం ఎన్.జె. కోంటే కను గొన్నార్రు.

పేన్సిలను నాన టాక్సిక గ్రాఫైట నుంచి తయ రు చేసినప్పిటికీ, దానిని ఇంకా సెసిమా కడ్డీలనే అంటున్నార్రు.

మన దేశం క్విజ్

చరిత్ర చాలా ఆసక్తికరమైన అంశం. మనదేశ చరిత్ర చాలా రసవత్తరమైనది. మనదేశ చరిత్ర గురించి మీకు ఎంత వరకు తెలుసో ఇప్పుడు చూద్దాం:

1. ఒక చైనా య త్రికుడు పు నదేశంలోని ఒక విశ్వ విద్యాలయ కులపితిగా పదవీబాధ్యతలు నిర్వ హించాడు. ఆయు న ఎవర్రు? ఏ విశ్వవిద్యాలయ నికి?

2. విక్రమ శకం ఎప్పిటు ప్రారంభమ ్ఞంది?

3. అశోకుడి శిలాశాసనం ఒకటి రెండు భాషిలలో ఉన్నది. అది ఎక్కడ ఉన్నది? ఆ రెండు భాషిలు ఏవి?

4. రామే శ్వరంలో విజయ స్తంభాన్ని నిర్మించిన రాష్ట్రకూట ఏ లకుడు ఎవర్రు?

(సమ ధానాలు 90వ పుటలో)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

SOURAA

KALANIKETAN BALU

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा, प्लाट नं. ८२ (पु.न.९२),
डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०००९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

विजयी प्रविष्टि

ओम उपाध्याय
१९/१९, नॉर्थ टी.टी.नगर
भोपाल.

फुर्सत में होता शतरंज यहाँ
काम से फुर्सत मिलती कहाँ

अपने भारत को जानो के उत्तर

१. हुएन-सांग; नालन्दा विश्वविद्यालय
२. ईसा पूर्व ५८ सन्
३. कन्धार; आरमिक और यूनानी
४. कृष्ण II.

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)

उड़ीसा...
बौद्धधर्म
की एक प्राचीन नामावली

उड़ीसा ने अपने प्राचीन गर्भ में बौद्ध धर्म और बुद्ध को जीवित रखा है। बौद्ध धर्म की आत्मा अभी भी उड़ीसा की हवा में घूमती-फिरती रहती है। दया नदी के किनारे खड़े विशाल शिला-लेख, जिन्होंने समय को चुनौती दी है, दर्शकों के मन को अभिभूत कर लेते हैं। बौद्ध धर्म की ज्योति बिरुपा नदी के किनारे उदयगिरि, ललितगिरि और रत्नगिरि के उदात्त त्रिभुज में अभी भी प्रज्वलित है। लंगुडी तथा कायम की प्रतिवेशी पहाड़ियाँ इतिहास की विशिष्टताओं और विकृतियों के मौन साक्षी बन कर खड़ी हैं। गरिमामय अतीत के मूल्यवान अंश स्तूपों, शिला-उत्कीर्णित गुफाओं, शिला-लेखों, खुदाई में पाये गये मठों, विहारों, चैत्यों तथा शव-पेटिकाओं में रखे पवित्र अवशेषों के रूप में जीवन्त हो जाते हैं। अशोक के शिला-लेख आप के नेत्रों के लिए अधि लाभ हैं।

उड़ीसा का पर्यटन कीजिये और समय की रेत पर इतिहास के चरण-चिन्हों का अनुगमन कीजिये।

Orissa
The Soul of India
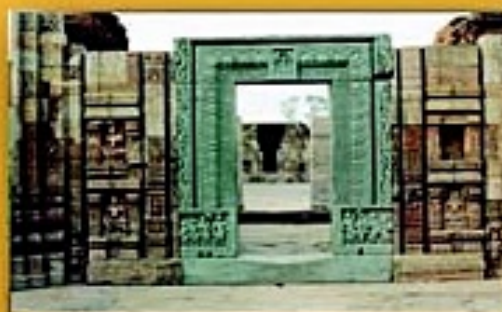
NATURATA

CHANDAMAMA (Hindi) FEBRUARY 2005
Regd No. TN/PMG(CCR)-594/03-05
Regd.with Registrar of Newspaper for India No.1087/57
Licensed to post without prepayment No.381/03-05 Foreign - WPP No.382/03-05

PCRA Page **Website : www.pcra.org**
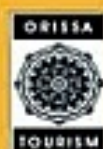
शांति का मधुर संगीत

वीना अस्वस्थ है। रात भर वह बिस्तर पर करवटें बदलती रही और कान में दर्द के कारण सो न सकी। भोर में उसे गहरी नींद लग गई। अचानक एक कार के भोंपू की आवाज से शान्ति भंग हो जाती है। वीना अचानक चौंक कर जग पड़ती है। उसका कान-दर्द वापस आ जाता है।

"यह केवल कार का भोंपू है, बच्चे," उसकी माँ बताती है, जो गर्म दूध के एक प्याले के साथ कमरे में प्रवेश करती है। "यह कार नरेश अंकल को लेने आई है। तुम्हें याद है, ये कार पूल का उपयोग करते हैं?"

अभी तो वीना को सिर्फ अपना दर्द याद है। "ड्राइवर दूसरों के प्रति इतना लापरवाह क्यों है मम्मी?" वह बाद में पूछती है, "वह इतने जोर से भोंपू क्यों बजाता है?"

उसकी माँ आह भरती है। "कुछ लोग ऐसे ही होते हैं, मेरे बच्चे।" वह कहती है, "उनमें इतना धीरज नहीं होता कि वे जाकर व्यक्ति को बुलायें। वे नहीं समझते कि वे ध्वनि प्रदूषण फैला रहे हैं।"

"क्या तुम जानते हो कि ऊँची आवाज में हॉर्न देना दण्डनीय अपराध है?" वीना के पिता पूछते हैं, जो अभी -अभी वहाँ आये हैं। नगरों में कारों के हॉर्न से आनेवाली आवाज की स्वीकृत सीमा ९१ डेसिबेल्स है। इसके अतिरिक्त एयर हॉर्न नगर सीमा में वर्जित है। लेकिन वाहक इन नियमों का हमेशा उल्लंघन कर देते हैं और बच निकलते हैं। यद्यपि बहुतों पर कार्रवाई की जाती है लेकिन बहुत लोगों को दण्ड नहीं मिलता। परिणाम स्वरूप ध्वनि का स्तर बढ़ जाता है।

वीना की माँ आगे बताती है: "ध्वनि प्रदूषण से श्रवण की हानि, उच्च रक्तचाप, तथा दिल की बीमारी की समस्याएँ पैदा होती हैं।" "इसका एक मात्र समाधान यह है कि ड्राइवर दूसरों की भावनाओं के प्रति अधिक संवेदनशील बनें।" पिता बताते हैं। "हम सब लोगों को वाहक के स्थान पर रहते हुए, सामने वाली गाड़ी के आगे बढ़ने तक बिना हॉर्न दिये धैर्य के साथ प्रतीक्षा करनी चाहिये; हमें यह भी याद रखना चाहिये कि हमारे पीछे भी दूसरी गाड़ियाँ खड़ी हैं।"